E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

11 YEARS ANNIVERSARY

वर्ष -11 अंक -148 | प्रयागराज, गुरुवार 21 अगस्त, 2025 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

अमेरिका बोला-भारत पर प्रतिबंध का मकसद रूस पर दबाव बनाना,इससे यूक्रेन जंग रोकने में मदद मिलेगी, भारत पर अब तक 50फीसदी टैरिफ लगाया

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिका की व्हाइट हाउस प्रेस सेक्रेटरी कैरोलीन कहा कि यह अब तक की उनकी सबसे अच्छी बातचीत रही। हालांकि, इस 12 मिनट की जॉइंट प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान उन्होंने पत्रकारों के किसी

लीविट ने मंगलवार को कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने रूस पर दबाव बनाने के लिए भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं। इससे पहले तक ट्रम्प प्रशासन रूस से तेल लेने पर भारत के खिलाफ की गई आर्थिक कार्रवाई को पैनल्टी या टैरिफ बताता रहा है। ट्रम्प ने भारत पर 50 टैरिफ लगाने का फैसला किया है। इसमें 25फीसदी रेसीप्रोकल यानी जैसे को तैसा टैरिफ और रूस से तेल खरीदने पर 25फीसदी पैनल्टी है। रेसीप्रोकल टैरिफ 7 अगस्त से लागू हो गया है, जबकि पैनल्टी 27 अगस्त से लागू होगी। लीविट के मुताबिक इसका मकसद रूस पर सेकेंडरी प्रेशर डालना है, ताकि वह युद्ध खत्म करने पर मजबूर हो।ट्रम्प ने सोमवार देर रात (भारतीय समयानुसार) व्हाइट हाउस में यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से मुलाकात की थी। ट्रम्प ने इस बातचीत को सफल बताया। वहीं जेलेंस्की ने दौरान रूस-यूक्रेन के बीच सीजफायर पर सहमति नहीं बनी। ट्रम्प ने कहा कि फिलहाल इतनी जल्दी सीजफायर संभव नहीं है। मीटिंग में यूक्रेन की सुरक्षा गारंटी पर चर्चा हुई। ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका और यूरोपीय देश मिलकर इस पर काम करेंगे। ट्रम्प ने मीटिंग रोककर पुतिन से फोन पर 40 मिनट बात की। इस दौरान पुतिन ने रूस और यूक्रेन के प्रतिनिधियों के बीच सीधे बातचीत का समर्थन किया। यह बातचीत अगले 15 दिन के भीतर होगी।मीटिंग के बाद जेलेंस्की ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बताया कि यूक्रेन सुरक्षा गारंटी के बदले यूरोप के पैसे से 90 अरब डॉलर (करीब 8 लाख करोड़ रुपए) के अमेरिकी हथियार खरीदेगा।पुतिन और ट्रम्प ने पिछले हफ्ते 15 अगस्त को देर रात अलास्का में मुलाकात की थी। उनके बीच यूक्रेन जंग खत्म करने पर करीब 3 घंटे मीटिंग हुई। इसके बाद दोनों नेताओं ने सिर्फ सवाल का जवाब नहीं दिया। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान ट्रम्प ने बैठक को सकारात्मक बताया। उन्होंने बताया कि कई बिंदुओं पर सहमति बनी, लेकिन कोई डील नहीं हुई। कोई समझौता तभी होगा, जब वह अंतिम रूप लेगा। ट्रम्प ने इस बैठक को 10 में से 10 अंक दिए। वहीं, पुतिन ने अगली मीटिंग मॉस्को में करने का सुझाव दिया। अपनी बात कहने के बाद दोनों नेता मंच से तुरंत चले गए।रूस ने यूक्रेन के करीब 20फीसदी हिस्से, यानी लगभग 1 लाख 14 हजार 500 वर्ग किलोमीटर पर कब्जा कर रखा है। इसमें क्रीमिया, डोनेट्स्क, लुहांस्क, खेरसॉन, और जापोरिजिया जैसे क्षेत्र शामिल हैं। रूस इन क्षेत्रों को अपनी सामरिक और ऐतिहासिक धरोहर मानता है और इन्हें छोड़ने को तैयार नहीं है। दूसरी तरफ जेलेंस्की का कहना है कि यूक्रेन की एक इंच जमीन भी रूस को नहीं देंगे।

उपराष्ट्रपति चुनाव-एनडीए उम्मीदवार राधाकृष्णन ने नॉमिनेशन भरा,मोदी पहले प्रस्तावक, शाह-राजनाथ, नड्डा भी मौजूद रहे; 9 सितंबर को चुनाव

नयी दिल्ली। एनडीए के उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन ने नामांकन दाखिल कर दिया है। पीएम नरेंद्र मोदी पहले प्रस्तावक बने हैं। नामांकन के दौरान गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा समेत कई नेता मौजूद थे। नॉमिनेशन से पहले राधाकृष्णन ने संसद परिसर में स्थित गांधी प्रतिमा पर फूल चढ़ाए। 17 अगस्त को हुई भाजपा संसदीय दल की बैठक में उनके नाम पर सहमति बनी थी। भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर राधाकृष्णन के नाम का ऐलान किया था। राधाकृष्णन का मुकाबला विपक्षी गठबंधन के उम्मीदवार सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जस्टिस बी सुदर्शन रेड्डी से होगा। खास बात है कि दोनों उम्मीदवार दक्षिण से हैं। रेड्डी 21 अगस्त को नामांकन करेंगे। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए 9 सितंबर को वोटिंग होगी। उसी दिन काउंटिंग भी होगी। नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 21 अगस्त है। 25 अगस्त तक उम्मीदवारी वापस

ली जा सकती है। दरअसल, उपराष्ट्रपति का चुनाव जगदीप धनखड़ के 21 जुलाई की रात अचानक इस्तीफा देने की वजह से हो रहा है। 74 साल के धनखड़ का कार्यकाल 10 अगस्त 2027 तक था। I.N.D.I.A ने सुप्रीम कोर्ट से रिटायर्ड जस्टिस बी सुदर्शन रेड्डी को 19 अगस्त को उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार बनाया है। उनका मुकाबला एनडीए के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन से होगा। 79 साल के रेड्डी गुवाहाटी हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस और गोवा के पहले लोकायुक्त रह चुके हैं। वे आंध्र प्रदेश के रहने वाले हैं। 2007 में सुप्रीम कोर्ट का जज नियुक्त किया गया था। खास बात है कि दोनों उम्मीदवार दक्षिण से हैं। रिटायर्ड जस्टिस रेड्डी आंध्रप्रदेश से, जबकि सीपी राधाकृष्णन तमिलनाडु से हैं। राधाकृष्णन 20 जबकि रेड्डी 21 अगस्त को नामांकन दाखिल करेंगे।लोकसभा में कुल सांसदों की संख्या 542 है। एक सीट खाली है। एनडीए के 293 सांसद हैं। वहीं, राज्यसभा में 245 सांसद हैं। 5 सीट खाली हैं। एनडीए के पास 129 सांसद हैं। यह मानते हुए कि उपराष्ट्रपति के लिए नामांकित सदस्य भी एनडीए उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करेंगे। इस तरह, सत्तारूढ़ गठबंधन को कुल 422 सदस्यों का समर्थन प्राप्त है।

नशे में अधीक्षक ने डॉक्टर को पीटा था, दोषी पाए गए डॉ. अनुराग तिवारी,जांच कमेटी ने कमिश्नर को सौंपी जांच रिपोर्ट

प्रयागराज। कौंढ़िहार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ. अनुराग तिवारी ने नशे में डॉ. रविंद्र पांडेय को मारा पीटा था। इस बात की पुष्टि जांच कमेटी की जांच रिपोर्ट में हुई है। तीन सदस्यीय जांच कमेटी ने जांच प्रक्रिया पूरी कर ली, जिसमें डॉ. अनुराग तिवारी दोषी पाए गए हैं। कमेटी ने पूरी रिपोर्ट तैयार कर कमिश्नर विजय विश्वास पंत को सौंप दी है। ऐसे में अब डॉ. अनुराग तिवारी पर गाज गिरना तय माना जा रहा है। जांच कमेटी में एसीएमओ डॉ. परवेज अख्तर, डॉ. आरसी पांडेय और डॉ. राजेश कुमार शामिल थे। कमेटी के सदस्यों ने आरोपी अधीक्षक डॉ. अनुराग तिवारी और पीड़ित डॉ. रविंद्र कुमार पांडेय का 2 दिन पहले ही बयान दर्ज किया था, जिसकी रिपोर्ट मंगलवार देर शाम कमिश्नर को भेज दी गई है। ये था पूरा मामला- प्रयागराज के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कौंढ़िहार के अधीक्षक डॉ. अनुराग तिवारी ने शराब पीकर 12 अगस्त की रात जमकर हंगामा किया था। सीएचसी कैंपस में ही डॉक्टर रविंद्र पांडेय के साथ मारपीट की और गालियां दी थी। वहां मौजूद किसी मरीज के तीमारदार ने इस घटना का पूरा वीडियो बना लिया था। वीडियो में साफ दिख रहा है, डॉ. अनुराग खुद को नहीं संभाल पा रहे थे और लड़खड़ाते हुए

जूनियर डॉक्टर के पास पहुंचे और उसके मुंह थप्पड़ जड़ दिया। उस वक्त अधीक्षक के साथ फार्मासिस्ट पंकज सिंह भी था। दोनों ने शराब पी रखी थी। अधीक्षक अनुराग यहीं नहीं रुके इसके बाद जूनियर डॉक्टर की खड़ी बाइक को भी लात मार कर गिरा दिया। जूनियर डॉक्टर को जमकर गालियां दी। जूनियर डॉक्टर हाथ जोड़कर छोड़ने की गुहार भी लगाता रहा है, लेकिन अधीक्षक लगातार उसके साथ अभद्रता करते रहे। अस्पताल परिसर में लोगों की भीड़ लग गई।जिस दिन यह घटना हुई उसके दूसरे दिन ही 13 अगस्त को सीएमओ डॉ. एके तिवारी ने जांच के लिए तीन सदस्यीय टीम बना दी थी। इसके बाद जांच कमेटी के सदस्य अधीक्षक का बयान लेने के लिए कौंढ़िहार सीएचसी पर गए थे।

यहां जांच कमेटी ने जब सवाल पूछने शुरू किए तो अधीक्षक खुद को निर्दोष साबित करने में लगे रहे। कमेटी के समक्ष अपनी सफाई देते रहे। करीब 2 साल पहले कौंढ़िहार की सैकड़ों आशा कार्यकर्ता अधीक्षक डॉ. अनुराग तिवारी की शिकायत लेकर सीएमओ प्रयागराज के पास पहुंची थी।

इसकी शिकायत डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक से भी की गई थी। आशा कार्यकर्ताओं ने कहा, शराब पीने के बाद वह सीएचसी पर ड्यूटी करते हैं और उनके साथ अभद्रता करते हैं। इसे संज्ञान लेते हुए ब्रजेश पाठक ने तत्कालीन सीएमओ डॉ. आशु पांडेय को निर्देशित किया था। अधीक्षक को हटाया जाए और कार्रवाई की जाए। इसके बाद डॉ. अनुराग तिवारी और स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी दिनेश यादव को कौंढ़िहार से हटाकर संसारीपुर उपकेंद्र पर भेज दिया गया। लेकिन बाद में मामला रफा दफा हो गया।

जनसुनवाई में आए गुजरात का रहने वाले आरोपी द्वारा दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर हमला:सिर में चोट,आरोपी

नयी दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर बुधवार सुबह सीएम आवास में जनसुनवाई के दौरान हमला

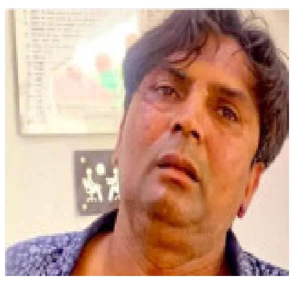

हुआ। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उन्हें थप्पड़ मारा गया। दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा- आरोपी ने सीएम का हाथ पकड़कर खींचा। वे मेज के कोने से टकराईं। सिर पर चोट आई है। थप्पड़ वाली बात गलत है। हमले की पुष्टि करते हुए दिल्ली सीएम ऑफिस ने बयान जारी किया। इसमें कहा गया- आज जनसुनवाई के दौरान एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर हमला किया। उसे दिल्ली पुलिस ने पकड़ लिया। पूछताछ की जा रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, आरोपी ने अपना नाम राजेश भाई खिमजी (41) बताया है। वह गुजरात के राजकोट का रहने वाला है। इधर, घटना के बाद दिल्ली के मुख्य सचिव और कई मंत्री रेखा गुप्ता का हालचाल जानने सीएम हाउस पहुंचे। यहीं पर सीएम का इलाज किया जा रहा है।जनसुनवाई में पहुंचे प्रत्यक्षदर्शियों ने क्या कहा- 'शैलेंद्र कुमार- मैं उत्तम नगर से सीवर की शिकायत लेकर आया था। जैसे ही सीएम आवास के गेट पर पहुंचा, वहां अफरा-तफरी मच गई, क्योंकि मुख्यमंत्री को थप्पड़ मारा गया। यह गलत हुआ।' अंजली- अगर कोई फर्जी व्यक्ति मुख्यमंत्री को थप्पड़ मार सकता है, तो यह गंभीर बात है। वह व्यक्ति बात कर रहा था और अचानक उसने थप्पड़ मार दिया। पुलिस उसे पकड़कर ले गई है।' दिल्ली बीजेपी के प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा- 35 साल का कोई व्यक्ति जनसुनवाई में आया था। उसने सीएम को कोई दस्तावेज दिया। इसके बाद कुछ कहासुनी हुई। उसने हमला करने की कोशिश की। यह किसी ऐसी पार्टी का हो सकता है, जो हताश हो चुकी है। दिल्ली कांग्रेस के प्रमुख देवेंद्र यादव ने कहा- घटना दुर्भाग्यपूर्ण है। रेखा गुप्ता पूरी दिल्ली की मुख्यमंत्री हैं। इस तरह की घटनाओं की जितनी निंदा की जाए, कम है। इस घटना ने महिलाओं की सुरक्षा व्यवस्था को उजागर कर दिया है। अगर दिल्ली की मुख्यमंत्री सुरक्षित नहीं हैं तो सामान्य पुरुष या महिला की सुरक्षा कैसे हो सकती है? दिल्ली विधानसभा में विपक्ष की नेता और आप नेता आतिशी ने एक्स पर लिखा- रेखा गुप्ता पर हुआ हमला बेहद निंदनीय है। लोकतंत्र में असहमति और विरोध की जगह होती है, लेकिन हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। उम्मीद है कि दिल्ली पुलिस दोषियों पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई करेगी। आशा है मुख्यमंत्री पूरी तरह सुरक्षित हैं। 20 फरवरी 2025 को रेखा गुप्ता दिल्ली की मुख्यमंत्री बनी थीं। दिल्ली विधानसभा चुनाव में उन्होंने आप की वंदना कुमारी को 29,595 वोटों से हराया। रेखा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से लंबे समय से जुड़ी हैं। वे दिल्ली भाजपा की महासचिव और भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रह चुकी हैं।

अखिलेश यादव के निशाने पर आए 3 जिलों के जिलाधिकारी,वोटिंग लिस्ट में गड़बड़ी पर चुनाव आयोग के दावे पर सवाल!

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने वोटिंग लिस्ट में गड़बड़ी को लेकर चुनाव आयोग पर सवाल उठाने के बीच यूपी के 3 जिलाधिकारियों को निशाने पर लिया है। अखिलेश ने लिखा कि एक्स पर किए गए उनके दावे को लेकर बाराबंकी, जौनपुर और कासगंज के डीएम की तरफ से आए जवाब अपने आप में कई सवाल पैदा करते हैं। भारत के मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने बीते दिनों सपा की ओर से हलफनामा नहीं मिलने की बात कही थी। अब 3 जिलाधिकारियों के जवाब देने पर सपा मुखिया ने कहा कि या तो चुनाव आयोग की बात गलत है या फिर डीएम। अखिलेश ने बुधवार को एक्स पर लिखा- डीएम लोगों से जनता का एक मासूम सवाल है, क्यों इतने सालों बाद आया जवाब है? जिस तरह कासगंज, बाराबंकी, जौनपुर के डीएम हमारे 18000 शपथपत्रों के बारे में अचानक अति सक्रिय हो गये हैं, उससे एक बात तो साबित कर दी है कि जो चुनाव आयोग कह रहा था कि 'एफ़िडेविट ही नहीं मिले', उनकी वो बात झूठी निकली। अगर कोई एफ़िडेविट मिला ही नहीं, तो ये ज़िलाधिकारी लोग जवाब किस बात का दे रहे हैं?अब सतही जवाब देकर खानापूर्ति करनेवाले इन ज़िलाधिकारियों की संलिप्तता की भी जाँच होनी चाहिए। कोर्ट संज्ञान ले, चुनाव आयोग या डीएम में से कोई एक तो गलत है ही ना? जो सीसीटीवी पर पकड़े गये हों उनके द्वारा अपने घपलों पर दी गयी सफ़ाई पर किसी को भी रत्ती भर विश्वास नहीं है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ऐडमिशन अंतिम चरण में, नए सत्र की शुरुआत के लिए तैयारियां पूरी, जल्द शुरू होंगी कक्षाएं

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में परास्नातक की अधिकांश विषयों में प्रवेश की प्रक्रिया पूरी हो गई है और जल्द ही कक्षाओं का नियमित संचालन होगा। दूसरी ओर, इविवि के संघटक महाविद्यालयों 20 अगस्त को होने वाले यूजी प्रवेश के लिए नया कटऑफ जारी कर दिया है। ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में बीए प्रवेश के लिए अनारक्षित का कटऑफ 130 अंक, बीएससी बायो में 200, बीएससी मैथ्स में 160, बीकॉम में अनारक्षित

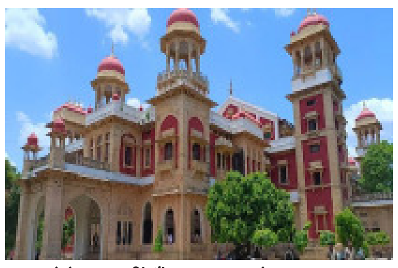

शुरू होने जा रहीं हैं। स्नातक प्रवेश अंतिम चरण में है। कॉलेजों में भी एक सप्ताह में पीजी प्रवेश की प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। कुछ कॉलेजों ने स्नातक प्रवेश के लिए कटऑफ जारी किए हैं।वहीं वे अंग्रेजी विभाग एमए प्रथम सेमेस्टर के नए छात्रों के लिए 20 अगस्त को ओरिएंटेशन प्रोग्राम आयोजित किया जाएगा। विभागाध्यक्ष प्रो. इंदिरा मुखर्जी के अनुसार कमरा नंबर-तीन में दोपहर 12 बजे से कार्यक्रम शुरू होगा। वहीं, मनोविज्ञान विभाग में 25 अगस्त को सुबह 11 बजे ओरिएंटेशन कार्यक्रम होगा और 26 अगस्त से का 170, ओबीसी का 140 व ईडब्ल्यूएस का 14.5 अंक है। इलाहाबाद डिग्री कॉलेज में बीए प्रवेश के लिए सीयूईटी में शामिल सभी अभ्यर्थियों को बुलाया गया है। बीएससी में अनारक्षित का कटऑफ 100 व बीकॉम में 120 जगत तारन गर्ल्स 5 डिग्री कॉलेज में बीकॉम में पओबीसी, ईडब्ल्यूएस, एससी व एसटी वर्ग की सभी छात्राएं प्रवेश के इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बीए इन मीडिया स्टडीज में प्रवेश के लिए अनारक्षित का कटऑफ 368.92, ओबीसी का 337.54, ईडब्ल्यूएस का 3.62.53 अंक है।

खबर ज़रा हटके

कैसे ट्रक और वैन बने रोमियो-जूलिएट?

यूरोपियन देश एस्टोनिया में एक ऐसा अजीबोगरीब नाटक हुआ है, जिसमें कलाकार इंसान नहीं, बल्कि बड़ी-बड़ी मशीनें थीं। यहां 'रोमियो और जूलियट' की कहानी को गाड़ियों से दिखाया गया। यह नाटक

एस्टोनिया के 'किनोथिएटर' ने किया था। इसे एक पुरानी खदान में दिखाया गया। नाटक में एक रैली ट्रक रोमियो के किरदार में था। जूलियट एक लाल रंग का पिकअप वैन थी। दुश्मनों के बीच लड़ाई को दो खुदाई करने वाली मशीनों ने अपने बड़े-बड़े पंजे हिलाकर दिखाया। नाटक का मकसद क्या था?- नाटक के डायरेक्टर पावो पीक ने कहा- यह एक एक्सपेरिमेंट है। वे देखना चाहते थे कि क्या मशीनें भी इमोशन्स को दिखा सकती हैं। इस नाटक को दर्शकों ने खूब पसंद किया। एक दर्शक ने कहा, गाड़ियां होने के बावजूद, यह बहुत प्यारा लगा।

वैज्ञानिकों ने कैसे बनाई न पिघलने वाली आइसक्रीम?

गर्मी के मौसम में आइसक्रीम खाना सबको पसंद है। लेकिन उसके जल्दी पिघलने से परेशानी भी होती है। अब वैज्ञानिकों ने एक ऐसी आइसक्रीम बनाने का तरीका

खोजा है। जो जल्दी पिघलेगी नहीं। यह आइडिया एक जापानी कंपनी से मिला। उनकी आइसक्रीम पिघलती नहीं थी। इसके पीछे का राज था 'पॉलीफेनोल्स' नाम का एक पदार्थ। यह फलों में पाया जाने वाला एक तरह का एंटीऑक्सीडेंट होता है। पॉलीफेनोल्स शील्ड बनाकर पिघलने से बचाते हैंयह पॉलीफेनोल्स आइसक्रीम में प्रोटीन के साथ मिलते हैं। यह एक मजबूत जाल जैसा बना देते हैं। जब आइसक्रीम पिघलने लगती है। तो यह जाल उसके फैट को बहने से रोकता है। एक वैज्ञानिक कैमरून विक्स ने ऐसा ही प्रयोग किया। उन्होंने टैनिक एसिड (एक पॉलीफेनॉल) मिलाया। ज्यादा मात्रा में मिलाने पर आइसक्रीम इतनी सख्त हो गई। कि उसे चाकू से भी काटा जा सकता था। हालांकि, यह आइसक्रीम पिघलकर पानी नहीं बनती। बल्कि रबड़ जैसी या पुडिंग जैसी हो जाती है। वैज्ञानिकों का मकसद इसे लंबे सफर में खराब होने से बचाना है।

एआई से 700 किमी दूर अपराधी कैसे पकड़ाया?

महाराष्ट्र के नागपुर में पुलिस ने एआई से एक अपराधी ट्रक ड्राइवर को पकड़ लिया। यह ड्राइवर नागपुर से करीब 700 किलोमीटर दूर उत्तर प्रदेश में था।कुछ

दिन पहले नागपुर में एक ट्रक ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी थी। हादसे में एक महिला की मौत हो गई थी। हादसे के बाद पुलिस के पास आरोपी की पहचान के लिए कोई ठोस सुराग नहीं था। उन्हें सिर्फ इतना पता था कि ट्रक पर लाल रंग की पट्टियां थीं। एआई ने अपराधी को कैसे ढूंढा?- पुलिस ने महाराष्ट्र सरकार की 'मार्वल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' कंपनी की मदद ली। मार्वल एआई की मदद से पुलिस ने घटनास्थल और टोल नाकों के सीसीटीवी फुटेज देखे। एआई सिस्टम ने कुछ ही मिनटों में ट्रक की पहचान कर ली। आगे की ट्रैकिंग से पता चला कि वही ट्रक उत्तर प्रदेश में है। सूचना मिलते ही नागपुर पुलिस की एक टीम उत्तर प्रदेश भेजी गई। टीम ने वहां से ट्रक और ड्राइवर सत्यपाल खरीक को पकड़ लिया। यह देश में पहला मामला माना जा रहा है। एसपी हर्ष पोद्दार ने बताया कि यह साबित करता है कि फ्यूचर में एआई पुलिस के लिए एक बड़ा हथियार होगा।

इंसानों ने क्यों बनाई 7 करोड़ की मछली?

दुनिया में मछली की हजारों प्रजातियां हैं। लेकिन एक ऐसी भी मछली है जिसे इंसान ने बनाया है। यह मछली 'क्रॉसब्रीड' करके लैब में तैयार हुई है।

इसकी कीमत और खासियत दोनों हैरान कर देने वाली हैं। इस मछली का नाम 'फ्लावरहॉर्न' है। इसे 1990 के दशक में मलेशिया और थाईलैंड की लैब में बनाया गया। इसे 'सिक्लिड' नाम की प्रजातियों को मिलाकर तैयार किया गया है। यह लाल, सुनहरे और नीले रंग की होती है। इसके सिर पर एक बड़ा सा कूबड़ होता है। इंसानों की के साथ खेलती है। यह उनकी बोरियत दूर करती है। इसे खाना दिखाकर ट्रेनिंग दी जा सकती है। इसे 'गुड लक फिश' भी माना जाता है। खासकर चीन और जापान में। इसके सिर पर कुछ निशान होते हैं। अगर वो 8 जैसे दिखें तो यह धन और समृद्धि लाती है। यह मछली जितनी रेयर होती है। उसकी कीमत उतनी ही ज्यादा होती है। लोकल फ्लावरहॉर्न की कीमत 3,000 से 7,000 तक होती है। लेकिन रेयर (दुर्लभ) फ्लावरहॉर्न की कीमत 7 करोड़ तक हो सकती है। अब तक सबसे महंगी 'रेड मंकी फ्लावर हॉर्न' 7 करोड़ 50 लाख में बिकी है।

बिना सांस लिए आधे घंटे पानी में कैसे रहा शख्स?

एक शख्स ने 29 मिनट से ज्यादा समय तक अपनी सांस रोककर रिकॉर्ड बना दिया है। क्रोएशिया के फ्रीडाइवर विटोमिर मारीचिच ने यह कारनामा किया है। उन्होंने पानी में सांस रोककर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है। ऑक्सीजन लेकर किया कमाल- मारीचिच ने 14 जून 2024 को एक पूल में यह रिकॉर्ड बनाया। वे 29 मिनट 3 सेकेंड तक बिना सांस लिए पानी में रहे। रिकॉर्ड बनाने से पहले उन्होंने 10 मिनट तक शुद्ध ऑक्सीजन ली। इससे उनके खून में ऑक्सीजन का स्टॉक 5 गुना बढ़ गया था। आपको जानकर हैरानी होगी। डॉल्फिन औसतन 15 मिनट तक सांस रोक पाती है। मारीचिच ने जानवरों से भी दोगुना समय तक सांस रोकी। दरअसल, इंसान फेफड़ों का सिर्फ 20फीसदी हिस्सा ही हवा से भर पाता है। अगर मारीचिच शुद्ध ऑक्सीजन न लें, तो भी वे नॉर्मल हवा में 10 मिनट 8 सेकेंड तक सांस रोक सकते हैं। उनकी अगली कोशिश सर्बिया के ब्रांको पेत्रोविक का रिकॉर्ड तोड़ने की है। पेत्रोविक ने बिना किसी मदद के 11 मिनट 35 सेकेंड तक सांस रोककर रिकॉर्ड बनाया था।

डीएम ने छतिग्रस्त गल्ला मंडी फ्लाईओवर का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने छतिग्रस्त गल्ला मंडी

फ्लाईओवर का निरीक्षण कर जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान अधिशाषी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग महिपाल सिंह द्वारा अवगत कराया गया कि सेतु निगम द्वारा फ्लाईओवर का निर्माण कराया गया था। फ्लाईओवर छतिग्रस्त होने का संज्ञान लेकर छतिग्रस्त हिस्से में बैरीकेटिंग कराकर 02 पहिया वाहनों के आवागमन हेतु खोला गया है, शेष चार पहिया वाहनों व भारी वाहनों के लिये यातायात मार्ग का डायवर्जन प्लान तैयार किया गया है, चार पहिया वाहन व भारी वाहन रायबरेली बस स्टॉप से जहानाबाद पुलिस चौकी से त्रिपुला होते हुए लखनऊ-प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग पर आ-जा सकेंगे। जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये कि छतिग्रस्त फ्लाईओवर की जांच कराकर शीघ्र मरम्मत का कार्य कराया जाए, जिससे आम जनमानस का यातायात सुगम बन सकें। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ सहित सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

प्रयागराज की शान, सिंगर श्रद्धा मिश्रा 21 अगस्त को मुंबई से लौटेंगी संगमनगरी

प्रयागराज। शहर की प्रतिभाशाली गायिका और संगीत

गायिका श्रद्धा मिश्रा

प्रेमियों की धड़कन, श्रद्धा मिश्रा 21 अगस्त को मुंबई से प्रयागराज लौट रही हैं। मुंबई में अपने संगीत सफर के दौरान उन्होंने कई मंचों पर अपनी मधुर आवाज़ का जादू बिखेरा और प्रयागराज का नाम रोशन किया। श्रद्धा मिश्रा, जो अपने सूफी, शास्त्रीय और बॉलीवुड गायन के लिए जानी जाती हैं, प्रयागराज में एक खास संगीत कार्यक्रम में हिस्सा लेंगी, जहां वह अपने प्रशंसकों से रूबरू होंगी। उनके आगमन को लेकर शहर के संगीत प्रेमियों में खासा उत्साह है। श्रद्धा ने मुंबई में कई नामी संगीतकारों के साथ काम किया है और अब वह कुछ समय के लिए अपने गृहनगर में विश्राम और कार्यक्रमों के लिए आ रही हैं। उनके स्वागत की तैयारियों में प्रयागराज की कला और संस्कृति जगत जुटा हुआ है।

लखनऊ में 21-22 अगस्त को मान्यता प्राप्त पत्रकारों के लिए आयुष्मान कार्ड शिविर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क 'असीम मित्रा') लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मान्यता प्राप्त पत्रकारों (राज्य एवं जनपद स्तरीय) एवं उनके आश्रितों को एमएमजेएए योजना के अंतर्गत चिकित्सा लाभ का सुगमता से लाभ दिलाने के उद्देश्य से 21 व 22 अगस्त 2025 को लखनऊ स्थित सूचना एवं जनसंपर्क विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ मुख्यालय के सभागार में दो दिवसीय शिविर स्टेट हेल्थ एजेंसी (सांची) द्वारा आयोजित किया जाएगा।अपर निदेशक सूचना श्री अरविंद कुमार मिश्र ने बताया कि राज्य में मान्यता प्राप्त पत्रकारों का डेटा पहले से ही बीआईएस (लाभार्थी पहचान प्रणाली) डेटाबेस में उपलब्ध है। ऐसे मान्यता प्राप्त पत्रकार एवं उनके आश्रित जिन्होंने अभी तक आयुष्मान कार्ड के लिए आवेदन नहीं किया है अथवा कार्ड प्राप्त नहीं किया है, उन्हें उक्त शिविर में भाग लेकर आयुष्मान कार्ड प्राप्त करने का अवसर दिया जाएगा। इस दौरान मौजूदा आयुष्मान कार्डों को भी अद्यतन किया जाएगा ताकि लाभार्थियों को चिकित्सा सुविधाओं का निर्बाध लाभ मिल सके।शिविर में नए परिवार या सदस्य जोड़ने की प्रक्रिया नहीं होगी। केवल वही मान्यता प्राप्त पत्रकार आवेदन कर सकेंगे जिनका डेटा पूर्व से ही बीआईएस डेटाबेस में उपलब्ध है। जिन मान्यता प्राप्त पत्रकारों के कार्ड में नाम, जन्म वर्ष अथवा लिंग की जानकारी आधार से मेल नहीं खा रही है, वे शिविर में आधार पुनः-ई-केवाईसी करा सकेंगे। इसके बाद वे अपने आधार के अनुरूप अद्यतन विवरण वाला नया आयुष्मान कार्ड डाउनलोड कर पाएंगे।अपर निदेशक सूचना ने मान्यता प्राप्त पत्रकारों से अपील किया है कि वे स्टेट हेल्थ एजेंसी (सांची) द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय शिविर का अधिकतम लाभ उठाएं ताकि एमएमजेएए योजना के अंतर्गत चिकित्सा लाभ प्राप्त करने में किसी भी प्रकार की बाधा न आए।

'रोजगार महाकुंभ' 2025 का आयोजन 26 से 28 अगस्त तक

'रोजगार महाकुंभ 2025' में प्रतिभाग करने वाले अभ्यर्थी के लिए रोजगार का सुनहरा अवसर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जिला

सेवायोजन अधिकारी विजय बहादुर सिंह सेंगर ने बताया है कि श्रम एवं सेवायोजन विभाग द्वारा बी0सी0एस0 कंसल्टिंग प्राइवेट लि0, लखनऊ एवं इकनोमिक्स टाइम्स ऑफ इण्डिया की सहभागिता से 'रोजगार महाकुंभ 2025' का आयोजन 26 से 28 अगस्त 2025 तक इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान, लखनऊ में किया जा रहा है। इस अभियान के तहत अधिक से अधिक युवाओं को रोजगार मुहैया कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं। 'रोजगार महाकुंभ 2025' में प्रतिभाग करने के लिए इच्छुक अभ्यर्थी https://rojgaarsangam.up.gov.in पोर्टल पर पंजीकरण करा सकते है तथा 26 से 28 अगस्त 2025 तक इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान, लखनऊ में उपस्थित होकर रोजगार का सुनहरा अवसर प्राप्त कर सकते हैं। मेले में प्रतिभाग करने हेतु कोई भी यात्रा भत्ता देय नहीं होगा।

मनरेगा के अन्तर्गत 15 लोकपालों का कार्यकाल पुनःएक वर्ष के लिए बढ़ाया गया

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य के अनुमोदन के उपरांत उत्तर प्रदेश शासन द्वारा

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के अन्तर्गत कार्यालय ज्ञाप दिनांक 6 दिसम्बर 2021 द्वारा नियुक्त लोकपालों के सापेक्ष 15 लोकपाल श्री विजय कुमार (प्रयागराज), श्री धनन्जय कुमार राय (बलिया), श्री दिवाकर त्रिवेदी(लखीमपुर खीरी), श्री पवन कुमार लाल(सन्तकबीरनगर), श्रीमती विनीता पाण्डेय(मऊ), श्री नवीन कुमार (गोरखपुर),श्री आनन्द उपमन्यु (बलरामपुर), श्री गंगा सिह सेगर (जालौन), श्री राकेश कुमार श्रीवास्तव (कुशीनगर),श्रीमती लक्ष्मी श्रीवास्तव (बाराबंकी), डा0 अरविन्द प्रताप सिह यादव (सीतापुर),श्री महेंद्र विक्रम सिह (सुल्तानपुर), श्री राज कुमार श्रीवास्तव (अयोध्या),श्रीमती गीता देवी (गाजीपुर),व श्री शिवपूजन सिह चित्रकूट का कार्यकाल पुनः01वर्ष के लिए बढ़ाया गया है। इस सम्बन्ध में आवश्यक शासनादेश उत्तर प्रदेश शासन ग्राम्य विकास विभाग द्वारा जारी कर दिया गया है। सम्बन्धित लोकपाल द्वारा लोकपाल तथा अपीलीय अधिकरण सम्बन्धी भारत सरकार की गाइडलाइन दिनांक 20 मार्च 2023 के अनुसार प्राप्त शिकायतों का समयबद्ध रूप से निस्तारण किया जायेगा एवं राज्य सरकार को त्रैमासिक रिपोर्ट एवं वार्षिक रिपोर्ट उपलब्ध कराया जाएगा। असन्तोष प्रदर्शन पर राज्य सरकार द्वारा लोकपालकभी भी हटाये जा सकते हैं। प्रदर्शन का मूल्यांकन राज्य सरकार द्वारा किया जायेगा। लोकपाल के क्रियाकलापों के निष्पादन के लिए आवश्यक प्रशासनिक व्यवस्था सम्बन्धित जनपदों के जिलाधिकारियों द्वारा सुनिश्चित की जायेगी।

3 साल की बेटी को बचाने के लिए जंगली जानवर से भिड़ गई मां

आगरा। उत्तर प्रदेश के आगरा से चौंकाने वाला मामला सामने आया है। जैतपुर (बाह) के नौगवां गांव

में एक मां के साहस ने तीन साल की बेटी की जान बचा ली। जंगली जानवर ने बेटी पर हमला बोल दिया। वह उसे खींचकर ले जाने का प्रयास कर रहा था। बच्ची का शोर सुना तो वह शेरनी बनकर जंगली जानवर पर टूट पड़ी। वह निहत्थे ही उससे करीब 3-4 मिनट तक भिड़ती रही। मां की हिम्मत से हारकर जंगली जानवर भाग गया। चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग एकत्रित हो गए। घायल मां-बेटी को अस्पताल में भर्ती कराया है। मामला मंगलवार दोपहर का है। नौगवां के रहने वाले आशीष कुमार किसान हैं। उन्होंने बताया कि दोपहर करीब 1.30 बजे उसकी पत्नी रीमा घर के आंगन में बर्तन धुल रही थी। उसके पास में 3 साल की बेटी अर्पिता खेल रही थी। तभी मकान की दीवार फांदकर जंगली जानवर घुस आया। उसने अर्पिता पर झपट्टा मार दिया। जानवर उसे खींचने का प्रयास कर रहा था। बेटी की चीख सुनकर रीमा निहत्थे ही उससे भिड़ गई। आशीष ने बताया कि वह घर पर नहीं थे। पत्नी रीमा बेटी के बचाने की लिए उस वन्यजीव से लड़ती रही। मां-बेटी की चीखों की आवाज सुनकर आसपास के लोग एकत्रित हो गए। उन्होंने शोर मचाया तो जंगली जानवर भाग गया। ग्रामीण उसे तेंदुआ बता रहे थे, तो कुछ लोग उसे लकड़ बग्गा या सियार बता रहे थे। जबकि वन विभाग के रेंजर कोमल सिंह का कहना है कि जैतपुर के इलाके में तेंदूआ दिखाई नहीं दिया है। कोई अन्य वन्यजीव हो सकता है।

दोस्त के पास बीवी को भेजा, खुद रख ली उसकी पत्नी! बाराबंकी में वाइफ अदला-बदली कांड से पुलिस भी हैरान

बाराबंकी। दोस्ती, रिश्तेदारी और शादी जैसे पवित्र बंधन! इन सबकी सीमाएं कहाँ तक जाती हैं ? यह सवाल तब और बड़ा हो जाता है जब दोस्ती इतनी गहरी हो जाए कि शादी के रिश्ते भी उसके आगे फीके पड़ने लगें। यूपी के बाराबंकी जिले में ऐसा ही एक अजीबोगरीब मामला सामने आया है, जिसने हर किसी को हैरान कर दिया है। यहां दो दोस्तों ने पत्नियों की अदला बदली कर ली। शिकायत पर थाने की पुलिस भी चकरा गई और मामले में गंभीरता देखते हुए दोनों पक्षों को शांति भंग की धाराओं में पाबंद किया है। जानकारी के अनुसार, लोनी कटरा थाना क्षेत्र के लक्ष्मणपुर गांव निवासी अनूप यादव और पप्पू कोरी अमदाबाद में प्राइवेट नौकरी करते हैं। जहां दोनों किराए पर कमरा लेकर पत्नियों के साथ रहते थे। कुछ दिन पूर्व अनूप ने अपनी पत्नी के गुमशुदा होने की शिकायत अहमदाबाद में दर्ज कराई थी। तहरीर में पप्पू कोरी पर शक जताते भगा ले जाने का आरोप लगाया था।बाराबंकी पहुंचने पर लोनी कटरा थाने में अनूप की पत्नी ने गंभीर आरोप लगाते हुए बताया कि मेरी शादी 2 साल पहले हुई थी। शादी के बाद पति अनूप मारपीट करते थे और मुझे मायके छोड़ आए। कुछ दिन बीतने के बाद जब मैं वापस ससुराल आई तो मुझे अपने दोस्त पप्पू के साथ रहने का दबाव बनाने लगे। विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दी और कहा तुम्हे अब मेरे दोस्त के साथ पत्नी बन कर रहना है मेरे घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नही है।इधर थाने में पप्पू कोरी ने पुलिस को बताया कि अनूप मेरे साथ अहमदाबाद में नौकरी करता है। मेरी गैरमौजूदगी अनूप अक्सर मेरे घर आया करता था। मेरी पत्नी से बढ़ी नजदीकियों के बीच अनूप मेरी पत्नी को अपने साथ ले गया और अपनी पत्नी मेरे पास छोड़ दिया।विवाद में एक पक्ष का दावा है कि उसने दोस्त की पत्नी की मदद की है, लेकिन धीरे-धीरे उनका रिश्ता गहरा होता चला गया। अब दोनों ही युवक एक-दूसरे को धोखेबाज बता रहे हैं और अपने-अपने दोस्त की पत्नी के साथ रह रहे हैं।पप्पू ने आरोप लगाया कि बीते चार महीनों से उसकी पत्नी मेरे पास रह रही है। पप्पू कोरी ने आरोप लगाते हुए बताया कि मेरी पत्नी अनूप का साथ दे रही। उसका कहना है कि अनूप की पत्नी से कोर्ट मैरिज कर लो जिसका मुझ पर दबाव बना रही है। इसके लिए उसने मुझे 10 हजार रुपए भी दिए। इस बात से मना करने पर अनूप ने जान से मारने की धमकी दी।

मातृभूमि सेवा मिशन का निःशुल्क योग शिविर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मातृभूमि सेवा मिशन इकाई रायबरेली की ओर से

मंगलवार प्रातः 5 बजे से सुबह 7 बजे तक आयोजित निःशुल्क योग शिविर का शुभारंभ भारत माता ,वन्देमातरम के जय घोष के साथ हुआ ।समापन हनुमान चालीसा पाठ के साथ किया गया। नगर के राष्ट्रीय ऐतिहासिक स्थल सई नदी निकट शहीद स्मारक स्थल प्रांगण में प्रतिदिन योग साधकों का यह आयोजन निरंतर जारी है। सुबह के खुशनुमा माहौल, सई नदी की कलकल धारा और कोयल की सुरीली आवाज, चिड़ियों की मधुर चहचहाहट से सजे प्राकृतिक वातावरण में योग साधकों ने विभिन्न योगासन, प्राणायाम और ध्यान की क्रियाएँ कर आत्मिक शांति व स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। शिविर का संचालन योग प्रशिक्षिका सोनम गुप्ता और योग प्रशिक्षक राज अग्रहरि ने किया। इस अवसर पर माया, रश्मि, कल्लू राम अग्रहरि, राकेश, दिनेश पाण्डेय, देवता दीन, देवेंद्र नाथ मिश्रा, प्रकाश, सत्येंद्र तथा झूरी सहित अनेक साधक उपस्थित रहे। संयोजक प्रदीप पांडे ने कहा कि 'योग तन-मन को स्वस्थ रखकर रोगों से रक्षा करता है, आत्मबल बढ़ाता है और व्यक्ति को राष्ट्रहित में कर्म करने की प्रेरणा देता है। योग ही जीवन का अनुशासन है और यही स्वस्थ समाज व सशक्त राष्ट्र की आधारशिला है।' शिविर आयोजकों ने नगरवासियों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में जुड़कर योगाभ्यास का लाभ उठाएँ और अगले दिवस के योग शिविर में अवश्य उपस्थित रहें।

Muthoot Fincorp, Prayagraj शाखा प्रबंधक मिस शशि त्रिपाठी से विशेष बातचीत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। साक्षात्कारः श्रीकांत शाह, आधुनिक समाचार ब्यूरो प्रमुख। **प्रश्न 1: मिस शशि त्रिपाठी, सबसे पहले तो हमें यह बताइए कि Muthoot Fincorp की Prayagraj शाखा में आपके**

श्रीकांत शाह

हमारी शाखा स्थानीय समुदाय में एक मजबूत पहचान बना पाई है। **प्रश्न 2: कोविड-19 के बाद से Muthoot Fincorp ने कैसे अपनी सेवाओं को अनुकूलित किया है?** शशि त्रिपाठीः- कोविड-19 महामारी ने सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया, और वित्तीय क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। लेकिन हमें यह समझना था कि हमें डिजिटल समाधानों की ओर तेजी से बढ़ना होगा। Muthoot Fincorp ने अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को मजबूत किया, जिससे लोग घर बैठे अपने ऋण के आवेदन कर सकते हैं और अन्य वित्तीय सेवाएं ले सकते हैं। इसके अलावा, हमने कस्टमर हेल्पलाइन और ऑनलाइन चैट सपोर्ट भी शुरू किया, ताकि ग्राहकों को किसी भी समस्या का तुरंत समाधान मिल सके। **प्रश्न 3: अब जब Muthoot Fincorp को बड़ी सफलता मिल रही है, तो इसके लिए आपकी टीम का कितना योगदान रहा है?** शशि त्रिपाठीः- यह पूरी टीम का सामूहिक प्रयास है। हमारे कर्मचारियों ने लगातार मेहनत की है, और यही कारण है कि हम इस सफलता को हासिल कर पाए हैं। हम अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने पर भी ध्यान देते हैं, ताकि वे हर ग्राहक की जरूरतों को समझ सकें और उन्हें उपयुक्त वित्तीय समाधान प्रदान कर सकें। प्रश्न 4: आप व्यक्तिगत रूप से अपने कार्यक्षेत्र में किस तरह से संतुष्टि प्राप्त करती हैं?शशि त्रिपाठीः- मेरे लिए संतुष्टि तब मिलती है जब ग्राहक हमें विश्वास के साथ अपनी वित्तीय समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए आते हैं। हमारे ग्राहक हमारी सेवाओं से संतुष्ट होते हैं, यही मेरी सबसे बड़ी सफलता है। इसके अलावा, एक महिला के रूप में इस क्षेत्र में काम करके मुझे एक प्रेरणा मिलती है, और मैं इस तथ्य पर गर्व महसूस करती हूं कि मैं दूसरों के लिए एक उदाहरण बन सकती हूं। **प्रश्न 5: आपके लिए भविष्य में Muthoot Fincorp की क्या योजनाएँ हैं?** शशि त्रिपाठीः- हमारी योजना है कि हम न केवल अपनी शाखाओं की संख्या बढ़ाएं, बल्कि डिजिटल प्लेटफॉर्म को भी और सशक्त बनाएं। हम नए उत्पादों और सेवाओं को लाने की योजना बना रहे हैं, ताकि हमारे ग्राहक अधिक से अधिक सुविधाएं प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, हम ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपनी सेवाओं का विस्तार करना चाहते हैं ताकि वहाँ के लोग भी Muthoot Fincorp की वित्तीय सेवाओं का लाभ उठा सकें। **प्रश्न 6: क्या आप युवाओं को इस क्षेत्र में आने के लिए कोई सलाह देना चाहेंगी?** शशि त्रिपाठीः- मेरी सलाह

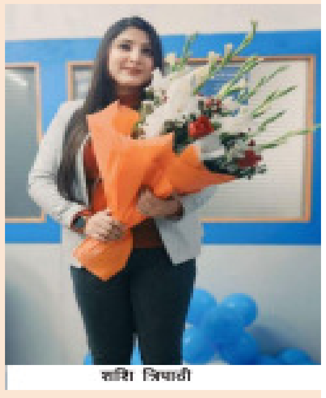

शशि त्रिपाठी

यही होगी कि यदि आप वित्तीय सेवाओं के क्षेत्र में कदम रखना चाहते हैं, तो आपको ग्राहक की जरूरतों को समझने की क्षमता विकसित करनी होगी। इसके साथ ही, आपको न केवल तकनीकी कौशल, बल्कि अच्छा नेतृत्व और टीमवर्क भी विकसित करना होगा। यह क्षेत्र चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन अगर आप समर्पण और ईमानदारी से काम करें, तो आपको इसमें सफलता जरूर मिलेगी। **प्रश्न 7: श्रीकांत जी, धन्यवाद! श्रीकांत शाहः- हमारे साथ इस साक्षात्कार को साझा करने के लिए आपका धन्यवाद, मिस त्रिपाठी।** आपके विचार हमारे पाठकों के लिए बहुत प्रेरणादायक होंगे।

50 लाख हड़पने के बाद बीवी ने लवर से की मैरिज,फिर से 25 लाख की डिमांड,बुरा फंसा सेना का जवान

कानपूर। देश की सरहद पर अपने फर्ज को निभाने वाले एक सैनिक को प्रताड़ना झेलनी पड़ रही है। उसकी पुलिस भी

सुनवाई नहीं कर रही है। जिसकी वजह से दर-दर भटकने को मजबूर है। सैनिक ड्यूटी छोड़कर न्याय की गुहार लगा रहा है। फौजी का आरोप है कि पत्नी का प्रेमी लगातार फोन कर 25 लाख की डिमांड कर रहा है। रुपए नहीं देने पर जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। फौजी सतेंद्र सिंह राजावत जम्मू के उधमपुर में तैनात हैं। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि उनकी शादी फरवरी 2014 में प्रियंका सिंह से हुई थी। ड्यूटी की वजह से अधिकांश समय बाहर रहता था। शादी के कुछ समय बाद मुझे पता चला कि पत्नी प्रियंका के दिलीप गुप्ता नाम के शख्स से प्रेम संबंध हैं। प्रियंका ज्यादातर अपने मायके में रहती थी। उसके मायके वाले भी उसका समर्थन करते थे।सतेंद्र सिंह राजावत ने बताया कि पत्नी ने सहेली सुषमा के साथ मिलकर झूठे मामले में फंसा दिया। जिसमें चार वर्ष जेल काटने के बाद बरी हो गया। उन्होंने बताया कि जिस वक्त जेल में था उसी समय अकाउंट में जमा पैसे, जेवर, स्कूटी सब हड़प ली। इसके बाद पत्नी प्रियंका ने गुजैनी थाना क्षेत्र निवासी दिलीप गुप्ता से शादी कर ली। जबकि दिलीप पहले से शादीशुदा है। उसके दो बेटियां भी हैं। प्रियंका ने बिना मुझे तलक दिए दूसरी शादी कर ली। जिसके दस्तावेज मेरे पास हैं।पीड़ित फौजी ने बताया कि दिलीप आदतन अपराधी है। उसने तालाबों और कई विवादित प्लोटों पर कब्जा कर रखा है। इतना सब करने के बाद भी पत्नी और प्रेमी 25 लाख रुपए की डिमांड कर रहे हैं।

पैसे नहीं देने पर जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। मैं दस दिन की छुट्टी लेकर आया था। पीड़ित का कहना है कि जो मेरे साथ हुआ है, अब किसी दूसरे के साथ नहीं हो। मेरा जीवन तो बर्बाद कर दिया।

उन्होंने बताया कि पत्नी और उसका प्रेमी एक संगठित गैंग चला रहे हैं। जिसमें लोगों को फंसा कर मुकदमा लिखाने की धमकी देकर मोटी रकम वसूली जाती है।

फेलिक्स हॉस्पिटल नोएडा में हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्स प्रोग्राम की शुरुआत, व्यावहारिक शिक्षा के साथ मिलेगा रियल हॉस्पिटल में काम करने का अनुभव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएड़ा। फेलिक्स हॉस्पिटल नोएडा ने हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन में प्रैक्टिकल लर्निंग के दौरान छात्र हॉस्पिटल के विभिन्न विभागों जैसे फ्रंट ऑफिस, हाउसकीपिंग, टीपीए स्किल सीखने का फायदा होगा। इस दो साल के कोर्स में सैद्धांतिक पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के पोर्टल

मास्टर्स प्रोग्राम की शुरुआत की है। जिसमें किसी भी पृष्ठभूमि के ग्रेजुएट्स आवेदन कर सकते हैं। इस कोर्स की खास बात यह है कि छात्रों को असली हॉस्पिटल के माहौल में मरीजों और उनकी समस्याओं के साथ काम करते हुए प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह कोर्स हेल्थकेयर सेक्टर में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं के लिए एक अनूठा अवसर है जहां वह सिद्धांत के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त कर सकेंगे। पंकज माथुर का कहना है कि कोर्स की शुरूआत अक्टूबर 2025 से होगी। यह कोर्स नई शिक्षा नीति-2020 के स्किल-बेस्ड और इंडस्ट्री-एकेडमिया पार्टनरशिप वाले मॉडल पर आधारित है। जिससे छात्रों को रोजगारपरक कौशल सीखने का मौका मिलेगा। यह दो साल का प्रोग्राम है। जिसमें इंटर्नशिप पहले महीने से ही शुरू होगी। कोर्स पूरा करने पर छात्रों को मास्टर ऑफ वोकेशनल स्टडीज (हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन) की डिग्री मिलेगी। जो मेधावी कौशल विश्वविद्यालय सिक्किम द्वारा प्रदान की जाएगी। जिसे यूजीसी से मान्यता प्राप्त है। एंड बिलिंग, इंजीनियरिंग, एचआर, क्वालिटी एश्योरेंस, मार्केटिंग, फार्मेसी, सप्लाई चेन आदि में दो-दो महीने की रोटेशनल प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न विभाग की कार्यप्रणाली का अध्ययन कर सकें। इस कोर्स की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि छात्र वास्तविक अस्पताल के माहौल में वास्तविक मरीजों के साथ काम करते हुए सीखेंगे। फेलिक्स हॉस्पिटल का यह इनोवेटिव एप्रोच पारंपरिक क्लासरूम टीचिंग से बिल्कुल अलग है। छात्रों को प्रतिदिन अस्पताल के विभिन्न विभागों में पोस्ट किया जाएगा जहाँ वे दो-दो महीने के लिए काम करेंगे। ऑनलाइन थ्योरी के दौरान पढ़ाई का सैद्धांतिक हिस्सा ऑनलाइन होगा। जिसे छात्र किसी भी समय विश्वविद्यालय के पोर्टल के माध्यम से पढ़ सकेंगे। विशेषज्ञों का मार्गदर्शन मिलेगा यानी हॉस्पिटल के वरिष्ठ प्रबंधकों और विभागाध्यक्षों के सान्निध्य में छात्रों को प्रैक्टिकल का ज्ञान मिलेगा। यह एलाइड हेल्थ के छात्रों के लिए आदर्श कोर्स है। यानी नर्सिंग, डेंटिस्ट्री, फिजियोथेरेपी, फार्मेसी जैसे कोर्स कर चुके छात्रों को इस क्षेत्र में नई के माध्यम से ऑनलाइन उपलब्ध होगा जिसे छात्र कभी भी एक्सेस कर सकते हैं। दिन का समय अस्पताल के विभिन्न विभागों में बिताया जाएगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 स्किल बेस्ड कोर्सेज पर विशेष जोर देती है और एकेडेमिया-इंडस्ट्री पार्टनरशिप को बढ़ावा देती है। फेलिक्स हॉस्पिटल का यह टीचिंग मॉडल इन्हीं दिशानिर्देशों का पालन करता है। यह एप्रोच शिक्षा को अधिक व्यावसायिक और कौशल आधारित बनाने में सहायक है। यह कोर्स हेल्थकेयर इंडस्ट्री में करियर बनाने वाले युवाओं के लिए एक सुनहरा अवसर है जो उन्हें व्यावहारिक अनुभव के साथ-साथ अकादमिक योग्यता भी प्रदान करेगा। प्रवेश की जानकारी के लिए करें संपर्कः- फेलिक्स हॉस्पिटल में यह कोर्स अक्टूबर 2025 से शुरू होने जा रहा है। किसी भी बैकग्राउंड के ग्रेजुएट छात्र जिनकी हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन में रुचि है। वह इस कोर्स के लिए आवेदन कर सकते हैं। एडमिशन से संबंधित अधिक जानकारी के लिए पंकज माथुर से 99295 95318 पर संपर्क कर सकते हैं।

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए समर्थन और समावेश को बढ़ावा देने के लिए दिव्यांग बच्चों से मिले राज्य मंत्रा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा राज्यमंत्री का स्वागत किया, जबकि विशेष शिक्षिका इलिका रावत ने बच्चों का परिचय करवाया।इस फाउंडेशन के पुनर्वास और विशेष शिक्षा के कार्य की मंत्री ने सराहना की और ऐसे

सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्य मंत्री बीएल वर्मा ने सेक्टर 70 में स्थित फर्स्टवन रिहैब फाउंडेशन का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने दिव्यांग बच्चों से बातचीत की और फाउंडेशन द्वारा प्रदान की जा रही पुनर्वास सेवाओं की सराहना की। मंत्री ने फाउंडेशन के निदेशक डॉ. महिपाल सिंह और डॉ. दीक्षा श्रीवास्तव के साथ केंद्र का भ्रमण किया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. सुष्मिता भाटी और प्रशासन प्रमुख कृष्णा यादव ने मौके पर डिजिटल एवं सोशल मीडिया मैनेजर सौम्या सोनी ने राज्यमंत्री को अपनी मैगजीन और पुष्प देकर उन्हें भेंट दी। इस दौरान बच्चों में खुशी, आराध्या, शौर्य, ग्रंथ, आर्या, विदांश, नैतिक, सारांश आदि ने साथ बातचीत की और उनके साथ समय बिताया। बच्चों की उपस्थिति और उत्साह ने इस अवसर को और भी विशेष बना दिया। इसका उद्देश्य दिव्यांग व्यक्तियों के लिए समर्थन और समावेश को बढ़ावा देना था, जो सरकार की पहल के अनुरूप है। संस्थानों के महत्व पर जोर दिया जो दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बीएल वर्मा ने बच्चों को प्रेरित करते हुए संबोधित किया और कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया शब्द दिव्यांग अब सच में साकार होता दिखाई दे रहा है।आज इन बच्चों से मिलकर, इनके द्वारा बनाई गई इन-हाउस पत्रिका और न्यूज़लेटर देखकर मुझे अत्यंत खुशी प्राप्त हुई।

कथक नृत्यांगना अनु सिन्हा की अगुवाई में मेघ मल्हार का हुआ आयोजन, 40 कलाकारों की प्रस्तुति देख मंत्रमुग्ध हुए दर्शक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-107 में फाउंडेशन फार कृष्णा कला व एजुकेशन सोसाइटी द्वारा द्वारा वर्षा ऋतु और प्रकृति आधारित संगीत-नृत्य कर कलाकारों ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। मेघ मल्हार महोत्सव नृत्य और संगीत में प्रकृति की आराधना की थीम पर आयोजित किया गया जिसका निर्देशन एवं कोरियोग्राफी मशहूर कथक नृत्यागना डॉ. अनु सिन्हा ने किया। इसमें 40 कलाकारों ने भाग लिया और सुंदर प्रस्तुति दी । इसमें राग मेघ व मियाँ मल्हार पर आधारित शास्त्रीय संगीत प्रस्तुति और भरतनाट्यम, ओडिसी व कथक शैली में नृत्यमय वर्षा की अभिव्यक्ति एवं वृक्षों, पत्तियों और वनों की सजीव छवि ओडिसी और समकालीन नृत्य के माध्यम से प्रकृति के महत्व का चित्रण किया गया। कार्यक्रम में एनटीपीसी एवं इंडियन आयल का सहयोग रहा । कार्यक्रम बहुत ही सुंदर ढंग से आयोजित किया गया।

एओए की कारगुजारियों से त्रस्त निवासियों ने कालातीत करने की डिप्टी रजिस्ट्रार से लगाईं अर्जी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित देविका गोल्ड होम्स सोसाइटी की सोसाइटी पर कब्ज़ा करने से पहले कोई ुस्नहीं बुलाई ना ही कोई सुचना दी बल्कि जब पूरी सोसाइटी सो के निवासी आशीष कुलकर्णी और आनन्द सिंह ने बताया कि लिफ्ट में बेहद अश्लील और आपत्ति जनक

समस्या दिन प्रतिदिन बढती ही जा रही है , यहाँ पहले बिल्डर के द्वारा पिछले छ वर्षों से निवासियों का शोषण हो ही रहा था कि इसी बीच प्राधिकरण के उलझाने वाले फैसले ने सोसाइटी के लोगों को और उलझा दिया तथा एओए ने स्थिति को और बदतर कर दिया। निवासी आशीष अनन ने बताया कि सोसाइटी में लगभग 3 करोड़ के काम पेंडिंग हैं जिसे बिल्डर ने कराना था और आई?फ़एमएस फण्ड भी लगभग 3 करोड़ है जो बिल्डर ने एओए को नहीं दिए , प्राधिकरण ने एओए को बिल्डर के साथ कार्यपूर्ति का का निर्देश दिया था लेकिन गत 6 जुलाई को भोर में ही एओए ने बाउंसर और पुलिस की मदद से बिल्डर के सभी स्टाफ को भगा दिया , बिल्डर ने एओए अवैध है का पत्र सभी निवासियों को देकर यहाँ से अपना पल्ला झाड लिया है , एओए अध्यक्ष की तानाशाही रवैया ऐसा है कि रही थी तो अचानक इस तरह का कार्य किया जिससे अब पूरी सोसाइटी उलझ गई है , ज्ञात हो कि यहाँ अभी रजिस्ट्री भी नहीं हुई है ऐसे में निवासियों को आगे अँधेरा दिखाई दे रहा है.निवासी हिमांशु सक्सेना ने बताया कि अध्यक्ष ने कुछ गलत दस्तावेज भी लगाये हैं रजिस्ट्रेशन के समय जिसकी जाँच के लिए रजिस्ट्रार लखनऊ से गुहार लगाई गई है जिसे उन्होंने ने संज्ञान में लेकर डिप्टी रजिस्ट्रार को जाँच के आदेश दे दिए हैं , मुकुल मिश्रा ने बताया कि मेड से फिर से पैसों को उगाही की जा रही है कार्ड के नाम पर जबकि उनके पास एक वर्ष के लिए कार्ड वैध था , एक निवासी ने बताया कि उन्होंने बिल्डर को दिसम्बर तक का मेंटेनेंस बिल्डर को दे दिया था लेकिन अब एओए अध्यक्ष उन्हें पुनः भ्यतान के लिए दबाव बना रहे हैं सबसे अधिक संगीन मामला एक टावर का है जहाँ निशान बने हुए हैं जिसे पेंट करने का आग्रह निवासियों ने अनुराग खरे से कि लेकिन वे ना तो स्वयं इसे पेंट करा रहे हैं ना ही जब निवासियों ने स्वतः फण्ड देकर इसे कराने की बात कि तो परमिशन दे रहे है हार कर लोगों 1090 पर इसकी शिकायत दर्ज कराइ है क्योंकि लिफ्ट से महिलाओं और बच्चों का आना जाना बेहद सर्मिंदगी पूर्ण है , बेसमेंट और सफाई कि हालत बदतर हो चुकी है , एओए ने आते ही लोगों को एडवांस का बिल भेज दिया जबकि बिल्डर हमेशा एक महीने बाद बिल भेजता निवासी शिबानंद पाढी ने बताया किर्देि की मनमानी और बिल्डर की उपेक्षा तथा प्राधिकरण के उलझे हुए फैसले से हम लोग फंसा हुआ महसूस कर रहे हैं , निवासी अब अपनी समस्या को लेकर माननीय उच्च न्यायाय में भी गुहार लगाने की योजना बना रहे है।

पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने किया प्रदर्शनी का उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। विश्व फोटोग्राफी दिवस (19 अगस्त) के अवसर पर नोएडा मीडिया क्लब में तीन दिवसीय फोटो मीडिया क्लब की इस पहल को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक ले जाने की जरूरत है, जिसमें पुलिस प्रशासन हरसंभव सहयोग करेगा।' इस मौके प्रवीण कुमार सिंह, नोएडा एंट्रेप्रेन्योर्स एसोसिएशन अध्यक्ष विपिन मल्हन, महासचिव वी.के. सेठ, नोएडा एम्प्लाइज एसोसिएशन अध्यक्ष

प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। यह प्रदर्शनी 19 से 21 अगस्त तक सेक्टर-29 स्थित मीडिया क्लब में चलेगी। मंगलवार को प्रदर्शनी का शुभारंभ गौतमबुद्ध नगर की पुलिस कमिश्नर श्रीमती लक्ष्मी सिंह ने किया।उद्घाटन के बाद उन्होंने गैलरी में प्रदर्शित तस्वीरों का अवलोकन किया और फोटो पत्रकारों की मेहनत की सराहना की। उन्होंने कहा, 'एक तस्वीर हजारों भावों को बयां करती है और इसके पीछे फोटोग्राफर की गहरी सोच और कड़ी मेहनत होती है। पर मीडिया क्लब अध्यक्ष आलोक द्विवेदी ने पुलिस कमिश्नर को पुष्पगुच्छ और प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया। वहीं महासचिव जेपी सिंह, उपाध्यक्ष अमित चौधरी, सचिव जगदीश शर्मा, कोषाध्यक्ष मनोज वत्स और कार्यकारिणी सदस्य आंचल यादव ने अन्य अतिथियों का स्वागत और अभिनदंन किया।कार्यक्रम में एडिशनल पुलिस कमिश्नर राजीव नारायण मिश्रा, डीसीपी नोएडा यमुना प्रसाद, डीसीपी ट्रैफिक लखन सिंह, एडिशनल डीसीपी सुमित शुक्ल, एसीपी प्रथम राजकुमार चौधरी, फोनरवा अध्यक्ष योगेंद्र शर्मा समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।क्लब अध्यक्ष आलोक द्विवेदी ने बताया कि इस वर्ष भी प्रदर्शनी में नोएडा, ग्रेटर नोएडा और दिल्ली-एनसीआर के 50 से अधिक फोटो जर्नलिस्टों की कृतियों को प्रदर्शित किया गया है। सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक जारी रहने वाली इस प्रदर्शनी में खेल, अध्यात्म, संस्कृति, मनोरंजन और सामाजिक मुद्दों से जुड़ी तस्वीरें आकर्षण का केंद्र बनी हैं।

वाह कलेक्टर मैडम वाह आप बधाई के पात्र हैं ! कौन है केसर बाई और कौन भू माफिया जो कठपुतली की तरह कर रहा है इस्तेमाल !

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) (दिनेश यादव) मैहर। कलेक्टर रानी बाटड द्वारा आदिवासी की जमीन बिक्री की अनुमति देने का मामला विवादों में फंसा ! देखा जाए तो एक ओर मैहर कलेक्टर के सामने भदनपुर पहाड़ क्षेत्र पिपरहट सडेरा देवरी ऐसे मीनिंग क्षेत्र हैं जो कि रिलायंस सीमेंट केजेएस सीमेंट और अल्ट्राटेक सीमेंट के माइनिंग क्षेत्र से घिरा हुआ है इन क्षेत्रों में आदिवासियों की जमीन खरीदी बिक्री के फर्जी वाडे मामले मैहर कलेक्टर के सामने कई आए इतना ही नहीं पिछले तीन-चार सालों से कई आदिवासी किसान अपनी जमीन फैक्ट्री को बेचना चाहते हैं लेकिन उनकी मंजूरी पर कोई विचार नहीं किया जा रहा और दूसरी ओर फैक्ट्री को राहत पहुंचाने के लिए जमीन अधिग्रहण का भी काम शुरू कर दिया गया है देखा जाए तो इसी तरह का एक और मामला सामने आया है जिसमें मैहर कलेक्टर का एक आदेश जो 6 मई 2025 को जारी किया गया जिसमें उन्होंने केसरबाई कोल की जमीन लगभग 6 बीघा तीन विश्वा जमीन की मंजूरी दे डाली इतना ही नहीं आदिवासियों को जमीन की मंजूरी इस शर्त पर दी जाती है कि उसके एवरेज में उसे दूसरी जमीन खरीदनी पड़ती है लेकिन देखा जाए तो भू माफिया इतना शातिर था कि उन्होंने मैहर सीमेंट वर्तमान अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री के लीज में आने वाली भूमि पिपराहट माइंस के बगल की जमीन केसर बाई के नाम में महज 705000- 00 लाख रुपए में

खरीदी जिसकी कीमत सीमेंट फैक्ट्री द्वारा 25 लाख रुपए में खरीदी जा रही है देखा जाए तो भू माफिया के षड्यंत्र में कलेक्टर को गुमराह करके यह मंजूरी ली गई या इस पूरे खेल में मैहर कलेक्टर की भी सहभागिता दिखाई दे रही है केसरबाई ने जमीन बेचने की मंजूरी ली और जमीन को बेच भी दिया और उसके एवेज में उसने जो जमीन खरीदी है उसके बारे में आप जानेंगे तो होस ही उड़ाएंगे पिपराहट माइंस के पास शंभू कोल से यह जमीन उसने खरीद ली लेकिन देखा जाए तो यह जमीन फैक्ट्री के लीज में थी और शंभू कोल से महज 7,05000- 00 रुपए में जमीन खरीद ली गई देखा जाए तो इस जमीन की कीमत अल्ट्राटेक सीमेंट फैक्ट्री के लीज के अंदर की है जिसकी कीमत फैक्ट्री ने 25 लाख रुपए निर्धारित कर रखी है.इतना ही नहीं शंभू कोल से यह जमीन खरीद ली गई और शंभू कोल को भूमि विहीन कर दिया गया! सूत्रों की माने तो गुपचुप तरीके से ग्राम लखवार की केसरबाई के नाम की यह जमीन आदिवासी से गैर आदिवासी के नाम स्थानांतरण करने के लिए मंजूरी मैहर कलेक्टर द्वारा दिया गया है जबकि देखा जाए तो इस तरह की कई सैकड़ो फाइल है कलेक्टर कार्यालय में धूल फाक ती नजर आ रही है लेकिन मैहर कलेक्टर ने किसी को भी इसकी अनुमति नहीं दी फिर इस तरह के आदेश पिछले 1 साल में केवल तीन ऐसे व्यक्तियों को मंजूरी मिली है जो काफी शहर में नामची रहे हैं इससे पूर्व में भी दो अन्य लोगों के उंगलियों के सारे पर नाचने वालेआदिवासी किसान के नाम में जमीन लेकर मंजूरी कर करोड़ों रुपए में सीमेंट फैक्ट्री को बेचा गया है अगर इस बात की हकीकत को जानना है तो वर्तमान में उन किसानों को देखा जाए जिनके नाम की जमीन बिकी है और उनके खातों पर करोड़ों रुपए आए हैं लेकिन देखा जाए तो आज भी वह गरीब आदिवासी किसान जिसके नाम का उपयोग कर करोड़ों का खेल हो रहा है वह आज भी भूमाफियाओं के खेत या गौशाला में काम करता दिखाई देगा।

माई वर्ल्ड प्री स्कूल एंड चाइल्ड केयर सेंटर का हुआ भव्य उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। माई वर्ल्ड प्री स्कूल एंड बहुत ही उत्साहवर्धक रूप से हिस्सा लिया। श्रीमती स्वीटी अग्रवाल

चाइल्ड केयर सैंटर 16-बी खसरा नंबर -194, साबेरी नोएडा एक्सटेंशन में न्यू ब्रांच का उद्घाटन अंकित भारती (विधायक सैदपुर गाजीपुर) के कर कमलों द्वारा किया गया। इस उद्घाटन समारोह मैं अति विशिष्ठ अतिथि ओ पी भारती, चौधरी राज पाल सिंह, अनिल कुमार सिंह, हरेंद्र पाल सिंह, श्रीमती प्रेमलता भारती, श्रीमती सुनीता देवी एवम अन्य विशिष्ट अतिथियों ने (संस्थापक एवं निदेशक), श्रीमती विमला कुमारी (निदेशक) संजीव कुमार अग्रवाल माई वर्ल्ड ने सभी अतिथियों को फ्लावर बुक्के देकर एवं शाल पहनाकर भव्य स्वागत किया। अरूण कुमार (निदेशक) माई वर्ल्ड ने सभी अतिथियों को अपना बहुमूल्य समय निकालकर उदघाटन समारोह को भव्य बनाने के लिए दिल से धन्यवाद दिया एवम आभार व्यक्त किया।

जी.एल. बजाज छात्र ने ए.के.टी.यू. मेरिट 2024-25 में हासिल किया पाँचवाँ स्थान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जी.एल. बजाज इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट को असाधारण उपलब्धि पर अत्यंत गर्व है। ऐसे मील के पत्थर न केवल संस्थान को गौरवान्वित करते हैं

यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि बी.टेक. कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के प्रतिभाशाली छात्र श्री अभिषेक सिंह ने ए.के.टी.यू. मेरिट सूची 2024-25 में पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया है। यह उपलब्धि अभिषेक की मेहनत, लगन और शैक्षणिक उत्कृष्टता का परिणाम है। साथ ही यह जी.एल. बजाज द्वारा प्रदान की जाने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सशक्त मार्गदर्शन और छात्र-केंद्रित शिक्षण वातावरण का भी प्रमाण है। इस अवसर पर जी.एल. बजाज एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन्स के वाइस चेयरमैन श्री पंकज अग्रवाल ने कहाः- 'हमें अभिषेक सिंह की इस बल्कि हमारे हज़ारों छात्रों को ऊँचाइयों को छूने और हर क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित भी करते हैं।' जी.एल. बजाज सदैव शैक्षणिक उत्कृष्टता को अपने विज़न के केंद्र में रखता है। संस्थान निरंतर प्रतिभा को निखारने, अत्याधुनिक ज्ञान प्रदान करने और ऐसे मूल्य स्थापित करने का प्रयास करता है जो छात्रों को भविष्य का नेतृत्व करने और नवाचार लाने के लिए तैयार करते हैं। यह उपलब्धि जी.एल. बजाज की उस गौरवशाली परंपरा में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ती है, जहाँ के विद्यार्थी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परचम लहराते आए हैं।

एआईएफएफ फुटसल क्लब चैंपियनशिप 2024-25 का ताज गोल हंटर्ज़ एफसी के नाम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। का गोल हंटर्ज़ एफसी, दिल्ली का एक शानदार फुटसल व्यक्तिगत खिलाड़ियों का भी उत्कृष्ट प्रदर्शन रहाः- अलीफ रहमान मोल्लाह को टूर्नामेंट का

क्लब, इतिहास में अपना नाम दर्ज करते हुए प्रतिष्ठित एआईएफएफ फुटसल क्लब चैंपियनशिप 2024-25 का विजेता बन गया है। फाइनल में कोलकाता के भवानीपुर एफसी को 4-2 के रोमांचक मुकाबले में हराकर उन्होंने यह ख़िताब अपने नाम किया। यह ग्रैंड फिनाले उत्तराखंड के रुद्रपुर स्थित श्री मनोज सरकार स्टेडियम, शिवालिक हॉल में आयोजित किया गया था। कप्तान अंश गुप्ता के नेतृत्व में और मुख्य कोच धीरेन्द्र सिंह व सहायक कोच शिबुन डैश के मार्गदर्शन में, गोल हंटर्ज़ एफसी ने पूरे टूर्नामेंट में असाधारण कौशल, टीम वर्क और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया। यह टीम पूरे टूर्नामेंट में अपराजित रही, जिसमें तीन ग्रुप स्टेज मैचों के बाद क्वार्टर फाइनल, सेमीफाइनल और अंत में फाइनल में उनका शानदार प्रदर्शन जारी रहा। टीम की सफलता में ङसर्वश्रेष्ठ गोलकीपर चुना गया। महीप अधिकारी को टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। खास बात यह है कि गोल हंटर्ज़ एफसी की पूरी टीम दिल्ली के खिलाड़ियों से बनी है, जो स्थानीय प्रतिभा की ताकत और जमीनी स्तर पर फुटबॉल को बढ़ावा देने के लिए क्लब की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 3 अगस्त 2025 को शुरू हुए इस टूर्नामेंट में पूरे भारत के कुछ बेहतरीन फुटसल क्लबों ने भाग लिया। गोल हंटर्ज़ एफसी की जीत न केवल दिल्ली की खेल विरासत को और बढ़ाती है, बल्कि भारतीय फुटसल में एक पावरहाउस के रूप में उनकी स्थिति को भी मजबूत करती है। गोल हंटर्ज़ क्लब के अध्यक्ष और भाजपा के प्रवक्ता गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने कहा, 'यह सिर्फ शुरुआत है, यह क्लब और भी आगे बढ़ेगा और आने वाले समय में एएफसी प्रतियोगिता में भारत को गौरवान्वित करेगा।'

भू माफियाओं के खिलाफ ग्रामीणों ने किया विरोध प्रदर्शन, जिलाधिकारी नामित ज्ञापन देकर बुलंद की आवाज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। घोरावल तहसील क्षेत्र के मझिगवां चौहान गांव निवासी दर्जनों

ग्रामीणों ने मंगलवार को कलेक्ट्रेट परिसर में भूमाफियाओं के खिलाफ अवैध अतिक्रमण को लेकर विरोध प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी नामित ज्ञापन देकर बुलंद की आवाज लगाई न्याय की गुहार। गांव के रहवासियों ने बताया कि मौजा-मझिगवाँ चौहान की सैकड़ो बीघा शासकीय भूमि पर अवैध अतिक्रमण किया जा रहा है। जबकि सहायक अभियन्ता-चतुर्थ मिर्जापुर नहर प्रखण्ड मिर्जापुर द्वारा पूर्व में ही यह सूचना जारी किया जा चुका है कि सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि बेलन वीयर के अन्तर्गत पड़ने वाली सिंचाई विभाग की भूमि को किसी विशेष व्यक्ति को पट्टा नही किया गया है, और यदि किसी प्रकार का अतिक्रमण (खेती-बारी) करता है तो उसके विरूद्ध वैधानिक कार्यवाही की जायेगी, जिसके लिये वह स्वयं जिम्मेदार होगा। जिसे सिंचाई विभाग के सींचपर्यवेक्षक द्वारा बीते 12 जुलाई सन् 2025 को ही ग्राम प्रधान दीपक सिंह के दरवाजे पर तथा ग्राम पंचायत कार्यालय पर चश्वा किया गया, वही गाँव में कई स्थानो पर चश्वा कर पर्याप्त प्रचार, प्रसार किया जा चुका है। कर्मचारियों के बार-बार मना किये जाने के बावजूद भी भू-माफियाओं द्वारा शासकीय भूमियों पर अवैध अतिक्रमण किया जा रहा है। तथा साथ ही गॉव के अन्य काश्तकारो की कब्जा शुदा भूमियों पर भी अतिक्रमण किया जा रहा है, और अतिक्रमण करने की धमकी भी दी जा रही है। तथा जिन काश्तकारो की भूमियों के बाद न्यायालयों में लम्बित है उन पर भी अतिक्रमण का प्रयास किया जा रहा है। व राकेश पुत्र सरजू मौर्य उपरोक्त द्वारा पी0डब्लू0डी0 की सड़क को भी जोत कर अतिक्रमण किया गया है। इस प्रकार गाँव में काफी भय व्याप्त है। प्रार्थीगण काफी सहमे हुये है। अवैध अतिक्रमण को रोका जाना एवं भू-माफियों के विरूद्ध वैधानिक कार्यवाही किया जाना उचित एवं न्याय संगत होगा। इस मौके पर सोनी, राजकुमारी, नीलम, सगीता, परमिला, बुधवंती सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से किया जाये आच्छादित-डीएम, 16 से 30 अगस्त तक विशेष संतृप्तिकरण हेतु चलाया जाये अभियान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह की अध्यक्षता आज कलेक्ट्रेट सभागार में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की समीक्षा की गयी, से अधिक कृषक बन्धुओं को लाभान्वित किया जाये, जिससे कि उनके फसलों का नुकसान होने पर उन्हें क्षतिपूर्ति मिल सकें। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की अग्रणी जिला प्रबन्धक ने अवगत कराया कि कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, कृषि भवन, नई दिल्ली के निर्देशानुसार

समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने एल0डी0एम0 से योजना की प्रगति के सम्बन्ध में जानकारी ली, तो एल0डी0एम0 द्वारा बताया गया कि जनपद में 83021 केसीसी खाताधारकों के सापेक्ष अभी तक मात्र 10759 किसानों ने ही फसल बीमा योजना से आच्छादित हुए हैं, जो मात्र 12०96ः है, जिस पर जिधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए सभी बैंक के प्रतिनिधि को निर्देशित करते हुए कहा कि वह अपने दायित्वों के प्रति संवेदनशील रहें, यह सरकार की महत्वकांक्षी योजना है, इस योजना से अधिक महत्वाकांक्षी योजना है एवं शासन के निर्देशानुसार सभी इच्छुक एवं पात्र किसानों को योजना से आच्छादित किया जाना है ताकि प्राकृतिक आपदा से नुकसान की स्थिति में किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जा सके, उन्होंने बैंकवार समीक्षा करते हुए सभी बैंक समन्वयकों को निर्देशित किया कि उनकी बैंक शाखाओं द्वारा जारी कुल के0सी0सी0 के सापेक्ष सभी पात्र कृषकों को बीमा से आच्छादित कराना सुनिश्चित करें एवं किसानों का विवरण फसल बीमा पोर्टल पर समय से अपलोड करें। इस दौरान अवगत कराया गया है कि किसान क्रेडिट कार्ड धारकों को प्रधानमंत्री फसल बीमा से आच्छादित करने हेतु 16 से 30 अगस्त 2025 तक विशेष संतृप्तिकरण अभियान की शुरूआत की गयी है। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी, जिला विकास अधिकारी हेमन्त कुमार सिंह, उपश्रमायुक्त पिपरी, जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण, जिला दिव्यांगजन कल्याण अधिकारी विद्या देवी, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा सहित अन्य सम्बन्धितगण उपस्थित रहें।

कथक नृत्यांगना अनु सिन्हा की अगुवाई में मेघ मल्हार का हुआ आयोजन, 40 कलाकारों की प्रस्तुति देख मंत्रमुग्ध हुए दर्शक

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। सेक्टर-107 में फाउंडेशन फार कृष्णा कला व एजुकेशन सोसाइटी द्वारा द्वारा वर्षा ऋतु और प्रकृति आधारित संगीत-नृत्य कर कलाकारों ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया। मेघ मल्हार महोत्सव नृत्य और संगीत में प्रकृति की आराधना की थीम पर आयोजित किया गया जिसका निर्देशन एवं कोरियोग्राफी मशहूर कथक नृत्यागना डॉ. अनु सिन्हा ने किया। इसमें 40 कलाकारों ने भाग लिया और सुंदर प्रस्तुति दी । इसमें राग मेघ व मियाँ मल्हार पर आधारित शास्त्रीय संगीत प्रस्तुति और भरतनाट्यम, ओडिसी व कथक शैली में नृत्यमय वर्षा की अभिव्यक्ति एवं वृक्षों, पत्तियों और वनों की सजीव छवि ओडिसी और समकालीन नृत्य के माध्यम से प्रकृति के महत्व का चित्रण किया गया। कार्यक्रम में एनटीपीसी एवं इंडियन आयल का सहयोग रहा । कार्यक्रम बहुत ही सुंदर ढंग से आयोजित किया गया।

'मिशन शक्ति' के तहत महिला सुरक्षा व सशक्तिकरण को लेकर जनपद पुलिस का प्रभावी जागरूकता अभियान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित 'मिशन शक्ति फेज-5.0' के अंतर्गत महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित करने हेतु पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में जनपद सोनभद्र पुलिस द्वारा व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के अंतर्गत जिले के सभी थाना क्षेत्रों में गठित मिशन शक्ति टीमों व एंटी रोमियो स्क्वॉड द्वारा बाजारों, शिक्षण संस्थानों, चौराहों, धार्मिक स्थलों और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर पहुंचकर महिला अधिकारों, सुरक्षा संसाधनों व कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। प्रमुख गतिविधियां- महिला सशक्तिकरण योजनाओं की जानकारी, मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, निराश्रित महिला पेंशन योजना, राष्ट्रीय पोषण मिशन, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत योजना।

महिला सुरक्षा हेल्पलाइन नंबरों का प्रचार-प्रसार एवं पंपलेट वितरण- महिला शक्ति हेल्पलाइन - 1090, महिला हेल्पलाइन - 181, पुलिस आपात सेवा - 112, सीएम हेल्पलाइन - 1076, स्वास्थ्य सेवा - 102, एम्बुलेंस - 108, साइबर हेल्पलाइन - 1930. जन सहभागिता एवं संवाद- महिला पुलिसकर्मियों ने आमजन, विशेषकर युवतियों व महिलाओं से संवाद स्थापित कर उन्हें आश्वस्त किया कि किसी भी असुविधा अथवा उत्पीड़न की स्थिति में वे निःसंकोच पुलिस से संपर्क करें। आम नागरिकों ने इस पहल की सराहना करते हुए ऐसे अभियानों को नियमित रूप से आयोजित किए जाने की आवश्यकता जताई। जनपद पुलिस की प्रतिबद्धता- सोनभद्र पुलिस द्वारा महिला सुरक्षा एवं सशक्तिकरण हेतु इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम मिशन शक्ति के तहत सतत रूप से आयोजित किए जाते रहेंगे, जिससे सकारात्मक सामाजिक वातावरण और जनसहभागिता को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके।

पर्यावरण बचाएं आओ हम मिलकर पेड़ लगाएःसंदीप मिश्रा, पेड़ हैं तो प्राण अभियान के तहत सदर विधानसभा में चल रहा अभियान

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। सदर विधानसभा के कोन

चाचीकला मझिगावा व नकतवार में मंगलवार को पेड़ है तो प्राण है अभियान के संयोजक युवा समाजसेवी संदीप मिश्रा ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण व शुद्ध वातावरण को लेकर एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है जिसमें युवाओं की सहभागिता के साथ इस अभियान को लक्ष्य तक पहुंचाने का संकल्प के साथ आमजन को जागरूक करने को लेकर चलाया जा रहा है गांव-गांव अभियान। श्री मिश्रा ने बताया कि पेड़ लगाते हुए मौजूद लोगों में हरेक गांव स्थान पर जगह जगह सैकड़ो पेड़ों का वितरण भी किया गया सभी लोगों का उत्साह व उमंग के साथ पेड़ लगाने को लिया संकल्प । इस कार्य क्रम में बृजेश चौबे , घनश्याम चौबे , रामलाल भारती, लवकुस भारती, रानू चेरो, बालगोविन्द पनिका ,रामजी खरवार, मुनीराम भारती, व रन्नो खरवार ,पवन माझि , राकेश धागर, राजेस जैसवाल , रामू गुप्ता , दिनेश रौनियार , श्रनाथ गुप्ता , विनोद जयसवाल , राघव रवानी मौजूद रहे।

गैंगस्टर एक्टः दोषी गैंग लीडर समेत दो को 10-10 वर्ष की कठोर कैद, 10-10 हजार रूपये अर्थदंड , अर्थदंड न देने पर 2-2 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी

जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित की जाएगी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। विशेष न्यायाधीश गैंगेस्टर कोर्ट सोनभद्र अर्चना रानी की अदालत ने गैंगस्टर एक्ट के मामले में मंगलवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी गैंग लीडर आनंद उर्फ कल्लू व सक्रिय गैंग सदस्य रामनाथ उर्फ डब्लू को 10-10 वर्ष की कठोर कैद एवं 10-10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 2-2 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित होगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक प्रभारी निरीक्षक प्रवीण कुमार सिंह ने चोपन थाने में दी तहरीर में अवगत कराया था कि 26 अप्रैल 2019 को पुलिस बल के साथ देखभाल क्षेत्र में था तो पता चला कि आनंद उर्फ कल्लू पुत्र मोहन गोड़ निवासी कनछ टोला कोड़ईल , थाना चोपन, जिला सोनभद्र का एक सक्रिय गैंग है, जिसका वह गैंग लीडर है। इसके अलावा गांव का ही गैंग का सक्रिय सदस्य रामनाथ उर्फ डब्लू पुत्र रामप्रसाद चेरो के साथ अन्य सदस्य शामिल हैं। इनके विरुद्ध हत्या समेत कई मुकदमा विचाराधीन है। लोगों में भय पैदा कर आर्थिक लाभ हेतु कार्य करना इनका एकमात्र कार्य है। यहीं वजह है कि इनके विरुद्ध कोई भी मुकदमा लिखवाने अथवा गवाही देने की जुर्रत नहीं करता है। जिसकी वजह से इनका वर्चस्व कायम है। इस तहरीर पर 26 अप्रैल 2019 को चोपन थाने में गैंगस्टर एक्ट में एफआईआर दर्ज किया गया था। विवेचना के उपरांत पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में गैंग लीडर आनंद उर्फ कल्लू एवं सक्रिय सदस्य रामनाथ उर्फ डब्लू के विरूद्ध चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी गैंग लीडर आनंद उर्फ कल्लू और सक्रिय सदस्य रामनाथ उर्फ डब्लू को 10-10 वर्ष की कठोर कैद एवं 10-10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 2-2 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बितायी अवधि सजा में समाहित होगी। अभियोजन पक्ष की ओर से शासकीय अधिवक्ता गैंगस्टर कोर्ट धनंजय शुक्ला ने बहस की।

ट्रेन की चपेट में आने से अधेड़ युवक की कट कर हुई मौत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र/करमा। करमा थाना क्षेत्र लाईन को पार कर रहे थे कि इसी बीच राबर्ट्सगंज की तरफ से आ की सुचना मिलते ही घर में कोहराम मच गया घर के सभी लोगों के साथ

के स्थानीय बाजार निवासी 35 वर्षीय अधेड़ युवक का ट्रेन से कटने से हुई मौत। जानकारी के अनुसार राज बली यादव पुत्र शिवप्रसाद यादव उम्र करीब 35 वर्ष मंगलवार को दिन में करीब 3 बजे डीलाही गाँव के पास शौच के लिए रेलवे रही मालगाड़ी की चपेट में आ गए जिससे उनकी घटना स्थल पर ही मृत्यु हो गई आस पास के लोग तत्काल घटना स्थल पर पहुँच गए शव को देखते ही पहचान गये जिसकी सुचना उनके पिता शिव प्रसाद यादव को फोन पर दिये मौत बाजार के लोग भी घटना स्थल पर पहुँच गए स्थानीय लोगों ने करमा पुलिस को सुचना दी मौके पर पहुचे थाना प्रभारी राजेश कुमार सिंह ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही करते हुए पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया।

पुलिस अधीक्षक, सोनभद्र द्वारा प्रतिदिन की भांति जनता दर्शन में आए फरियादियों की सुनी गई समस्याए

प्राप्त जन शिकायतों के त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित को दिए गए आवश्यक दिशा-निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। आज दिनांक हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। पुलिस अधीक्षक महोदय ने प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से निष्पादित

20.08.2025 को पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा द्वारा पुलिस कार्यालय में आयोजित जनता दर्शन में फरियादियों की समस्याओं एवं शिकायतों को सुना गया। जनसुनवाई के दौरान पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा प्रत्येक प्रकरण को गंभीरता से संज्ञान में लेते हुए संबंधित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों के शीघ्र, गुणवत्तापूर्ण एवं निष्पक्ष निस्तारण सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया कि जनसुनवाई व महिला हेल्पडेस्क को अधिक प्रभावशाली और संवेदनशील बनाया जाए, ताकि आमजन को बार-बार पुलिस कार्यालय आने की आवश्यकता न पड़े तथा उनकी समस्याओं का समाधान स्थानीय स्तर पर ही हो सके। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि जिन शिकायतों का निस्तारण थाना स्तर पर संभव है, उन्हें किया जाए। इसी क्रम में जनपद के समस्त राजपत्रित अधिकारीगण एवं थाना प्रभारियों द्वारा भी अपने-अपने कार्यालयों/थानों पर जनसुनवाई करते हुए आमजन से प्राप्त शिकायतों का त्वरित व प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे पुलिस व जनता के मध्य विश्वास और सहयोग की भावना और अधिक सुदृढ़ हो सके।

एंटी रोमियो अभियान चलाकर किया जागरूकः संतु सरोज

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित 'मिशन शक्ति फेज-5.0'

के अंतर्गत महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं आत्मनिर्भरता को सुनिश्चित करने हेतु पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में दुद्धी महिला थाना प्रभारी संतु सरोज सहित जनपद पुलिस द्वारा व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के अंतर्गत जिले के सभी थाना क्षेत्रों में गठित मिशन शक्ति टीमों व एंटी रोमियो स्क्वॉड द्वारा बाजारों, शिक्षण संस्थानों, चौराहों, धार्मिक स्थलों और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर पहुंचकर महिला अधिकारों, सुरक्षा संसाधनों व कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी गई। इस दौरान महिला सुरक्षा हेल्पलाइन नंबरों का प्रचार-प्रसार एवं पंपलेट वितरण करते हुए बताया गया. महिला शक्ति हेल्पलाइन - 1090, महिला हेल्पलाइन - 181, पुलिस आपात सेवा - 112, सीएम हेल्पलाइन - 1076, स्वास्थ्य सेवा - 102, एम्बुलेंस - 108, साइबर हेल्पलाइन - 1930 महिला पुलिसकर्मियों ने आमजन, विशेषकर युवतियों व महिलाओं से संवाद स्थापित कर उन्हें आश्वस्त किया कि किसी भी असुविधा अथवा उत्पीड़न की स्थिति में वे निःसंकोच पुलिस से संपर्क करें। आम नागरिकों ने इस पहल की सराहना करते हुए ऐसे अभियानों को नियमित रूप से आयोजित किए जाने की आवश्यकता जताई।

थाना म्योरपुर पुलिस द्वारा फरार चल रहे 08 नफर वारण्टी अभियुक्तगण को किया गया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। अशोक कुमार मीणा, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन

में जनपद के वाँछित/वारण्टी/पुरस्कार घोषित अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अपर पुलिस अधीक्षक (ऑपरेशन) श्री त्रिभुवन नाथ त्रिपाठी के निर्देशन व क्षेत्राधिकारी दुद्धी के पर्यवेक्षण/नेतृत्व में आज दिनांक 20.08.2025 को थाना म्योरपुर पुलिस द्वारा फरार चल रहे 08 नफर वारण्टी अभियुक्तगण को मा0 न्यायालय द्वारा निर्गत वारण्ट के क्रम में गिरफ्तार अभियुक्तगण को मा0 न्यायालय भेजा गया। गिरफ्तारशुदा वारण्टी अभियुक्त का विवरणः- 1. रामसुभग पनिका पुत्र रामप्रसाद पनिका उम्र करीब 28 वर्ष निवासी ग्राम काचन, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 2. रामप्रसाद पनिका पुत्र लक्ष्मण पनिका उम्र करीब 58 वर्ष निवासी ग्राम काचन, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 3. नन्हकी देवी पत्नी रामप्रसाद उम्र करीब 50 वर्ष निवासी ग्राम काचन, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 4. विजय कुमार विश्वकर्मा पुत्र मनबहोरन उम्र करीब 58 वर्ष निवासी ग्राम पड़री, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 5. रामसागर पुत्र हरिकिशुन उम्र करीब 43 वर्ष निवासी ग्राम पड़री, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 6. गंगासागर पुत्र हरिकिशुन उम्र करीब 38 वर्ष निवासी ग्राम पड़री, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 7. शिवनारायन पुत्र शंखलाल उम्र करीब 57 वर्ष निवासी ग्राम परनी, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 8. शान्ति देवी पत्नी शिवनारायन उम्र करीब 55 वर्ष निवासी ग्राम परनी, थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम का विवरणः- 1. थानाध्यक्ष कमल नयन दूबे थाना म्योरपुर जनपद सोनभद्र।2. उ0नि0 कृष्णानन्द सिंह थाना म्योरपुर,सोनभद्र। 3. हे0का0 अतुल कुमार थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 4. हे0का0 अजय कुमार यादव थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 5. का0 सुधीर चौधरी थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र। 6. म0का0 सोनम थाना म्योरपुर, जनपद सोनभद्र।

सोनभद्र में पिकनिक मनाने गए युवक-युवती नदी के तेज बहाव में डूबे,लड़के का शव बरामद,लड़की की तलाश जारी

सोनभद्र। सोनभद्र में दर्दनाक हादसा हुआ। चोपन थाना क्षेत्र के अबाड़ी में कनहर नदी में अचानक पानी बढ़ने से एक युवक और एक युवती गहरे पानी मे डूब गए। दोनों अपने परिवार और पड़ोसियों के साथ पिकनिक मनाने गए थे। हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने शोर मचाया, लेकिन तब तक दोनों गहरे पानी में समा चुके थे। घंटों की मशक्कत के बाद भानु का शव बरामद कर लिया गया, लेकिन स्नेहा की तलाश अभी भी जारी है।जानकारी के मुताबिक चोपन थाना क्षेत्र के अबाड़ी (मिनी गोवा) शुक्रवार को ओबरा के सेक्टर नंबर 4 निवासी दीनानाथ त्यागी की चार बेटियां सिताबी (27), दीपा (22), रूपाली (20), स्नेहा (19) और उनके पड़ोसी भानु (22) पिकनिक के लिए कनहर नदी गए थे। शाम करीब 5:30 बजे नहाते समय नदी का जलस्तर अचानक बढ़ गया, और तेज बहाव में स्नेहा और भानु बह गए। स्थानीय लोगों के शोर मचाने के बावजूद दोनों गहरे पानी में डूब गए। खराब नेटवर्क के कारण पुलिस को देर से सूचना मिली। घंटों के प्रयास के बाद भानु का शव बरामद कर लोढ़ी मर्चरी भेजा गया, लेकिन स्नेहा का पता नहीं चला। चोपन थाना प्रभारी विजय कुमार चौरसिया ने बताया कि एसडीआरएफ को सूचित किया गया है, और शनिवार को रेस्क्यू ऑपरेशन जारी रहेगा।स्थानीय लोगों ने बारिश के कारण नदी के जलस्तर में अचानक वृद्धि को आम बताया, लेकिन प्रशासन की ओर से चेतावनी बोर्ड या सुरक्षा व्यवस्था की कमी को इस हादसे का कारण माना।

क्या तीनों फॉर्मेट में भारत के कप्तान बनेंगे शुभमन गिलःटी-20 और वनडे में उप कप्तान बने, टेस्ट में मिल चुकी है कमान

नयी दिल्ली। मंगलवार को बीसीसीआई ने एशिया कप के लिए भारत की टी-20 टीम घोषित की। सोमवार तक कई मीडिया रिपोर्ट्स और एक्सपर्ट्स दावा कर रहे थे कि शुभमन गिल को टी-20 टीम में मौका तक नहीं मिलेगा। हालांकि, जब टीम अनाउंस हुई तो गिल को न सिर्फ मौका मिला, बल्कि उन्हें उप कप्तान भी बना दिया गया। शुभमन को इसी साल टेस्ट टीम की कमान सौंपी गई। उन्हें पिछली आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में वनडे टीम का उप कप्तान भी बनाया गया था। अब टी-20 टीम में भी लीडरशिप रोल देकर बीसीसीआई ने साफ कर दिया है कि शुभमन जल्द ही तीनों फॉर्मेट में भारत के कप्तान बना दिए जाएंगे।टी-20 फॉर्मेट में कप्तानी कर चुके हैं 2024 में टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद टीम इंडिया जिम्बाब्वे दौरे पर गई। जहां शुभमन गिल को ही कप्तान बनाया गया। श्रीलंका में अगली सीरीज हुई, जहां सूर्यकुमार यादव को कप्तानी और शुभमन को उप कप्तानी सौंपी गई। यानी मैनेजमेंट ने गिल को लीडरशिप की जिम्मेदारी देने का मन बना लिया था। बांग्लादेश, साउथ अफ्रीका और इंग्लैंड के खिलाफ बिजी शेड्यूल के कारण शुभमन को टी-20 टीम में मौका नहीं मिला। इस कारण अक्षर पटेल को उप कप्तान बनाया गया। अब जब एशिया कप के दौरान कोई और टूर्नामेंट नहीं है, इसलिए शुभमन को टीम में मौका भी मिला और उन्हें उप कप्तान भी बना दिया गया। इसी साल में मई में टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा और दिग्गज विराट कोहली ने संन्यास ले लिया। जिसके बाद शुभमन गिल को टीम इंडिया का नया टेस्ट कप्तान बनाया गया। इंग्लैंड के खिलाफ पहली ही

सीरीज में उन्होंने इस मौके को भुनाया और टीम को 2 मुकाबले जिताए। शुभमन ने बैट से भी अपना फॉर्म साफ जाहिर कर दिया और 750 रन बना दिए। शुभमन की कप्तानी में इंग्लैंड में सीरीज 2-2 से ड्रॉ कराई। इंग्लैंड सीरीज के साथ उन्होंने दर्शा दिया कि वे लंबे समय तक इस फॉर्मेट में टीम की कप्तानी करने के लिए तैयार हैं। चैंपियंस ट्रॉफी में शुभमन को उप कप्तान बनाए जाने से साफ हो गया कि वनडे में रोहित शर्मा के बाद गिल ही कमान संभालेंगे। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा भी किया जा रहा है कि उन्हें इसी साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज के दौरान कप्तान बना दिया जाएगा। कुछ एक्सपर्ट्स का मानना है कि 2027 में वनडे वर्ल्ड कप तक रोहित ही कप्तान बने रहेंगे। वहीं वर्ल्ड कप के बाद शुभमन इस फॉर्मेट में भी टीम की कमान संभाल लेंगे। गिल वनडे बैटर्स रैंकिंग में नंबर-1 बल्लेबाज हैं और इस फॉर्मेट में उनकी जगह भी पक्की है। ऐसे में देखना अहम होगा कि शुभमन को वनडे फॉर्मेट का कप्तान कब बनाया जाएगा। टी-20 फॉर्मेट में सूर्यकुमार यादव 2026 के टी-20 वर्ल्ड कप तक तो कमान संभालते नजर आएंगे। हालांकि, ऐसा जरूरी नहीं कि टूर्नामेंट के बाद भी उन्हें ही कमान मिले। अगर भारत आईसीसी टूर्नामेंट जीत गया तो सूर्या आगे भी कन्टीन्यू कर सकते हैं, लेकिन टीम टाइटल डिफेंड नहीं कर सकी तो वर्ल्ड कप के ठीक बाद शुभमन को कमान सौंपी जा सकती है। सूर्या बतौर प्लेयर टीम का हिस्सा बने रहेंगे। शुभमन भारत की टी-20 कप्तानी कर चुके हैं और उन्हें आईपीएल में गुजरात टाइटंस को 2 सीजन तक लीड करने का अनुभव भी है। पिछले सीजन तो उन्होंने टीम को प्लेऑफ में भी जगह दिलाई। हालांकि, टीम एलिमिनेटर में हारकर बाहर हो गई। रिकॉर्ड्स को देखते हुए वे लंबे समय तक गुजरात की कमान संभालते नजर आएंगे। 2012-13 में जब विराट कोहली ने खुद को तीनों फॉर्मेट में भारत की टीम में पक्का कर लिया था, तब उन्हें ही हर फॉर्मेट में एमएस धोनी का डिप्टी बनाया गया। 2014 में कोहली ने एशिया कप समेत जिम्बाब्वे और बांग्लादेश के खिलाफ वनडे और टी-20 टीम की कप्तानी भी कर ली थी। 2014 में कोहली को पहली बार टेस्ट टीम का फुल टाइम कप्तान बनाया गया। उस समय उनकी उम्र भी 24 साल ही थी। शुभमन ने भी 25 की उम्र में ही टेस्ट कप्तानी संभाली। 2017 में विराट को टी-20 और वनडे फॉर्मेट की भी कप्तानी मिल गई। इस दौरान उनकी उम्र 27 साल ही थी। बीसीसीआई अब शुभमन गिल को भी विराट कोहली की तरह ही तैयार करने में लगा है। टेस्ट फॉर्मेट में तो शुभमन ने कमान संभाल ही ली है। अगले 2 या 3 साल में उन्हें टी-20 और वनडे फॉर्मेट की कप्तानी देकर बीसीसीआई उन्हें तीनों फॉर्मेट में स्थापित कर देगा। अगर 2027 में शुभमन को कप्तान बनाया गया तो वे 2035 के वनडे वर्ल्ड कप तक कप्तान बने रहे सकते हैं। हालांकि, उनकी कप्तानी में टीम का प्रदर्शन कमजोर रहा तो जरूर उन्हें हटाकर किसी और को कमान सौंप दी जाएगी।

शूटर मनु भाकर का नाम पद्मश्री के लिए भेजा- सूत्र,पिछली बार खेल रत्न मिला था; पेरिस ओलिंपिक में जीते थे डबल ब्रॉन्ज मेडल

नयी दिल्ली। स्टार शूटर मनु भाकर का नाम पद्मश्री के लिए रिकमेंड किया गया है। खेल मंत्रालय के सूत्र ने यह जानकारी दी। 23 साल की इस निशानेबाज ने 4 दिन पहले देश के चौथा सबसे बड़े अवॉर्ड के लिए आवेदन किया। पिछले साल यह अवॉर्ड दिग्गज स्पिनर आर अश्चिन और पूर्व हॉकी गोलकीपर पीआर श्रीजेश को मिला था। मनु को इसी साल 17 जनवरी को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने खेल रत्न से नवाजा था। मनु भाकर ने पिछले साल अगस्त-सितंबर में पेरिस

ओलिंपिक गेम्स में डबल ओलिंपिक मेडल जीते थे। वे 10 मीटर एयर पिस्टल इंडीविजुअल और मिक्स्ड डबल्स में तीसरे स्थान पर रहीं। उनके दो मेडल के दम पर भारत ने पेरिस ओलिंपिक में कुल 6 मेडल जीते थे।मनु ने पिछले साल भी पद्मश्री के लिए आवेदन किया था, लेकिन उन्हें यह अवॉर्ड नहीं मिला था। बताया जा रहा है कि तब खेल मंत्रालय ने पीआर श्रीजेश और पूर्व क्रिकेटर आर अश्विन का नाम इस अवॉर्ड के लिए रिकमेंड कर दिया था।विवाद होने पर मनू भाकर को खेल रत्न अवॉर्ड दिया गया है।मनु भाकर ने कजाकिस्तान में चल रही एशियन शूटिंग चैंपियनशिप में ब्रॉन्ज मेडल जीता है। मनु भाकर ने महिला 10 मीटर एयर पिस्टल के फाइनल में 219.7 अंक के साथ तीसरा स्थान हासिल किया है। फाइनल में चीन की मा चियान्के ने 243.2 अंक हासिल किए और गोल्ड मेडल अपने नाम किया। वहीं दक्षिण कोरिया की यांग जीइन ने 241.6 अंक लेकर सिल्वर मेडल जीता है।

बदबू,सीलन,फंगस वाली एसी आपको कर सकती हैं बीमार..बहुत बीमार

नयी दिल्ली। भारत उन गिने-चुने देशों में है, जहां सभी ऋतुएं होती हैं। इनमें मानसून बेहद

सुकून देने वाला मौसम है। इस मौसम में भी कुछ लोग एसी (एयर कंडीशनर) का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन इसकी देखभाल और बदली हुई जरूरतों को नजरअंदाज कर देते हैं। नतीजतन सीलन, फंगस, बदबू, बिजली बिल में इजाफा और कई बार एसी में खराबी तक आ जाती है। इसलिए गर्मी की तुलना में मानसून में एसी की देखभाल कहीं ज्यादा जरूरी होती है। अगर समय रहते ध्यान न दिया जाए तो छोटा-सा फॉल्ट बड़ी परेशानी बन सकता है।मानसून में एसी इस्तेमाल करना इसलिए सहीं नहीं हैं मानसून में हवा में नमी ज्यादा होती है, जो एसी की कार्यक्षमता पर असर डालती है। अगर समय पर सफाई और सर्विसिंग न हो तो एसी में फंगस, बैक्टीरिया और धूल जमा हो सकती है। इससे हवा दूषित हो जाती है, जो एलर्जी, सिरदर्द या सांस की समस्या का कारण बन सकती है। साथ ही नमी के कारण कूलिंग कॉइल और फिल्टर जल्दी गंदे होते हैं, जिससे बिजली की खपत बढ़ती है और कूलिंग कमजोर हो जाती है। कई बार एसी से पानी टपकने लगता है, जिससे दीवारें भी खराब हो सकती हैं। इसलिए मानसून में एसी की देखभाल पर खास ध्यान देना जरूरी है। अगर एसी का फिल्टर गंदा हो या पानी बाहर निकालने वाली पाइप बंद हो जाए तो नमी कमरे में जमा होने लगती है। बहुत ठंडा टेम्परेचर रखने से भी दीवारों और खिड़कियों पर पानी जम सकता है, जिससे सीलन बढ़ जाती है। इसलिए मानसून में एसी की सफाई जरूरी है और टेम्परेचर ज्यादा कम नहीं रखना चाहिए।मानसून में एसी को सिर्फ चलाना ही नहीं, बल्कि उसकी देखभाल भी जरूरी है। इससे वह लंबे समय तक सही काम करेगी। साथ ही बिजली की बचत भी होगी। नीचे दिए गए कुछ आसान और कारगर तरीकों को अपनाकर आप अपने एसी की परफॉर्मेंस को बेहतर बना सकते हैं।

मानसून में लगातार बढ़ती नमी, बारिश और गंदगी की वजह से एसी के कुछ खास हिस्से जल्दी प्रभावित होते हैं। जैसेकि-एयर फिल्टर बारिश के मौसम में धूल की वजह से एयर फिल्टर पर जल्दी गंदगी जम सकती है। इसलिए हर 10-15 दिन में फिल्टर को निकालकर धोएं। गंदा फिल्टर हवा की क्वालिटी को खराब कर सकता है और एलर्जी या सांस से जुड़ी परेशानियों का कारण बन सकता है। ड्रेनेज पाइप- मानसून में अक्सर पानी की निकासी में दिक्कत आती है, खासकर अगर पाइप में धूल या काई जम गई हो। पानी सही से न निकलने से इनडोर यूनिट से पानी टपकने लगेगा। यह सीलन और दीवारों को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए समय-समय पर ड्रेनेज पाइप को साफ करवाना जरूरी है। आउटडोर यूनिट (फिन्स और पंखा) - बारिश में आउटडोर यूनिट के आसपास मिट्टी, पत्तियां और कीड़-पतंगे जमा हो सकते हैं। इससे यूनिट के फिन्स और पंखे पर असर पड़ता है और कूलिंग घट जाती है। इसलिए कोशिश करें कि यूनिट छांव या शेड में हो और उसके आसपास सफाई बनी रहे। कूलिंग कॉइल- बारिश में हवा की नमी कॉइल पर जमकर उसे चिपचिपा बना सकती है। इससे कूलिंग धीरे-धीरे कम होने लगती है और बिजली की खपत बढ़ती है। हर सीजन की शुरुआत में इसकी डीप क्लीनिंग जरूर करवाएं। डक्ट (अगर सेंट्रल एसी है) - मानसून में डक्ट के अंदर नमी और गंदगी फंगस को जन्म देती है। इससे हवा में बदबू और एलर्जी के कण फैल सकते हैं। इसलिए मानसून में डक्ट की सफाई कराना जरूरी है, खासकर बच्चों या अस्थमा के मरीजों के लिए।कुछ लोग 16-18 डिग्री पर एसी चला देते हैं, जिससे कमरे में सीलन और पानी की बूंदें जम सकती हैं। यह सेहत और दीवारों दोनों के लिए नुकसानदायक है। साथ ही बारिश के मौसम में आउटडोर यूनिट के आसपास मिट्टी, पत्तियां और कीड़े जमा हो जाते हैं, जिससे यूनिट की परफॉर्मेंस पर असर पड़ता है। इन गलतियों से बचकर आप एसी को न सिर्फ सुरक्षित रख सकते हैं, बल्कि बिजली की बचत और बेहतर कूलिंग भी पा सकते हैं।नम मौसम में पूरे दिन एसी चलाना ठीक नहीं है। इससे कमरे में नमी फंस सकती है, जिससे सीलन, बदबू और फंगल इंफेक्शन की समस्या हो सकती है। साथ ही बिजली की खपत भी बढ़ती है और एसी पर दबाव पड़ता है। बेहतर है कि एसी को ड्राई मोड पर चलाएं, बीच-बीच में कमरे को हवादार करें और जरूरत हो तो सीलिंग फैन का भी इस्तेमाल करें। इससे ठंडक बनी रहेगी और एसी पर लोड भी कम होगा।मानसून में एसी का इस्तेमाल बच्चों और बुजुर्गों के लिए सुरक्षित है, लेकिन सही देखभाल और संतुलित इस्तेमाल के साथ। इस मौसम में हवा में नमी ज्यादा होती है, जो सांस, एलर्जी और फंगल इन्फेक्शन जैसी समस्याएं बढ़ा सकती है। खासकर बच्चों और बुजुर्गों का इम्यून सिस्टम थोड़ा कमजोर होता है, इसलिए उन्हें साफ और आरामदायक वातावरण की ज्यादा जरूरत होती है।

मानसून में एसी का टेम्परेचर थोड़ा अलग और संतुलित रखना चाहिए। इस मौसम में वातावरण में पहले से ही नमी होती है, इसलिए बहुत कम टेम्परेचर (जैसे 16-20 डिग्री) पर एसी चलाना नुकसानदायक हो सकता है। इसलिए तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस के बीच होना चाहिए। इससे कमरे में न तो ज्यादा ठंडक होती है और न ही नमी बढ़ती है। साथ ही एसी की परफॉर्मेंस बेहतर रहती है, बिजली की बचत होती है। नहीं, मानसून में एसी की इनडोर यूनिट को अलग से कवर करने की जरूरत नहीं होती क्योंकि यह पहले से ही घर के अंदर सुरक्षित स्थान पर होती है और मौसम की सीधी मार से बची रहती है। जरूरत कवरिंग की सिर्फ आउटडोर यूनिट को होती है, खासकर तब जब वह खुले में लगी हो और बारिश सीधा उस पर पड़े।

गुड हैबिट्स- भोजन में ढेर सारी सब्जियां खाने की आदतःसब्जी खाने से दिमाग होता तेज, बढ़ती उम्र, कब्ज, अपच, बीमारियां दूर रहती हैं

नयी दिल्ली। दुनिया में 5 ब्लू जोन हैं। यहां के लोगों की औसत उम्र 100 साल से ज्यादा है। ये लोग लंबे जीवन के लिए 9 नियम

अपनाते हैं। उनमें सबसे खास है कि प्लांट बेस्ड खाना ही खाएंगे। ऐसी सभी चीजें खाएंगे, जो पेड़-पौधों के रूप में प्रकृति ने हमें दी हैं। ये खाने में ज्यादा-से-ज्यादा सब्जियां शामिल करते हैं। इसमें कोशिश ये होती है कि जितने ज्यादा रंगों की सब्जियां खाने में शामिल कर सकें। सब्जियां विटामिन्स, मिनरल्स और फाइबर से भरपूर होती हैं। इनसे मिले न्यूट्रिएंट्स से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है और डाइजेस्टिव सिस्टम बेहतर होता है। इससे हार्ट डिजीज, स्ट्रोक और टाइप-2 डायबिटीज जैसी क्रॉनिक बीमारियों का जोखिम कम हो जाता है। खास बात ये है कि इनमें कैलोरी और फाइबर कम होता है। आज 'गुड हैबिट्स' कॉलम में ज्यादा सब्जियां खाने की आदत के बारे में जानेंगे। साथ ही जानेंगे कि- खाने में सब्जियां ज्यादा क्यों होनी चाहिए? ज्यादा सब्जियां खाने के क्या फायदे हैं? सब्जियां क्यों हैं इतनी खास? सब्जियां हमारे शरीर के लिए एक टेक्सचर की ढेरों वैरायटी- हर फल और सब्जी का स्वाद और बनावट अलग होती है। आप चाहें तो तीखे स्वाद वाले प्याज, जैतून और मिर्च ट्राई करें या फिर हल्के स्वाद वाले मशरूम और कॉर्न। मीठा खाने का मन हो तो अंगूर, अनन्नास और आलूबुखारा खाएं और खट्टे स्वाद के लिए नींबू और चकोतरा बढ़िया हैं। फाइबर से भरपूर- अधिकतर फल और सब्जियां फाइबर से भरपूर होते हैं, जो पेट भरने और पाचन को दुरुस्त रखने में मदद करते हैं। ज्यादा फाइबर वाली सब्जियां हैं- मटर, ब्रोकली और फूलगोभी। फाइबर वाले फल हैं- रसभरी, नाशपाती और सेब। कम कैलोरी, कम फैट- अमूमन फल और सब्जियां कम कैलोरी और फैट वाली होती हैं, इसलिए इन्हें ज्यादा मात्रा में खा सकते हैं बिना वजन बढ़ने की चिंता के। उदाहरण के तौर पर, आधा कप अंगूर खाने से आप एक चौथाई कप के मुकाबले 200 से ज्यादा कैलोरी बचा सकते हैं। हां, एवोकाडो, जैतून और नारियल जैसे कुछ अपवाद भी हैं जिनमें थोड़ा ज्यादा फैट होता है। बीमारियों से बचाव- फल और सब्जियों में कुछ खास प्राकृतिक तत्व

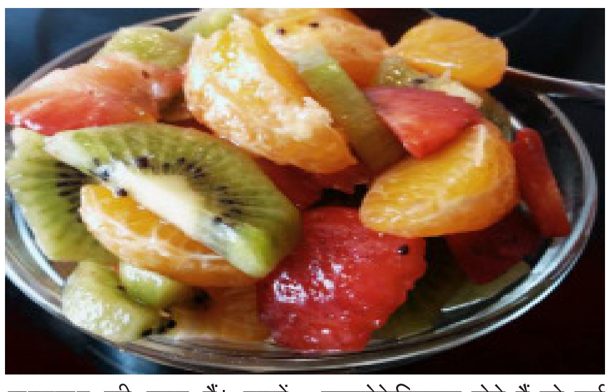

सुपरफूड की तरह हैं। इनमें विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो हमें अंदर से मजबूत बनाते हैं। लेकिन ऐसा क्या है जो इन्हें इतना जरूरी बनाता है? विटामिन और मिनरल्स का खजाना- फल और सब्जियां विटामिन ए,सी,ई और मिनरल्स जैसे मैग्नीशियम, जिंक, फॉस्फोरस फाइटोकेमिकल्स होते हैं जो कई बीमारियों से बचाव करते हैं। इन्हें खाने से डायबिटीज टाइप 2, हार्ट अटैक, स्ट्रोक, हाई ब्लड प्रेशर और कैंसर का खतरा कम हो सकता है। खासकर ब्रोकली, पत्ता गोभी, सरसों और जलकुंभी जैसी क्रूसीफेरस सब्जियां कैंसर से बचाव में मददगार मानी जाती हैं।

और फोलिक एसिड से भरपूर होती हैं। पोटेशियम के लिए एवोकाडो, शकरकंद, केला, आलूबुखारा और टोमैटो प्यूरी खाएं। स्वाद और अच्छी सेहत में मददगार- इनमें सैचुरेटेड फैट, नमक और चीनी बहुत कम होती है, इसलिए ये बैलेंस्ड डाइट का हिस्सा बनती हैं। ये वजन कम करने या बढ़ने से बचाने में मदद करती हैं। साथ ही सूजन कम करने, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर घटाने में भी असरदार हैं। बहुत कम सोडियम और कोलेस्ट्रॉल- ताजे फल और सब्जियों में सोडियम बहुत कम होता है। जैसे बहुत लोग मानते हैं कि सेलरी में सोडियम ज्यादा होता है, लेकिन एक डंठल में सिर्फ 30 मिलीग्राम होता है, जो सिर्फ 1फीसदी डेली वैल्यू है। सब्जियां कैसे खाएं? अब सवाल यह है कि सब्जियों को अपनी रोज की डाइट में कैसे शामिल करें। बहुत से लोग सोचते हैं कि सब्जियां खाना बोरिंग है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। कुछ आसान तरीके हैं-सब्जियों को सलाद बनाएंः पालक, टमाटर, खीरा और गाजर को मिलाकर एक रंग-बिरंगा सलाद तैयार करें। थोड़ा नींबू और नमक डालें, मजा दोगुना हो जाएगा। सूप में डालकर खाएंः ठंड के दिनों में सब्जियों का सूप बनाएं। गाजर, मटर और ब्रोकली डालकर

इसे सेहतमंद और स्वादिष्ट बनाएं। भूनकर खाएंः आलू, शिमला मिर्च और बैंगन को हल्का तेल लगाकर भून लें। यह नाश्ते के लिए भी बढ़िया है। स्मूदी ट्राई करेंः पालक या चुकंदर को फलों के साथ ब्लेंड करें। यह पीने में आसान और पोषण से भरपूर होता है। दाल में मिलाकर खाएंः अपनी रोज की दाल में थोड़ी सी सब्जियां डालें, जैसे लौकी या पालक। स्वाद और सेहत दोनों बेहतर होते हैं। सब्जियां खाने के फायदे - सब्जियां खाने से हमारे

शरीर को ढेर सारे फायदे मिलते हैं। इसके कुछ खास फायदे हो सकते हैं- पेट की सेहत बेहतर रहती है सब्जियों में फाइबर भरपूर मात्रा में होता है, जो पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है और कब्ज की समस्या नहीं होने देता। बीमारियों से बचाव होता है सब्जियों में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं और इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हैं। वजन कंट्रोल में रहता है सब्जियां कैलोरी में कम और पोषण में ज्यादा होती हैं, जिससे वजन बढ़ने का खतरा नहीं रहता और शरीर फिट रहता है। दिमाग की कार्यक्षमता बढ़ती है हरी सब्जियों में पाए जाने वाले विटामिन्स और मिनरल्स मस्तिष्क को सक्रिय रखते हैं और याददाश्त बेहतर बनाते हैं। त्वचा निखरती है- विटामिन ए और सी से भरपूर सब्जियां त्वचा को स्वस्थ, चमकदार और जवां बनाए रखने में मदद करती हैं। हर दिन कम से कम 2-3 कटोरी सब्जियां खानी चाहिए। इससे न सिर्फ शरीर स्वस्थ रहता है, बल्कि आपका मूड भी अच्छा रहता है। सब्जियां न खाने का नुकसान- अगर सब्जियां नहीं खाते, तो शरीर को जरूरी तत्व नहीं मिलते। इम्यूनिटी कमजोर होती है, पेट खराब रहता है और वजन बढ़ने का खतरा रहता है। लंबे समय तक ऐसा चला तो डायबिटीज और हार्ट की बीमारियां भी हो सकती हैं। आपके शरीर को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है- पाचन की दिक्कतः फाइबर की कमी से पेट खराब रहता है। कमजोरीः विटामिन्स न मिलने से थकान जल्दी होती है। बीमारियों का खतराः दिल और डायबिटीज जैसी बीमारियां बढ़ सकती हैं। वजन बढ़ता हैः सब्जियों की जगह जंक फूड खाने से मोटापा हो सकता है। सब्जियों को खाने में कैसे शामिल करें? सब्जियां खाना कोई मुश्किल काम नहीं है। बस थोड़ा सा दिमाग लगाएं और ये आपकी जिंदगी का हिस्सा बन जाएंगी। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। पहले मुझे पालक और भिंडी बिल्कुल पसंद नहीं थे। कुछ आसान तरीके आजमाएं और अब मेरी थाली में हर दिन कोई न कोई सब्जी जरूर होती है। सब्जियां खाना सिर्फ सेहत के लिए ही नहीं, पूरी जिंदगी के लिए फायदेमंद है। ये छोटी-सी आदत आपको लंबा और खुशहाल जीवन दे सकती है। आज से ही शुरू करें। अपनी थाली में रंग भरें और देखें कि आपका शरीर और मन दोनों कैसे खिल उठते हैं।

नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल को राष्ट्रपति की मंजूरी मिली,12 अगस्त को राज्यसभा में पास हुआ था

नयी दिल्ली। नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल को सोमवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मंजूरी मिल गई है। इस बिल में भारत के खेल प्रशासन में सुधार का वादा किया गया है। केंद्र सरकार द्वारा जारी राजपत्र अधिसूचना में कहा गया है कि राष्ट्रपति की मंजूरी सोमवार को मिल गई थी। इस बिल को 23 जुलाई को लोकसभा में पेश किया गया और 11 अगस्त को इसे वहां पारित कर दिया गया। इससे एक दिन बाद राज्यसभा ने दो घंटे से ज्यादा समय तक चली चर्चा के बाद इसे पारित कर दिया था। नेशनल स्पोर्ट्स बिल को लाने की शुरुआत 1975 से हुई थी। लेकिन हर बार राजनीतिक कारणों के चलते यह बिल कभी संसद नहीं जा पाया था। बीसीसीआई पर आरटीआई लागू नहीं होगा बीसीसीआई अब भी आरटीआई के दायरे में नहीं आएगा। खेल मंत्रालय ने नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल में संशोधन किया है। इसके अनुसार, अब केवल उन्हीं खेल संगठनों को इसके दायरे में लाया गया है, जो सरकारी अनुदान और सहायता लेते हैं। बीसीसीआई खेल मंत्रालय से कोई अनुदान नहीं लेता है। हालांकि विभिन्न संगठन कई बार बीसीसीआई को आरटीआई (सूचना का अधिकार) के दायरे में लाने की मांग करते रहे हैं। 23 जुलाई को बिल पेश किया था खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने 23 जुलाई को लोकसभा में नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल, 2025 पेश किया था। इस बिल में खेलों के विकास के लिए नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बॉडी,

नेशनल स्पोर्ट्स बोर्ड, नेशनल खेल इलेक्शन पैनल और नेशनल स्पोर्ट्स ट्रिब्यूनल बनाने के प्रावधान हैं। संसद में इस बिल को जीपीएस में भेजने की मांग भी उठी है। 1975 से शुरुआत हुई नेशनल स्पोर्ट्स बिल को लाने की शुरुआत 1975 में हुई थी। लेकिन राजनीतिक कारणों से यह कभी संसद तक नहीं पहुंच सका था। 2011 में नेशनल स्पोर्ट्स कोड बना, जिसे बाद में बिल में बदलने की कोशिश हुई, लेकिन वह भी अटक गया। अब 2036 ओलिंपिक की बोली लगाने की तैयारी के तहत खेल प्रबंधन में पारदर्शिता और अंतरराष्ट्रीय स्तर की व्यवस्था लाने के लिए इसे लाया गया है। नेशनल स्पोर्ट्स बिल का उद्देश्य- नेशनल एंटी-डोपिंग बिल क्या हैं नेशनल एंटी-डोपिंग (संशोधन) बिल, 2025 एक ऐसा कानून है जो भारत में डोपिंग रोकने की व्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय मानकों के मुताबिक बनाने के लिए लाया गया है। इसका मुख्य मकसद यह सुनिश्चित करना है कि भारत की नेशनल एंटी-डोपिंग एजेंसी पूरी तरह स्वतंत्र तरीके से काम करे और उस पर सरकार का सीधा दखल न हो। क्यों लाया गया?- 2022 में नेशनल एंटी-डोपिंग एक्ट पास हुआ था, लेकिन वर्ल्ड एंटी डोपिंग एजेंसी ने इसमें कुछ आपत्तियां जताईं। वर्ल्ड एंटी डोपिंग एजेंसी को यह आपत्ति थी कि भारत में बनाए गए नेशनल बोर्ड फॉर एंटी-डोपिंग इन स्पोर्ट्स को वर्ल्ड एंटी डोपिंग एजेंसी पर निगरानी और निर्देश देने का अधिकार था, जिसे उन्होंने 'सरकारी हस्तक्षेप' माना। अगर वर्ल्ड एंटी डोपिंग एजेंसी के नियमों का पालन नहीं होता, तो भारत को अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिबंध झेलना पड़ सकता था। 2025 में क्या बदलाव हुए?- बोर्ड (नेशनल बोर्ड फॉर एंटी-डोपिंग) बना रहेगा, लेकिन अब उसके पास एनएडीए पर कोई निगरानी या निर्देश देने का अधिकार नहीं होगा। एनएडीए को ऑपरेशनल इंडिपेंडेंस (संचालन की पूरी स्वतंत्रता) दी गई है। इसका मतलब है कि डोपिंग से जुड़े फैसले केवल एनएडीए के विशेषज्ञ और अधिकारी लेंगे, न कि सरकार या कोई राजनीतिक नियुक्त व्यक्ति। फायदा क्या होगा? भारत का एंटी-डोपिंग सिस्टम डब्लूएडीए के नियमों के अनुरूप होगा। खिलाड़ियों को डोपिंग मामलों में निष्पक्ष जांच और सुनवाई मिलेगी। भारत की अंतरराष्ट्रीय खेलों में साख बनी रहेगी और कोई बैन या सस्पेंशन का खतरा नहीं रहेगा।

अमेरिका के समकक्ष होना ही रूस की रणनीतिक जीत

एंकरेज में ट्रम्प और पुतिन के बीच हुई समिट में यूक्रेन में युद्धविराम को लेकर अंतिम सहमति नहीं ?बनी। ट्रम्प, पुतिन और जेलेंस्की के लिए युद्ध अब भी जारी है, लेकिन यूरोप से लेकर भारत तक दुनिया को युद्ध के खत्म होने के इंतजार की कीमत, इस मामले में अपने लचीलेपन की सीमा और शांत कूटनीति की जरूरत का आकलन करना होगा। ट्रम्प-पुतिन वार्ता को लेकर वादा किया गया था कि उसमें यूक्रेन पर कोई फैसला लिया जाएगा। लेकिन नतीजे सीमित ही रहे। खबर यह है कि चीजें और ज्यादा नहीं बिगड़ीं। अगर कोई समझौता नहीं हुआ तो कोई कड़वाहट भी नहीं आई। यह अपने आप में एक सकारात्मक बात है। ट्रम्प ने कहा कि कई मुद्दों पर सहमति बनी है, सिवाय एक या दो के। आप मान सकते हैं कि ये अनसुलझे मुद्दे डोनबास पर रूस के द्वारा कब्जा बनाए रखने और क्रीमिया के हालिया स्टेटस के इर्द-गिर्द घूमते हैं। युद्धविराम की घोषणा एक अंतरिम उपाय के रूप में की जा सकती थी, जबकि व्यापक समझौते के विवरण बाद में तैयार किए जाते रहते। लेकिन ऐसा न होना यह दर्शाता है कि असहमति काफी गंभीर थी। शायद पुतिन ने खुद इस बात पर जोर दिया हो कि युद्ध तब तक जारी रहे, जब तक उनकी मुख्य मांगें पूरी नहीं हो जातीं।एंकरेज में ट्रम्प या पुतिन की बॉडी लैंग्वेज नकारात्मक नहीं थी। अगर अंततः कोई समझौता हो जाता है, तो ट्रम्प संघर्ष के एक और क्षेत्र यानी गाजा पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यूक्रेन में युद्धविराम होने से अंतरराष्ट्रीय मान्यता के लिए उनकी साख मजबूत होगी, और शायद नोबेल पुरस्कार के लिए दावा भी। जेलेंस्की को आगे

की बातचीत के लिए व्हाइट हाउस बुलाने का उनका प्रयास यह दर्शाता है कि एंकरेज कूटनीति का अंत नहीं, बल्कि एक विराम मात्र था। हालांकि, फिलहाल तो लड़ाई जारी है। यूक्रेनी सेनाएं रक्षात्मक मोर्चों पर डटी हुई हैं और यह स्थिति 2024 के अंत से शायद ही बदली है। जबकि रूसी सेनाएं अपनी अधिक ताकत और बेहतर हथियारों के साथ आगे बढ़ रही हैं। युद्ध लंबे समय से एक गतिरोध की स्थिति में है। पुतिन ने रणनीतिक लचीलापन बनाए रखा, अपनी सेना को आश्वस्त किया और घरेलू प्रतिष्ठा को चमकाया। एंकरेज में उनकी उपस्थिति और एक अमेरिकी राष्ट्रपति से बराबरी की मुलाकात ही अपने आप में एक प्रतीकात्मक जीत थी। इसने मास्को के इस कथन को पुष्ट भी किया कि प्रतिबंधों ने रूस की वैश्विक प्रासंगिकता को कम नहीं किया है। लेकिन यूक्रेन को इस सबसे कोई फायदा न हुआ। उसे न तो युद्धविराम मिला और न ही रोजाना की बमबारी से कोई राहत। जेलेंस्की की अनुपस्थिति ने कीव में बेचैनी बढ़ा दी है। यह बताता है कि यूक्रेन की स्थिति अभी भी नाजुक बनी हुई है। पुतिन की रणनीति में बदलाव की संभावना नहीं है। इधर यूरोप गहरी दुविधाओं का सामना कर रहा है। उसके नेता एंकरेज की इस नाटकीय-वार्ता को बेचैनी से देख रहे थे। उनके लिए मूल मुद्दा हमेशा से यूरोप के लिए रूसी खतरा रहा है। अब यूरोप को खुद से पूछना होगा कि क्या वह यूक्रेन को नाटो से बाहर स्वीकार कर सकता है और इसके बावजूद उसे एक अनौपचारिक सुरक्षा साझेदारी का लाभ दे सकता है? क्या वह रचनात्मक- फिर चाहे वो उसके लिए कितने ही असुविधाजनक क्यों न हों- समझौतों पर विचार कर सकता है? जैसे कि क्रीमिया में साझा या संयुक्त राष्ट्र के पर्यवेक्षण में कोई बंदोबस्त, आंशिक रूप से असैन्यीकृत क्षेत्र या मिश्रित सुरक्षा गारंटी? ये आसान सवाल नहीं हैं, लेकिन स्पष्ट दृष्टिकोणों से इस युद्ध का अंत नहीं होने वाला। मिले-जुले समाधान ही कारगर होंगे। शांति अभी दूर है। रूस अपने कब्जे वाले क्षेत्र को अपने पास रखने पर अड़ा है, जबकि यूक्रेन अपनी सम्प्रभुता को होने वाली किसी भी क्षति को अपने अस्तित्व पर सवालिया निशान मानता है। नाटो और यूरोपीय संघ की आकांक्षाएं यूक्रेन का लक्ष्य बनी हुई हैं, लेकिन रूस इसे कभी स्वीकार नहीं करेगा। ट्रम्प, पुतिन और जेलेंस्की के बीच मास्को में एक त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन अभी तो असम्भव लगता है जब तक कि कीव ज्यादा लचीलापन न दिखाए और यूरोप सीधे तौर पर इसमें शामिल न हो। यूरोपीय नेता मूकदर्शक बने नहीं रह सकते; उनकी सुरक्षा दांव पर है। जेलेंस्की की बयानबाजी से ज्यादा उनके झुकने की क्षमता अंतिम नतीजों को प्रभावित करेगी। पुतिन ने अपनी सेना को आश्वस्त किया और घरेलू प्रतिष्ठा को चमकाया। ट्रम्प से बराबरी की मुलाकात ही अपने आप में प्रतीकात्मक जीत थी। इसने मास्को के इस कथन को पुष्ट किया कि रूस की वैश्विक प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। (ये लेखक के अपने विचार हैं लेफ्टिनेंट जनरल सैयद अता हसनैन)

क्या बच्चे अब 'पिकलबॉल' पैरेंटिंग से बड़े हो रहे हैं

मेरे पीछे बैठी एक युवा मां ने अपना बच्चा सास को सौंपते हुए कहा, 'मैं वॉशरूम से आती हूं।' जैसे ही बच्चा दूसरे हाथों में गया, रोने लगा। मां कुछ मिनट बाद जल्दी से लौटी और बोली, 'यह अब भी क्यों रो रहा है?' दादी ने शांतिपूर्वक जवाब दिया कि 'नवजात बच्चे यदि रोते हैं तो इसमें कुछ भी गलत नहीं।' इस जवाब से चिढ़ी युवा मां बोली, 'कुछ भी।' बच्चे को चुप कराने के लिए उसने तुरंत उसके मुंह में पेसिफायर डाल दिया। वह बोली, 'दूसरे लोग क्या सोचेंगे?'दादी ने कहा, 'जैसे उन्हें तो पता ही नहीं कि बच्चे कैसे पाले जाते हैं और तुमने आठ हफ्तों में ही परवरिश की महारत हासिल कर ली।' इसके बाद उनके बीच हुई हर बातचीत सामान्य हो गई। जैसे, 'फीडिंग कैसी चल रही है? ठीक है। क्या तुम सो पाती हो? मुश्किल से।' अचानक मुम्बई में भारी बारिश के कारण फ्लाइट ?में विलंब की घोषणा हुई और मैं सास-बहू के बीच हुई आगे की बातचीत नहीं सुन पाया। घोषणा की आवाज धीमी पड़ी तो मैंने मां को कहते सुना कि 'यह बच्चे के लिए अच्छा नहीं है।' मुझे लगा कि अब धैर्य टूट चुका है। आवाजें कंपकंपाने लगीं। हो सकता घोषणा के दौरान उनकी बातचीत इतनी तनावपूर्ण हो गई कि बाद में उसने धैर्य की सीमाएं तोड़ दीं। फिर उनमें कोई बात नहीं हुई। जब मैं सिर के ऊपर बने केबिन से किताब लेने उठा तो देखा कि एक की आंखें नम

थीं, जबकि दूसरी खिड़की से बाहर आसमान निहार रही थीं। मैंने महसूस किया कि जब मिलेनियल्स (1981 और 1996 के बीच जन्मे लोग) अपने बेबी बूमर्स (1946 और 1964 के बीच जन्मे) माता-पिता से इस बात पर उलझते हैं कि बच्चे की परवरिश कैसे हो- तो यह भारतीय परिवारों में सर्वाधिक तनाव के क्षण होते हैं। इससे मुझे सोचने पर मजबूर किया कि 1950 से 2025 तक पैरेंटिंग में कैसे बदलाव हुए। कुछ तरीके यहां पेश हैं। जेंटल पैरेंटिंग : यह परवरिश की ऐसी शैली है, जिसमें बढ़ते बच्चों में सहानुभूति, समझ और सम्मान पर जोर दिया जाता है। इसमें बच्चे की जरूरतों के प्रति जिम्मेदार होना, उनके व्यक्तित्व को पहचानना और संचार, मान्यता एवं मर्यादाएं निर्धारित करके उनके भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना शामिल है। जेंटल पैरेंटिंग ऐसी परवरिश नहीं, जिसमें बच्चों को बहुत छूट दी जाती है। इसमें अब भी अपेक्षाएं और मार्गदर्शन देना शामिल है। लेकिन यह सजा के बजाय भावनात्मक जुड़ाव और सिखाने पर जोर देती है। फ्री-रेंज पैरेंटिंग : फिर इस शैली ने जोर पकड़ा, जो बच्चों को अधिक स्वतंत्रता और बिना निगरानी वाला समय देने पर जोर देती है। ताकि आयु संबंधी सीमाओं के भीतर वे खुद खोजबीन कर सकें और अनुभवों से सीख सकें। यह आत्मनिर्भरता, समस्या-समाधान के कौशल और परिस्थिति के मुताबिक दृष्टिकोण अपनाने से संबंधित है। इसमें प्रत्यक्ष निगरानी धीरे-धीरे कम करके बच्चों को खुद चुनौतियों से निपटने का अवसर दिया जाता है।टाइगर पैरेंटिंग : यह एक कठोर, डिमांडिंग और अत्यधिक अंकुश वाली परवरिश है, जो शिक्षा और पाठ्येत्तर गतिविधियों में उच्च स्तर हासिल करने पर केंद्रित है। इसमें बच्चों की निजी पसंद और भावनात्मक स्वास्थ्य की कीमत पर उन्हें पढ़ाई, संगीत या खेल जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता की ओर धकेला जाता है। यह नजरिया अनुशासन, उच्च अपेक्षाओं के साथ पारिवारिक दायित्व और शैक्षणिक उपलब्धियों पर जोर देता है। हैलीकॉप्टर पैरेंटिंग : यह हाल ही में लोकप्रिय हुई। इसमें जरूरत से अधिक संरक्षण और अत्यधिक सहभागिता शामिल है। इसमें माता-पिता बच्चे के जीवन पर निगरानी और नियंत्रण रखते हैं। माता-पिता बच्चे के सिर पर किसी हैलीकॉप्टर की भांति मंडराते हैं। बच्चे की सुरक्षा और सफलता को लेकर अत्यधिक चिंतित रहते हैं। विशेषज्ञों का कहना है इससे कभी-कभी बच्चे की स्वतंत्रता और अनुभवों से सीखने की क्षमता को नुकसान होता है। फंडा यह है कि लगता है, जैसे वर्तमान बच्चे 'पिकलबॉल पैरेंटिंग' में बड़े हो रहे हैं, जिसमें ऊपर बताईं विधियों के सभी नजरिए इस्तेमाल होते हैं। जैसे पिकलबॉल खेल टेनिस, बैडमिंटन, पिंग-पॉन्ग, स्क्वैश और टेबल टेनिस को जोड़कर बनता है। कृपया मुझे लिखें कि यह अच्छा है या नहीं? एन. रघुरामन

घड़ी की तरह, हमारा 'तीसरा हाथ' हमें सफलता दिलाता है!

हम सभी जानते हैं कि सटीक समय बताने के लिए घड़ी को तीन सुइयों की आवश्यकता होती है- घंटा, मिनट और सेकंड। इसी तरह से कई लोग जानते होंगे कि किसी चुनौतीपूर्ण परियोजना को समय पर अच्छी तरह से पूरा करने के लिए हम इंसानों को भी तीन हाथों की जरूरत होती है। लेकिन हममें से ज्यादातर दो ही हाथों का इस्तेमाल करते हैं और तीसरे की मदद नहीं लेने के कारण समय से काम पूरा नहीं कर पाते। ऐसे में बात जब किसी ज़रूरी परियोजना को पूरा करने की हो तो यही तीसरा हाथ, एक सफल व्यक्ति को, पूरी कोशिश करने के बावजूद असफल रह गए व्यक्ति से अलग बनाता है। यह सच है कि किसी परियोजना को समय पर पूरा करने के लिए 'समय' और 'धन' दो महत्वपूर्ण फैक्टर हैं। लेकिन मैं एक और पहलू की ओर ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूं, जो वास्तव में इन दोनों को बहुत सफल बना देता है। ऐसा नहीं है कि मैं समय और धन के महत्व को कम कर रहा हूं। मैं मानता हूं कि दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। लेकिन तीसरे फैक्टर के बिना कई बार वो वांछित परिणाम नहीं दे पाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय (एससी) के हाल ही के एक फैसले पर मेरे कुछ तर्क इस प्रकार हैं। दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में आवारा कुत्तों के संबंध में सुप्रीम कोर्ट के आदेश ने एक गंभीर बहस छेड़ दी है। कुछ ने इसे लोगों की सुरक्षा के लिए जरूरी बताया है, वहीं कुछ ने इसे जानवरों के प्रति अमानवीय बताते हुए इसकी निंदा की है। अदालत ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे आवारा कुत्तों को तुरंत पकड़ें, उनके लिए शेल्टर्स बनाएं और उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर वापस आने से रोकें। मैं 2014 का एक उदाहरण देना चाहता हूं, जब गोवा- जो देश के सबसे छोटे राज्यों

में से एक है और आज भी पर्यटन से होने वाली कमाई पर निर्भर रहता है- में रेबीज का खतरा बढ़ गया था। उस साल कम से कम 17 लोगों की इस वायरस से मौत हो गई थी। इसके अलावा, स्थानीय नगरीय निकायों के पास कुत्तों की संख्या का कोई डेटा नहीं था। यही वह समय था, जब मिशन रैबीज सक्रिय हुआ। यह पायलट निगरानी परियोजना वाला एक विश्वव्यापी पशु चिकित्सा सेवा एनजीओ था। उन्होंने गोवा में दो मुख्य उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए एक कार्यक्रम तैयार किया- रेबीज के उन्मूलन के लिए टीकाकरण, ताकि कुत्तों और इंसानों दोनों को बचाया जा सके और कुत्तों को आगे प्रजनन करने से रोकने के लिए उनका स्टरिलाइजेशन। तब से गोवा में रेबीज के टीके की 4,00,000 से अधिक खुराकें भेजी जा चुकी हैं, जिससे यह भारत में अब तक का सबसे अधिक समय तक जारी रहने वाला रेबीज नियंत्रण प्रयास बन गया है। इस अभियान का उद्देश्य राज्य के अधिकांश कुत्तों को हर साल रेबीज का टीका लगवाना था। इसके तहत तमाम स्कूली बच्चों को भी रैबीज के खतरों के प्रति जागरूक किया गया। सबसे अच्छी बात यह है कि कहां से शुरू करें, यह सोचने के बजाय वे 30 दिनों में 50,000 कुत्तों का टीकाकरण करने का लक्ष्य लेकर सड़कों पर उतर पड़े थे। ध्यान दीजिए कि समय सीमा बहुत कम थी। लेकिन महीने के अंत तक, 16 अलग-अलग देशों के 500 से ज्यादा पशु चिकित्सकों ने स्थानीय टीमों के साथ मिलकर 63,000 कुत्तों का टीकाकरण किया और इस तरह लक्ष्य से ज्यादा हासिल कर दिखाया! उन्होंने यह कैसे किया? उन्होंने अपना काम करने और लक्ष्य हासिल करने पर ध्यान केंद्रित किया था, बस।यही लय अगले साल राज्य की नीति में भी नजर आई। 2015 में, दिवंगत और तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर पर्रिकर ने मिशन रेबीज के साथ एक एमओयू साइन किया, जिसके तहत पूरे राज्य में व्यापक टीकाकरण और स्टरिलाइजेशन अभियान शुरू हुआ। इसके बाद, गोवा में 24 घंटे रेबीज निगरानी, आपातकालीन हॉटलाइन, त्वरित प्रतिक्रिया दल बनाने की शुरुआत हुई और हर तालुके में फैले स्वयंसेवक, कुत्तों का टीकाकरण और स्टरिलाइजेशन कर रहे थे और डॉग-बाइट के शिकार लोगों की सहायता कर रहे थे। सितंबर 2017 से गोवा में मनुष्यों में रेबीज के मामले लगभग समाप्त हो गए। कोविड के दौरान भोजन की कमी के कारण सीमावर्ती राज्यों से कुछ कुत्ते पलायन करके गोवा चले आए। राज्य ने 2021 से फिर से बड़े पैमाने पर स्टरिलाइजेशन अभियान चलाया, जिसमें उन्होंने जहां केवल 2,265 कुत्तों की नसबंदी की थी, वहीं वे 2024-2025 में 12,085 कुत्तों की नसबंदी करने में सफल रहे। इस प्रकार कुल स्टरिलाइजेशन का आंकड़ा 40,000 को पार कर गया। फंडा यह है कि अगर फोकस न हो तो समय और पैसे का असर थोड़ा कम हो जाता है। फोकस ही वह तीसरा हाथ है, जिससे न केवल समय और पैसे पूरे असरदार तरीके से काम कर पाते हैं, बल्कि इससे किसी प्रोजेक्ट को समय पर अच्छे से पूरा करने में भी मदद मिलती है। एन. रघुरामन

देश में एक और अल्पसंख्यक समुदाय न्याय का हकदार है

देश में मुसलमानों के साथ हो रहे सलूक को लेकर अकसर सवाल उठते हैं। जहां भारतीय मुस्लिमों के खिलाफ नफरती भाषा का इस्तेमाल निरंतर बढ़ता जा रहा है, वहीं एक और मुद्दा है, जिस पर कम बात की जाती है। ये है अल्पसंख्यकों में भी अल्पसंख्यक यानी देश के ईसाई समुदाय के साथ सत्ता के पेचीदा होते जा रहे समीकरण। पिछले महीने भाजपा शासित छत्तीसगढ़ के दुर्ग पुलिस थाने में केरल मूल की दो ननों को हिरासत में ले लिया गया था। उन पर मानव तस्करी और जबरन धर्मांतरण का आरोप लगाया गया। वह आदिवासी बहुल क्षेत्र है और प्रथम दृष्टया आरोप बजरंग दल की ओर से लगाए गए थे। जिन लड़कियों की कथित तौर पर तस्करी की गई थी, उन्होंने ऑन रिकॉर्ड कहा कि वे स्वेच्छा से ननों के साथ गई थीं, क्योंकि वे पेशेवर नर्स के तौर पर प्रशिक्षण लेना चाहती थीं। उनके माता-पिता ने भी कहा कि उन्होंने बेटियों को रोजगार के बेहतर अवसर तलाशने के लिए जाने की अनुमति दी थी। इसके बावजूद पुलिस ने ननों को हिरासत में ले लिया। उन लोगों से मारपीट की भी खबरें आईं, जो ननों के समर्थन में आए थे। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भी ननों का समर्थन करने के बजाय पुलिस का ही बचाव किया। इस पर ताज्जुब होना भी नहीं चाहिए। 2023 के छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के दौरान मैं नारायणपुर गांव में आदिवासियों के एक समूह से मिला था। उन्होंने बताया था कि कैसे वे डर के साये में जीते हैं। उन्हें बहिष्कृत कर दिया गया था। वर्षों से आदिवासी ईसाइयों की 'घर वापसी' वनवासी कल्याण केंद्रों का कार्यक्रम रहा है, ताकि मिशनरियों द्वारा आदिवासियों

के ईसाई धर्मांतरण का जवाब दिया जा सके। लेकिन जिस तरह से धार्मिक स्वतंत्रता संवैधानिक अधिकार है, उसी तरह से किसी व्यक्ति द्वारा अपनी पसंद के धर्म को चुनना भी उसका हक है। बाबासाहेब आम्बेडकर और उनके समर्थकों द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने की घटना को भूलना नहीं चाहिए। लेकिन संवैधानिक अधिकारों की भी सिलेक्टिव व्याख्या की जा सकती है। यही कारण है कि जहां ईसाई धर्मांतरण को जबरन और आपराधिक माना जाता है, वहीं फिर से हिंदू धर्म में वापसी को स्वैच्छिक और भला समझा जाता है। विडम्बना यह रही कि विभिन्न दलों से जुड़े केरल के सांसदों की गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात और दखल की मांग के बाद ही ननों को जमानत मिल पाई। शाह ने तत्काल कार्रवाई की, क्योंकि ननों की गिरफ्तारी केरल में बड़ा राजनीतिक मुद्दा बन गई थी। ईसाइयों की बड़ी आबादी वाले केरल में अगले साल चुनाव होने हैं। केरल में पैठ बनाने के लिए तत्पर भाजपा वहां ईसाइयों को लुभाकर एक व्यापक हिंदू-ईसाई गठजोड़ बनाना चाहती है।ऐसे में आश्चर्य नहीं कि ननों की केरल वापसी पर उनके स्वागत के लिए पहुंचे लोगों में केरल के भाजपाध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर भी थे। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि ईसाइयों की बड़ी आबादी वाले अन्य राज्यों- जैसे गोवा में भाजपा शासन में है, वहीं मेघालय और नगालैंड में वह गठबंधन सहयोगी है। रोचक यह है कि प्रधानमंत्री मोदी कैथोलिक बिशप्स कॉन्फ्रेंस ऑफ इंडिया द्वारा पिछले साल दिसंबर में आयोजित क्रिसमस समारोह में शामिल हुए थे। वहां उन्होंने प्रभु यीशु की शिक्षाओं पर जोर दिया। प्रेम, सौहार्द और भाईचारे की हिमायत की। पिछले साल क्रिसमस पर भी उन्होंने ईसाई समुदाय के प्रमुख नेताओं को अपने घर चाय पर बुलाकर ईसा मसीह के मूल्यों पर बातचीत की। लेकिन इस सबके बावजूद धरातल पर ननों और मिशनरियों पर जबरन धर्मांतरण का आरोप लगाकर उनका उत्पीड़न किया जाता है। याद कीजिए, ओडिशा में 1999 में बजरंग दल नेता दारा सिंह द्वारा मिशनरी ग्राहम स्टेंस और उनके दो बच्चों की निर्मम हत्या। यह भी याद करें कि कैसे पुलिस ने हाल ही 80 वर्ष के फादर स्टैन स्वामी को नक्सलियों का हिमायती बताते हुए यूएपीए के तहत गिरफ्तार कर लिया था। अंततः अस्पताल में उनकी मौत तक हो गई। इस साल जून में सांगली से भाजपा विधायक गोपीचंद पडालकर ने भी कथित 'बलात् धर्मांतरण' में शामिल मिशनरियों पर हमला करने वालों के लिए 3 से 11 लाख रुपए तक के इनाम की पेशकश की थी। 'ओपन डोर्स' के अनुसार 2024 में भारत ईसाई उत्पीड़न के मामले में विशेष चिंता वाले देशों की सूची में 11वें स्थान पर था। पुनश्च : एक तरफ जहां ईसाई मिशनरियों पर धर्मांतरण के लिए शिक्षा को एक 'हथियार' के रूप में इस्तेमाल करने का आरोप लगाया जाता है, वहीं आपको यह नहीं बताया जाता कि भारत के कुछ बेहतरीन लोगों- जिनमें केंद्रीय मंत्री भी शामिल हैं- की पढ़ाई मिशनरी स्कूलों से ही हुई है। सच तो यह है कि बड़े पैमाने पर धर्मांतरण के प्रोपगंडा के बावजूद देश में ईसाई आबादी आज केवल 2.3फीसदी ही है। जबकि 1971 की जनगणना में ईसाई 2.6फीसदी थे। यानी आधिकारिक तौर पर उनकी आबादी कम ही हुई है। (ये लेखक के अपने विचार हैं राजदीप सरदेसाई)

अपने बच्चे की मानसिक, शारीरिक सुरक्षा के लिए जासूस बनें

किसी सिक्के की तरह समाज के भी दो पहलू होते हैं। अच्छा पहलू सराहना योग्य है, जबकि बुरा पहलू कभी-कभार डरावना होता है। सोशल मीडिया पर हाल ही एक ऐसी घटना वायरल हुई, जिससे आप कांप उठेंगे। जैसा आमतौर पर युवा कामकाजी माता-पिता वाले हर परिवार में होता है, इन माता-पिता ने भी 4 अगस्त को अपनी 15 महीने की छोटी बच्ची को नोएडा के सेक्टर 137 के उस आवासीय परिसर स्थित डे-केयर सेंटर में छोड़ा, जहां वे रहते थे। इस सेंटर में बच्ची रोज 2 घंटे रहती थी। उस दिन जब मां ने बच्ची को सेंटर से वापस लिया तो वो रो रही थी। मां ने देखा कि बच्ची की जांघ पर अजीब निशान थे। वह तत्काल उसे डॉक्टर के यहां लेकर गई, जिसने बताया कि ये काटने के निशान हैं। मां ने डे-केयर सेंटर वापस आकर सीसीटीवी फुटेज देखे। उसने क्या देखा कि बच्ची की देखभाल के लिए रखी गई एक टीन-एज अटेंडेंट कथित तौर पर उसे थप्पड़ मारती, मारपीट करती और फर्श पर पटकती दिख रही है। यहां तक कि बच्ची दर्द से चीख रही थी। 10.28 मिनट के वीडियो में दिखा कि अटेंडेंट बच्ची को गोद में लेकर सेंटर के एक कमरे का दरवाजा बंद कर रही है। पहले उसने फर्श पर पड़े हरे रंग के प्लास्टिक बैट को पैर से उठाया और कथित तौर पर बच्ची के सिर पर कई दफा मारा। फिर वो कमरे में घूम-घूमकर

बच्ची का सिर दीवार पर मार रही है और बाद में उसे फर्श पर पटक दिया। फुटेज में वो बच्ची को थप्पड़ मारती भी दिखी। महज 10 दिन पहले ही डे-केयर सेंटर जॉइन करने वाली इस अटेंडेंट को पुलिस ने पकड़कर स्वास्थ्य परीक्षण के लिए भेज दिया। हालांकि अधिकांश डे-केयर सेंटर बच्चों को सुरक्षित व देखभाल भरा माहौल देने की कोशिश करते हैं, फिर भी दुर्व्यवहार-अनदेखी के मामले होते हैं। अधिकांश माता-पिता भी शारीरिक-लैंगिक तौर पर नुकसान के प्रति तो सचेत होते हैं, लेकिन उन्हें कई दूसरे प्रकार के नुकसानों की निगरानी व आकलन का समय नहीं मिलता। ऐसे कुछ क्षतियां यहां पेश हैं। 1. भावनात्मक क्षतिः इसमें मौखिक दुर्व्यवहार, डराना-धमकाना या ऐसे कार्य शामिल हो सकते हैं, जो बच्चे के भावनात्मक स्वास्थ्य पर विपरीत असर डालते हैं। 2. उपेक्षाः इसमें पर्याप्त देखरेख, चिकित्सा जरूरतों की पूर्ति और सुरक्षित वातावरण बनाए रखने जैसी चीजों में विफलता शामिल हो सकती है। 3. लापरवाही भरी निगरानीः इसमें देखरेख की लापरवाही शामिल है, जिसके कारण दुर्घटना और चोट लग सकती है। 4. असुरक्षित वातावरणः इसमें विषाक्त चीजें, खेलने का असुरक्षित स्थान, गंदगी जैसे जोखिम हो सकते हैं। इन्हें कैसे पहचानें? ऊपर दिए गए मामले में बच्चे को आई चोटों को दुर्व्यवहार या अनदेखी के संभावित संकेतों के तौर पर देखा जा सकता है। इसके अलावा माता-पिता को बच्चे के व्यवहार में आए बदलावों जैसे डर,आक्रामकता, अलगाव के प्रति सावधान रहना चाहिए। ये भी ध्यान देना चाहिए कि बच्चे को सोने में तकलीफ या डरावने सपने तो नहीं आ रहे। हमेशा ध्यान रखें कि डे-केयर सेंटर जाने में बच्चा हिचक रहा है तो इसकी जांच भी गंभीरता से की जानी चाहिए कि क्या ऐसा लंबे समय वहां रुकने के कारण है या कारण कुछ और है? विकासात्मक मानकों पर बच्चा पिछड़ रहा है तो भी देखना चाहिए। माता-पिता और क्या कर सकते हैं? संभावित डे-केयर सेंटरों पर गहन रिसर्च करें। उनके लाइसेंस व कर्मचारियों की योग्यता जांचें।वास्तव में आपको केयरगिवर्स से खुला संवाद करना चाहिए, जिसमें अपनी हर चिंता बताएं। बिना बताए डे-केयर सेंटर जाएं। वहां के वातावरण-केयरगिवर्स व बच्चों के बीच हो रहे संवाद देखें। बच्चे के व्यवहार पर करीब से ध्यान दें, किसी भी उपेक्षा या दुर्व्यवहार के संकेत देखें। यदि डे-केयर के बारे में अच्छी फीलिंग नहीं है, तो मन की बात पर भरोसा कर वैकल्पिक व्यवस्था करना बेहतर होगा। फंडा यह है कि जब तक आपका बच्चा खुलकर अपनी बात कहने की उम्र तक ना पहुंच जाए, सहजता से उसके लिए एक जासूस जैसे बने रहें। एन. रघुरामन

विजन में छिपी ऑफिस की आजादी और सफलता के 'शोले'

उस 16 वर्षीय अभिनेता का, इतनी बड़ी फिल्म के सेट पर पहला दिन था। उसका पहला सीन यह था कि उसकी लाश घोड़े की पीठ पर लादकर गांव में लाई जाएगी। फिल्म डायरेक्टर ने एक्शन कहा और घोड़े पर कोई दूसरी लाश आई। हां, वह बॉडी डबल था। लड़का उदास हो गया। उसके बॉस यानी डायरेक्टर ने कहा, 'ऐसे शॉट बॉडी डबल करते हैं, तुम तो एक्टर हो।' इन शब्दों से उसका उत्साह बढ़ा। फिर आया असल सीन, जिसमें उसकी जरूरत थी। अब बॉडी डबल की जगह घोड़े पर उसे लिटाया गया। उसे अब खुद अमिताभ बच्चन और धर्मेंद्र उठाने वाले थे। इससे पहले कि डायरेक्टर रमेश सिप्पी एक्शन कहते, लड़के के कानों में सख्त आवाज आई, 'सचिन, शरीर जरा ढीला रखना, इससे तुम्हें उठाने में आसानी होगी।' तब उस लड़के यानी अभिनेता सचिन पिलगांवकर को एहसास हुआ कि वे सांस रोककर, अकड़कर लेटे थे और उनके चारों ओर संजीव कुमार, हेमा मालिनी और जया भादुड़ी जैसे महान कलाकार थे। तब पहली बार उन्हें समझ आया कि कहानी के मुताबिक मरने का भी अभिनय करना पड़ता है। आगे चलकर सचिन ने दो राष्ट्रीय पुरस्कार जीते।

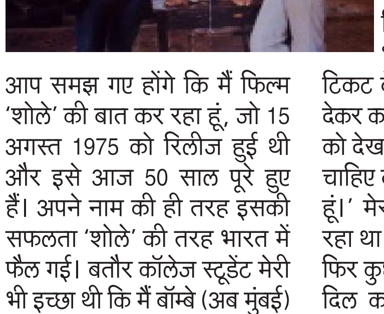

आप समझ गए होंगे कि मैं फिल्म 'शोले' की बात कर रहा हूं, जो 15 अगस्त 1975 को रिलीज हुई थी और इसे आज 50 साल पूरे हुए हैं। अपने नाम की ही तरह इसकी सफलता 'शोले' की तरह भारत में फैल गई। बतौर कॉलेज स्टूडेंट मेरी भी इच्छा थी कि मैं बॉम्बे (अब मुंबई) के मशहूर मराठा मंदिर सिनेमा हॉल में, 70 एमएम की स्क्रीन पर शोले देखूं। मैं वहां 10 रुपए लेकर पहुंचा, जो मैंने फिल्म के लिए ही अलग से रखे थे। तब टिकट 9 रुपए था। फिल्म हाउसफुल थी और मुझे वापस लौटना पड़ा। मैं अंधेरी में रहने वाले अपने अंकल के घर जाने के लिए, बॉम्बे सेंट्रल स्टेशन की ओर निकल पड़ा। तभी एक आदमी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा, 'मेरे पास 'शोले' का टिकट है, 50 रुपए में दूंगा।' मैं दुविधा में पड़ गया क्योंकि मेरी दूसरी जेब में 50 रुपए थे, जो मुंबई में मेरा अगले 6 दिन का खर्चा था। इसमें उच्च शिक्षा के लिए एक इंटरव्यू में जाना भी शामिल था। ब्लैक में टिकट बेच रहे उस आदमी ने जोर देकर कहा, 'जल्दी बोलो। इस फिल्म को देखना स्वर्ग जाने जैसा है। नहीं चाहिए तो मैं किसी और को दे देता हूं।' मेरा मिडिल क्लास मन कह रहा था, 'ऐसा मत कर, ये देखकर फिर कुछ नहीं देख पाएगा।' लेकिन दिल कह रहा था, 'बॉम्बे आकर 'शोले' नहीं देखी, तो क्या देखा?' मैंने मन की सुनी और वहां से चला गया। घर पहुंचकर सारी बात अंकल को बताई। उन्होंने सराहना करते हुए कहा, 'मुझे तुम पर गर्व है। करियर और जीवनशैली के विकल्पों में से चुनना हो तो हमेशा करियर चुनना।' यह बात अब भी कानों में गूंजती है। मैं युवाओं को भी सही विकल्प चुनने की सलाह देता हूं। तीन दिन बाद मेरे चाचा ने मुझे 'शोले' का टिकट उपहार में दिया, वह भी मराठा मंदिर का। उन्होंने अपने नेटवर्क की मदद से इसे हासिल किया था, किसी टिकट ब्लैक करने वाले से नहीं। सचिन के लिए, रमेश सिप्पी (78) और मेरे लिए मेरे अंकल (86), हमारे गुरु हैं। उन्होंने दो चीजें सिखाईं : अपने काम में अपना सर्वश्रेष्ठ दें और समर्पित रहें। साथ ही, अपने बॉस या सीनियर्स की बात जरूर सुनें। फंडा यह है कि अगर कार्यस्थल में बेहतरीन प्रदर्शन करना है, तो कंपनी या फिर मालिक के विजन को आगे बढ़ाने की कला सीखें। इसमें महारत हासिल करने के लिए दो गुण जरूरी हैं - अपना 100 प्रतिशत देना और समर्पण का भाव। एन. रघुरामन।

'घर से उठा रही पुलिस', दिल्ली-एनसीआर छोड़ रहे बंगाली मजदूरों को,बोले-कागज हैं, फिर भी हमें बांग्लादेशी बता रहे

नोएडा। 'मैं रात 10:30 बजे ड्यूटी से लौटा था। खाना खा रहा था, तभी पुलिसवाले आए और मुझसे आईडी प्रूफ मांगा। मैंने आधार कार्ड दिखा दिया, इसके बावजूद मुझे गाड़ी में बैठाकर ले गए। पूरी रात थाने में रखा। फिर सेक्टर-10 के होल्डिंग सेंटर ले गए। वहां 150 से ज्यादा लोग पहले से थे।' 'मेरा घर पश्चिम बंगाल के मालदा जिले में है। वहां के चांचल थाने की पुलिस ने मेरे गांव जाकर वेरिफाई किया। इसके बाद 23 जुलाई को मुझे छोड़ा गया। 6 दिन मैं सेंटर में ही रहा।' नूर आलम कुछ दिन पहले तक गुरुग्राम के सेक्टर-37 में रहते थे। जिंदगी ठीक चल रही थी। एक कंपनी में डिलीवरी एजेंट का काम करते थे। अचानक सब बदला और नूर को गुरुग्राम छोड़ना पड़ा। वे अब मालदा लौट चुके हैं। इस साल 2 मई को गृह मंत्रालय के आदेश के बाद देशभर में अवैध बांग्लादेशियों और रोहिंग्या की पहचान के लिए तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत गुरुग्राम पुलिस ने बांग्ला बोलने वाले कई लोगों को शक के आधार पर हिरासत में ले लिया। इन लोगों को 'होल्डिंग सेंटर्स' में रखा गया। हालांकि, वेरिफिकेशन के बाद कई लोगों को छोड़ भी दिया गया।इसके बाद प्रवासी मजदूरों ने पश्चिम बंगाल में अपने घर लौटना शुरू कर दिया है। इनमें कई तो 25 साल से गुरुग्राम में रह रहे हैं। और ये सिर्फ गुरुग्राम में नहीं, दिल्ली-एनसीआर के अलग-अलग शहरों में हो रहा है। इस मसले पर गुरुग्राम और नोएडा में पश्चिम बंगाल से आए मजदूरों से बात की।नूर कहते हैं, 'गुरुग्राम आए मुझे एक साल हुआ था। पुलिस लगातार आ रही थी। दिक्कत होने लगी, तो मैं वापस मालदा आ गया। गुरुग्राम में 15-20 हजार रुपए महीना कमा लेता था। अब ये मामला ठंडा नहीं होता, तब तक वापस नहीं जाऊंगा। यहीं खेती करूंगा।'पश्चिम बंगाल के नदिया जिले के रहने वाले अजहर काम की तलाश में 15 दिन पहले ही गुरुग्राम आए थे। यहां देखा कि पुलिस पश्चिम बंगाल से आए लोगों के डॉक्यूमेंट चेक कर रही है। इस वजह से उनकी तरह काम करने आए लोग घर लौट रहे हैं। यह देख अजहर ने भी वापस जाने का मन बना लिया। गुरुग्राम के सेक्टर-53 के सरस्वती कुंज इलाके में प्रवासी बंगाली मजदूरों की बस्तियां हैं। यहीं एक बस्ती में अजहर परिवार के साथ रह रहे थे। अब एक प्राइवेट बस से बाकी लोगों के साथ वापस जा रहे हैं। अजहर कहते हैं, 'हमारे पास सारे डॉक्यूमेंट हैं। आधार कार्ड, वोटर कार्ड, राशन कार्ड सब है। फिर हमें क्यों पीट रहे हैं। डॉक्यूमेंट दिखाते हैं, तब भी पीटते हैं। हम बांग्लादेशी नहीं हैं। फिर भी जब उनका (पुलिस) मन करता है, झुग्गी में घुस आते हैं।अजहर कहते हैं, 'मेरे पास सारे डॉक्यूमेंट हैं। अगर मैं बांग्लादेशी हूं, तो डॉक्यूमेंट कैसे हैं, मेरे पास जमीन के कागज कैसे हैं।' 200 घरों की बस्ती खाली, सिर्फ 20 घरों में लोग। अजहर से बात करके हम बस्ती में आगे बढ़े।

यहां ज्यादातर घर खाली नजर आए। स्थानीय लोगों ने बताया कि यहां प्रवासी मजदूरों के करीब 200 घर हैं। इनमें से सिर्फ 20 घरों में लोग रह रहे हैं। बाकी बीते 15 दिन में पश्चिम बंगाल लौट चुके हैं। रीना बीबी सरस्वती कुंज की दूसरी बस्ती में 15 साल से रह रही हैं। वे आसपास की सोसाइटी में खाना बनाने का काम करती हैं। 20 दिन पहले उनकी मौसी के बेटे को पुलिस ने पकड़ लिया था। रीना बताती हैं, 'पुलिस उसका फोन चेक कर रही थी। फिर मौसी ने थाने जाकर डॉक्यूमेंट दिखाए और उसे वापस लेकर आईं। पुलिस ने छोड़ते हुए कहा कि ये यहां दिखना नहीं चाहिए, इसे गांव भेज दो। पुलिस के डर से वो वापस चला गया। पुलिस ने मौसी से भी कहा कि तुम बांग्लादेशी दिखती हो।' मुर्शिदाबाद की रहने वाली रीना आगे कहती हैं, 'मेरे दोनों भाई परिवार लेकर वापस घर चले गए। यहां सब घर छोड़कर काम करने आए थे। सिर्फ बंगाली होने की वजह से ये दिक्कत हो रही है। हाल में मेरे पति सिकंदरपुर में नया ऑटो खरीदने गए थे। शोरूम पर बोला गया कि बंगाली लोगों को नहीं देंगे। उन्होंने आईडी प्रूफ दिखाया, इसके बावजूद ऐसा किया गया।'गुरुग्राम के सेक्टर-51 के समसपुर गांव में बंगाली प्रवासियों की बस्ती है। यहां से भी बीते दिनों कई लोग बंगाल लौटे हैं। नदिया जिले के मुकुल हसन शेख 25 साल से गुरुग्राम में रह रहे हैं। कबाड़ का काम करते हैं। मुकुल बताते हैं, 'पुलिस अचानक किसी को भी उठा रही है। उनके घर वाले परेशान होते रहते हैं। समसपुर के इस इलाके से 90फीसदी लोग बंगाल लौट चुके हैं। वही लोग बचे हैं, जिनके पैसे फंसे हैं या जिनका कोई काम या बिजनेस है।'गुरुग्राम के सेक्टर-37 में रह रहे मुकुल हुसैन परिवार के साथ मालदा लौटे हैं। 18 जुलाई को पुलिस ने उन्हें भी हिरासत में लिया था। कार वॉशिंग का काम करने वाले मुकुल कहते हैं, 'सारे डॉक्यूमेंट दिखाने के बाद भी मुझे घर से पकड़कर ले गए थे। चार दिन बाद पुलिस ने छोड़ा।' '29 जुलाई को मैं परिवार के साथ लौट आया। वहां ज्यादा पैसे कमाता था। यहां दूसरे के खेत में दिहाड़ी मजदूरी कर रहा हूं। अभी गुरुग्राम लौटने के बारे में नहीं सोचा है।'गुरुग्राम के बाद हम नोएडा पहुंचे। यहां पुलिस ने अब तक किसी को हिरासत में नहीं लिया है। पश्चिम बंगाल के कुछ प्रवासी लोगों ने नाम न बताते हुए कहा कि पुलिस दो-तीन हफ्ते पहले आई थी और डॉक्यूमेंट्स मांगकर पूछताछ कर रही थी। नोएडा के सर्फाबाद गांव की बस्तियों में प्रवासी बंगाली रहते हैं। इनमें से एक बस्ती में कई घरों में ताले लगे मिले। पूछने पर यहां के लोगों ने बताया कि कुछ लोग काम करने गए हैं। कुछ पश्चिम बंगाल चले गए।

लोकसभा में ऑनलाइन गेमिंग पर बैन लगाने वाला बिल पेश,3 साल जेल और रु1 करोड़ जुर्माने का प्रावधान,विपक्ष का वोटर वेरिफिकेशन पर हंगामा

नयी दिल्ली। संसद में विपक्ष का वोटर वेरिफिकेशन और वोट चोरी पर विरोध जारी है। इसी दौरान लोकसभा में बुधवार को केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने ऑनलाइन गेमिंग प्रमोशन और रेगुलेशन बिल, 2025 पेश किया। यह ऑनलाइन मनी गेम्स पर पूरी तरह से बैन लगाएगा। बिल में ऑनलाइन मनी गेमिंग सेवाएं देने वालों को 3 साल की कैद या 1 करोड़ का जुर्माना या दोनों की सजा का प्रावधान है। सरकार पहले ही ऑनलाइन गेम्स में जीतने पर 30 पर्सेंट इनकम टैक्स और 1 अक्टूबर, 2023 से 28 पर्सेंट जीएसटी लगा चुकी है। लोकसभा में 2 बजे दोबारा कार्यवाही शुरू होने पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संघ राज्यक्षेत्र शासन (संशोधन) बिल 2025, जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) बिल 2025 और संविधान (130वां संशोधन) बिल 2025 पेश किए। विपक्ष ने सभी बिलों पर चर्चा से इनकार किया। विपक्ष के हंगामे

के चलते लोकसभा को 3 बजे तक स्थगित कर दिया गया।लोकसभा में केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने ऑनलाइन गेमिंग प्रमोशन और रेगुलेशन बिल, 2025 पेश किया। एएनआई सूत्रों के मुताबिक, बिल में गेम प्रोवाइडर्स, विज्ञापन करने वालों, प्रमोटरों और आर्थिक रूप से समर्थन देने वालों के लिए सजा का प्रावधान है। हालांकि, ऑनलाइन गेम खेलने वालों और पीड़ितों के लिए कोई सजा नहीं होगी। विपक्ष ने बिल पर चर्चा से इनकार किया। आरएसपी सांसद एनके प्रेमचंद्रन ने सदन की कार्यवाही व्यवस्थित न होने का हवाला देते हुए बोलने से इनकार किया। कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने कहा कि सदन में पहले बिहार एसआईआर SIR पर चर्चा होनी चाहिए। संसद का मानसून सत्र 21 जुलाई से 21 अगस्त तक यानी कुल 32 दिन चलेगा। इस दौरान 18 बैठकें होंगी, 15 से ज्यादा बिल पेश होंगे। स्वतंत्रता दिवस समारोह के कारण 13-14 अगस्त को संसद की कार्यवाही नहीं होगी। केंद्र सरकार मानसून सत्र में 8 नए बिल पेश करेगी, जबकि 7 लंबित बिलों पर चर्चा होगी। इनमें मणिपुर जीएसटी संशोधन बिल 2025, इनकम टैक्स बिल, नेशनल स्पोर्ट्स गवर्नेंस बिल जैसे विधेयक शामिल हैं।लोकसभा और राज्यसभा में वोटर वेरिफिकेशन और वोट चोरी को लेकर मंगलवार को भी विपक्ष ने हंगामा किया। सफल स्पेस मिशन पर चर्चा के दौरान लोकसभा में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कहा कि कांग्रेस ने सत्ता में रहते हुए अमेरिका, चीन और पाकिस्तान के कहने पर देश के स्पेस मिशन को कमजोर किया।

भारतीय वायुसेना को मिलेंगे 97 एलसीए मार्क 1ए फाइटर जेट,रु 62 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट को मंजूरी,एचएएल को एयरक्राफ्ट्स का ऑर्डर मिलने की उम्मीद

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार ने मंगलवार को

भारतीय वायुसेना के लिए 97 एलसीए मार्क 1ए फाइटर जेट खरीदने के लिए रु 62 हजार करोड़ के प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी। रक्षा सूत्रों ने न्यूज एजेंसी एएनआई को बताया कि एक हाई लेवल मीटिंग में फाइटर जेट की खरीद को अंतिम मंजूरी दे दी गई। इससे हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के लिए इन एयरक्राफ्ट्स को बनाने के लिए ऑर्डर मिलने का रास्ता भी लगभग साफ हो गया है, क्योंकि मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा देते हुए, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार एचएएल के सुधार पर जोर दे रहे हैं। मोदी सरकार के दौरान, एचएएल को सभी तरह के स्वदेशी लड़ाकू विमान, हेलिकॉप्टर और उनके इंजन बनाने के ऑर्डर मिले हैं। एचएएल को एलसीए मार्क 1ए फाइटर जेट के लिए यह दूसरा ऑर्डर होगा। इससे पहले सरकार एचएएल को 83 एयरक्राफ्ट्स बनाने का ऑर्डर दे चुकी है। एलसीए मार्क 1ए, तेजस एयरक्राफ्ट का एडवांस वर्जन है। इसमें अपग्रेडेड एवियॉनिक्स और रडार सिस्टम लगे हैं। एलसीए मार्क-1ए के 65फीसदी से ज्यादा उपकरण भारत में बने हैं। तेजस को भी एचएएल ने डेवलप किया है। यह सिंगल इंजन वाला हल्का लड़ाकू विमान है। 83 एलसीए मार्क 1ए देने के लिए एचएएल के पास 2028 तक का समय केंद्र सरकार ने साल 2021 में एचएएल को भारतीय वायुसेना के लिए 83 एलसीए मार्क-1ए बनाने के लिए 46,898 करोड़ रुपए का कॉन्ट्रैक्ट दिया था। कंपनी के पास 83 एयरक्राफ्ट्स की डिलीवरी करने के लिए 2028 तक का समय है। एचएएल ने 12 फरवरी को कहा था कि हम जल्द ही वायुसेना को तेजस की डिलीवरी शुरू कर देंगे। एचएएल के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर डीके सुनील ने कहा कि डिलीवरी में देरी के पीछे इंडस्ट्री को जिम्मेदार ठहराया जा रहा था, लेकिन यह देरी तकनीकी खामी की वजह से हुई है। अब इसे दूर कर लिया गया है। रक्षा सूत्रों ने बताया कि 97 एयरक्राफ्ट्स के नए प्रोजेक्ट से भारतीय वायुसेना को अपने मिग-21 विमानों के बेड़े को बदलने में मदद मिलेगी। भारतीय वायुसेना में 62 साल तक सर्विस देने के बाद मिग-21 लड़ाकू विमान 19 सितंबर को रिटायर होगा। एलसीए मार्क-1ए विमान मिग-21, मिग-23 और मिग-27 को रिप्लेस करेगा। एलसीए मार्क-1ए को एयरोस्पेस में भारत की आत्मनिर्भरता और मेक-इन-इंडिया की तरफ बड़ा कदम माना जा रहा है। इसे पाकिस्तान बॉर्डर के पास राजस्थान के बीकानेर स्थित नाल एयरबेस पर तैनात करने की योजना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 नवंबर 2022 को बेंगलुरु में तेजस फाइटर प्लेन में उड़ान भरी थी। किसी भारतीय प्रधानमंत्री की फाइटर प्लेन में यह पहली उड़ान थी। तेजस में उड़ान भरने से पहले मोदी बेंगलुरु स्थित हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) भी पहुंचे थे।

गिरफ्तारी या 30 दिन हिरासत पर पीएम-सीएम,मंत्री की कुर्सी जाएगी:गंभीर केस में होगी कार्रवाई, लोकसभा में पेश 3 बिल

नयी दिल्ली। केंद्र सरकार गंभीर आपराधिक केस में गिरफ्तार होने पर प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री या मंत्री को पद से हटाने का कानून बनाने जा रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह बुधवार को इसके लिए संसद में तीन बिल पेश करेंगे। इन बिलों में प्रावधान हैं कि अगर प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या मंत्री ऐसे गंभीर अपराधों में गिरफ्तार किए जाते हैं, जिनमें कम से कम पांच साल की जेल हो सकती है और उन्हें लगातार 30 दिन हिरासत में रखा जाता है, तो 31वें दिन उन्हें पद से हटा दिया जाएगा। ये बिल हैं- गवर्नमेंट ऑफ यूनियन टेरिटरीज (संशोधन) बिल 2025, 130वां संविधान संशोधन बिल 2025 और जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) बिल 2025। अमित शाह इन तीनों बिलों को संसद की संयुक्त समिति को भेजने के लिए लोकसभा में प्रस्ताव भी पेश करेंगे।

दिल्ली के सीएम केजरीवाल ने 6 महीने और तमिलनाडु के मंत्री वी सेंथिल बालाजी ने 241 दिनों तक हिरासत और जेल में रहने के बाद अपने पद से इस्तीफा नहीं दिया था। केजरीवाल तो पद पर रहते गिरफ्तार होने वाले पहले सीएम थे। जानिए तीनों बिल के बारे में- 1. गवर्नमेंट ऑफ यूनियन टेरिटरीज (संशोधन) बिल 2025 केंद्र सरकार के मुताबिक, अभी केंद्र शासित प्रदेशों में गवर्नमेंट ऑफ यूनियन टेरिटरीज एक्ट, 1963 (1963 का 20) के तहत गंभीर आपराधिक आरोपों के कारण गिरफ्तार और हिरासत में लिए गए मुख्यमंत्री या मंत्री को हटाने का कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए, ऐसे मामलों में मुख्यमंत्री या मंत्री को हटाने के लिए एक कानूनी ढांचा तैयार करने के लिए गवर्नमेंट ऑफ यूनियन टेरिटरीज एक्ट, 1963 की धारा 45 में संशोधन की आवश्यकता है। 2. 130वां संविधान संशोधन बिल 2025 केंद्र ने इस बिल को लेकर बताया कि संविधान में किसी ऐसे मंत्री को हटाने का कोई प्रावधान नहीं है जिसे गंभीर आपराधिक आरोपों के कारण गिरफ्तार किया गया हो और हिरासत में लिया गया हो। इसलिए ऐसे मामलों में प्रधानमंत्री या केंद्रीय मंत्रिपरिषद के किसी मंत्री और राज्यों या नेशनल कैपिटल टेरिटरी दिल्ली के मुख्यमंत्री या मंत्रिपरिषद के किसी मंत्री को हटाने के लिए एक कानूनी ढांचा तैयार करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 75, 164 और 239एए में संशोधन की जरूरत है। 3. जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन (संशोधन) बिल 2025 जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 (2019 का 34) के तहत गंभीर आपराधिक आरोपों के कारण गिरफ्तार और हिरासत में लिए गए मुख्यमंत्री या मंत्री को हटाने का कोई प्रावधान नहीं है। जम्मू और कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 की धारा 54 में संशोधन के बाद गंभीर आपराधिक केस में गिरफ्तार और हिरासत में लिए गए मुख्यमंत्री या मंत्री को 30 दिन में हटाने का प्रावधान होगा। ऑनलाइन गेमिंग पर बैन लगाने वाला बिल भी पेश होगा केंद्र सरकार लोकसभा में आज ऑनलाइन गेमिंग पर बैन लगाने वाला बिल भी पेश कर सकती है। कैबिनेट ने मंगलवार को ऑनलाइन गेमिंग बिल को मंजूरी दी है। इसमें ऑनलाइन मनी गेमिंग, विज्ञापन, खेल के लिए उकसाने वाले को सजा-जुर्माना या दोनों हो सकता है। तीन साल तक कैद या 1 करोड़ रुपए तक का जुर्माना, या दोनों हो सकते हैं।केंद्र सरकार का मानना है कि ये तीनों बिल लोकतंत्र और सुशासन की साख मजबूत करेंगे। अब तक, संविधान के तहत, केवल दोषी ठहराए गए जनप्रतिनिधियों को ही पद से हटाया जा सकता था। मौजूदा कानूनों में संवैधानिक पद पर बैठे नेताओं को हटाने को लेकर स्पष्ट व्यवस्था नहीं है। इसको लेकर कानूनी और सियासी विवाद होते रहे हैं। दिल्ली के तत्कालीन सीएम अरविंद केजरीवाल शराब नीति केस केस में ईडी की गिरफ्तारी के बाद भी पद पर थे। जमानत के बाद उन्होंने इस्तीफा दिया था।

इधर, तमिलनाडु के मंत्री सेंथिल बालाजी भी 241 दिन जेल में रहते हुए मंत्री रहे थे, बालाजी को मेट्रोपॉलिटन ट्रांसपोर्ट कॉर्पोरेशन में नौकरी के बदले नकद घोटाले के आरोपों में प्रवर्तन निदेशालय ने जून 2023 में मनी लॉन्ड्रिंग केस में गिरफ्तार किया था। इसके बाद भी वह 13 फरवरी 2024 तक पद पर बने रहे थे। गिरफ्तारी से पहले वे बिजली, आबकारी और मद्य निषेध विभाग संभाल रहे थे। गिरफ्तारी के बाद मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने उन्हें 'बिना विभाग वाला मंत्री' बनाए रखा और उनके विभाग अन्य सहयोगियों को सौंप दिए। शाह आज जो तीन बिल पेश करेंगे, उनमें आपराधिक आरोपों के प्रकार को लेकर कोई जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन अपराध के लिए कम से कम पांच साल की जेल की सजा होनी चाहिए। इसमें हत्या और यहां तक कि बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार जैसे गंभीर अपराध भी शामिल होंगे।

मुंबई में लगातार तीसरे दिन स्कूल-कॉलेज, दफ्तर बंद,34 ट्रेनें कैंसिल, मोनोरेल से यात्रियों का रेस्क्यू

मुंबई। तेज बारिश का बुधवार को तीसरा दिन है। 24 घंटे में यहां 300एमएम बारिश हुई। लगातार

तीसरे दिन मुंबई में स्कूल-कॉलेज और गवर्नमेंट और सेमी-गवर्नमेंट ऑफिस बंद रहे। मुंबई लोकल की 34 ट्रेनें (17 जोड़ी) कैंसिल हैं। 250 से ज्यादा फ्लाइट्स पर भी असर पड़ा है। मंगलवार शाम मुंबई में 2 मोनोरेल से करीब 800 लोगों को रेस्क्यू किया गया। मैसूर कॉलोनी रेलवे स्टेशन के पास शाम 6 बजे एक मोनोरल एलिवेटेड ट्रैक पर अटक गई थी। इसमें मौजूद 582 यात्रियों को विंडो तोड़कर क्रेन की मदद से करीब 40-50 फीट की ऊंचाई से रेस्क्यू किया गया। श्श्रेि ने बताया कि भीड़ बढ़ने की वजह से ऐसा हुआ था। रेल की मूल वजन क्षमता 104 टन है, जो कल 109 टन हो गई थी। 5 टन ज्यादा वजन (यात्रियों का) हो गया था। वहीं, आचार्य अत्रे और वडाला मोनो रेल स्टेशन से भी 200 लोगों को निकाला गया था। रेल में सवार यात्री सागर ने कहा- बिजली और एसी बंद होने से डिब्बों में घुटन होने लगी थी। बाहर बारिश हो रही थी और अंधेरा बढ़ रहा था। सबसे डरावना पल तब था, जब ट्रेन खतरनाक ढंग से झुक गई थी, हम दुआ कर रहे थे कि जिंदा बाहर निकल जाएं।इधर,यूपी के फर्रुखाबाद में गंगा-रामगंगा नदी खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। यहां 100 से ज्यादा गांव बाढ़ की चपेट में हैं। कानपुर में गंगा का जलस्तर डेंजर लेवल से सिर्फ 11सेमी दूर है। पिछले 24 घंटे में गंगा बैराज में 4सेमी पानी बढ़ा। यहां जलस्तर 114.79 मीटर तक पहुंचा है। 5 गांव में बाढ़ का पानी घुसा है।मौसम विभाग ने बुधवार को महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा में बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। इनके अलावा तेलंगाना, बिहार में ऑरेंज अलर्ट और राजस्थान, मध्य प्रदेश, हिमाचल, उत्तराखंड समेत 18 राज्यों में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। मुंबई सिटी के अलावा उपनगर ठाणे, चंद्रपुर, रायगढ़ और रत्नागिरी में रेड अलर्ट जारी किया गया है। अगले कुछ दिनों तक महाराष्ट्र में तेज बारिश होने की संभावना है।

एनसीईआरटी ने ऑपरेशन सिंदूर पर स्पेशल मॉड्यूल जारी किया:क्लास 3-12 के सप्लीमेंट्री मटेरियल में शामिल; लिखा- पहलगाम हमला पाकिस्तानी सेना-नेताओं के आदेश पर हुआ

नयी दिल्ली। ऑपरेशन सिंदूर पर एनसीईआरटी (नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग) ने दो स्पेशल मॉड्यूल जारी किए हैं। इन्हें क्लास 3 से 12 तक के छात्रों के लिए सप्लीमेंट्री मटेरियल के तौर पर शामिल किया गया है। मॉड्यूल में बताया गया है कि पाकिस्तान भले ही पहलगाम आतंकी हमले में किसी भी तरह से शामिल होने से इनकार करता है, लेकिन यह हमला पाकिस्तान की सैन्य और राजनीतिक लीडरशिप के सीधे आदेश पर हुआ था। ये मॉड्यूल स्कूली बच्चों के बीच भारत की सैन्य शक्ति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के मकसद से बनाए गए हैं। क्लास 3 से 8 के लिए मॉड्यूल का टाइटल 'ऑपरेशन सिंदूर-वीरता की गाथा' और 9 से 12 तक के लिए मॉड्यूल का टाइटल 'ऑपरेशन सिंदूर- सम्मान और बहादुरी का मिशन' है। एनसीईआरटी के स्पेशल मॉड्यूल रेगुलर कोर्स का हिस्सा नहीं होते। इसे कोई खास टॉपिक बच?चों को समझाने के लिए सप्लीमेंट्री मटेरियल के तौर पर तैयार किया जाता है। इसे पोस्टर्स, चर्चाओं और वाद-विवाद के जरिए बच्चों को पढ़ाया

जाता है। मॉड्यूल में लिखा है कि ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ मिलिट्री ऑपरेशन नहीं, बल्कि शांति की रक्षा और पहलगाम हमले में मारे गए लोगों के सम्मान का वादा है। 'ऑपरेशन सिंदूर' नाम मृतकों की विधवाओं के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में चुना गया था। एक मॉड्यूल में कहा गया है, 'भारत ने 7 मई, 2025 को पाकिस्तान और पाक अधिकृत जम्मू-कश्मीर में नौ आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाकर मिसाइलें और हवाई हमले किए। 9 में से सात टारगेट को भारतीय सेना ने नष्ट कर दिया। भारतीय वायु सेना ने मुरीदके और बहावलपुर में आतंकवादी ठिकानों को नष्ट किया, जो लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद के सेंटर हैं।' मॉड्यूल में यह भी बताया गया है कि ऑपरेशन सिंदूर जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा, हिजबुल मुजाहिदीन और पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई को रोकने का भारत का तरीका भी था। एनसीईआरटी ने सरकार के इस रुख को दोहराया है कि भारत ने यह सुनिश्चित किया कि किसी भी नागरिक को नुकसान न पहुंचे। कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 लोग मारे गए थे। इसके जवाब में भारत ने 7 मई को पीओके और पाकिस्तान की टेरर साइट्स को टारगेट किया था। इसमें 100 से अधिक आतंकी मारे गए थे। इस कार्रवाई को ऑपरेशन सिंदूर नाम दिया गया था। इसके बाद दोनों देशों के बीच 10 मई तक संघर्ष की स्थिति बन गई थी।

राजीव गांधी की 81वीं जयंती, संसद में श्रद्धांजलि दी गई,राहुल ने फोटो शेयर कर लिखा-पापा के सपने पूरा करना मेरा लक्ष्य; प्रियंका-खड़गे वीर भूमि पहुंचे

नयी दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की आज 81वीं जयंती है। इस मौके पर संसद में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी समेत कई सांसद शामिल हुए। इधर, कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे दिल्ली के वीर भूमि पहुंचे और उन्हें श्रद्धांजलि दी। कांग्रेस पूर्व पीएम के जन्मदिवस को दिवस के रूप में मना रही है। राहुल गांधी ने 'एक्स' पर पापा राजीव गांधी की फोटो शेयर कर लिखा- एक ऐसा भारत जहां हर नागरिक को सम्मान मिले, जहां सद्भावना हो, लोकतंत्र और संविधान से देश मजबूती से खड़ा हो। पापा, आपके देखे इस सपने को पूरा करना ही मेरा जीवन लक्ष्य है। पीएम मोदी ने कहा- आज उनकी जयंती पर, पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी को मेरी श्रद्धांजलि। प्रियंका ने एक्स पर लिखा-'विरासत में आप से करुणा, प्रेम और देशभक्ति का धर्म मिला। हम दोनों हमेशा के लिए ये धर्म निभायेंगे। न कोई तोड़ पाएगा, न कोई रोक पाएगा, न कभी हमारे कदम लड़खड़ायेंगे।'मल्लिकार्जुन खड़गे ने 'एक्स' पर लिखा- राजीव गांधी जी ने साहस के साथ परंपरागत रास्तों से हटकर नई सोच और इनोवेटिव योजनाओं को अपनाया, ताकि भारत 21वीं सदी के लिए तैयार हो सके। देश को आधुनिकता और उदारीकरण की ओर ले जाने वाले, सूचना, सम्पर्क व कम्प्यूटर क्रांति के प्रणेता, पंचायती राज व्यवस्था को मजबूती देने वाले तथा देश की नीति के लिए प्राण गंवाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी की जयंती पर कोटिश नमन!

छोटे चॉल में रहे, काम मांगने पर संगीतकार ने फेंकी डायरी,समीर के गाने पर नुसरत फतेह रोए, सबसे ज्यादा सॉन्ग लिखने का वर्ल्ड रिकॉर्ड

मुंबई। आप चाहें मिलेनियल हों, जेनरेशन ज़ी हों, जेनरेशन अल्फा या नई जेनरेशन बीटा हों...एक चीज जो इन सभी को एक-दूसरे से जोड़ती है, वो समीर अनजान के गाने हैं। तीन दशक से वो अपने गानों के जरिए प्यार, दोस्ती, हार्टब्रेक से लेकर पार्टी मोड तक हर मौके और हर फीलिंग के लिए अल्फाज लिख रहे हैं। उनके सपने बहुत छोटे-छोटे थे, लेकिन कलम की जादूगरी ने उन्हें ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया, जहां से वो पीछे देखते हैं तो खुद पर यकीन नहीं होता। कभी शब्दों का ऐसा जाल बुना कि पाकिस्तानी गायक नुसरत फतेह अली खान भी गाते वक्त रो पड़े। एक लाइन के लिए उन्हें 150 टेक लेने पड़े थे। समीर की चाहत कभी रेडियो पर अपना एक गाना सुनने की थी, लेकिन आज उनके नाम चार हजार से अधिक गाने लिखने का वर्ल्ड रिकॉर्ड है। कभी समीर गलियों में अपना गाना बजते सुनना चाहते थे, पिछले तीन दशक से उनके गाने न सिर्फ बज रहे हैं बल्कि अब उनके रीमिक्स भी बन रहे हैं। अपनी सफलता को वह भगवान की नेमत मानते हैं।मैं बनारस से हूं, लेकिन मेरी परवरिश बनारस शहर में नहीं हुई

है। मैं बनारस के एक गांव ओदार में पला-बढ़ा हूं। वो गांव तो अब सपनों में ही दिखता है, हकीकत में कुछ वैसा नहीं है। अब गांव जाता हूं तो रोना आता है। गांव की वो चौपाल, कच्चे मकान, महुआ-नीम के पेड़, लोग, संकरी गलियां वो सब नेस्तनाबूद हो गए। गांव का बुरी तरह से शहरीकरण हो गया है। अब मैं सिर्फ इसलिए जाता हूं क्योंकि वो मेरी मातृभूमि है और वहां से मेरी यादें जुड़ी हैं, लेकिन गांव को देखकर बहुत दुख होता है। हम भाग्यशाली थे कि सही मायनों में गांव कहते किसको है, वो हमने जिया था। तालाब, पोखर, बगीचा, आती-पाती क्या होता है, आने वाली पीढ़ी को इन लफ्जों का मतलब भी पता नहीं होगा।खैर, पिताजी की तमन्ना नहीं थी कि मैं कभी गीतकार बनूं। वो कहते थे कुछ भी करना, गीतकार बनने की कोशिश मत करना। इस वजह से उन्होंने मुझे लिटरेचर नहीं पढ़ने दिया और मुझे बीएचयू से एमकॉम कराया। वो मेरे गाने लिखने के बिल्कुल खिलाफ थे। हालांकि मेरे लिखने का शौक अपने चरम पर था। मैं सातवीं क्लास में था, जब मुझे लिखने का शौक जगा। उसी उम्र से मैंने नोट बनाने शुरू कर दिए थे। फिर दोस्तों का एक ग्रुप बन गया, जो शायरी करते थे। फिर हम दोस्तों ने एक छोटा सा रूम लेकर उसमें गोष्ठी शुरू की। यहां से बात ऑर्केस्ट्रा पार्टी तक पहुंची। फिर हमने एक ऑर्केस्ट्रा पार्टी शुरू कर दी, जिसका नाम मनोरंजन ऑर्केस्ट्रा पार्टी था। इसकी एंकरिंग मैं करता था और शेरो-शायरी सुनता-सुनाता था।उन दिनों बनारस में गुप्ता संगीतालय के नाम से एक मशहूर संगीतालय था। वहां, जाकर मैंने बैंजो बजाना सीख लिया। ऐसे में मुझे थोड़ी बहुत संगीत की भी जानकारी हो गई और मैं मुशायरों में जाने लगा। उत्तर प्रदेश का कोई भी ऐसा जिला नहीं होगा, जहां मैंने मुशायरा न किया हो। ये सब करते-करते मैं रेडियो तक पहुंच गया, लेकिन तब तक मेरे दिमाग में कभी नहीं आया कि मुझे गीतकार बनना है। मैं बस चीजों को एंजॉय कर रहा था। मैं पढ़ाई के साथ ट्यूशन भी पढ़ाता था। मैं पत्रकारिता भी कर रहा था। इन सबके बीच मैंने सेंट्रल बैंक की नौकरी भी जॉइन कर ली और दो दिन के लिए काम पर भी गया। जब मैं दूसरे दिन अपनी कुर्सी पर बैठ रहा था, तब मेरे अंदर से आवाज आई कि ये तुम्हारी जगह नहीं है। तुम गलत फैसला कर रहे हो। दिल की बात सुनो और यहां से निकलो। उस जमाने में बैंक की नौकरी मिलना, इंडियन सिविल सर्विस-पीसीएस से कम बड़ी बात नहीं होती थी। मैंने बैंक की नौकरी छोड़ दी। मेरा पूरा परिवार मेरे ऊपर निर्भर था। मेरे पिताजी मुंबई में स्ट्रगल कर रहे थे। दादाजी की नौकरी छूट गई थी। ऐसे में जब मेरी नौकरी लगी तो सबको लगा कि उन्हें एक सहारा मिल गया है। मैंने जब अपना फैसला घरवालों को सुनाया, तो सब रोने लगे। मुझे कहा गया कि ऐसा मत करो। तुम देख रहे हो कि हम लोग ऐसे ही तकलीफ में हैं। पिता पहले से ही मुंबई में संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे में तुम भी हमें छोड़कर चले जाओगे तो हमारा क्या होगा? लेकिन मेरी जिद थी और दिल मानने को तैयार नहीं था और मैं निकल गया।मैं 6 अप्रैल 1980 को मुंबई आया था। वो तारीख मुझे आज भी याद है। जब मैं यहां आया तो भौचक्का रह गया कि ये मैं कहां आ गया। मैं मालवाणी के चॉल नंबर 628 और ब्लॉक चार में रहने लगा। 'चॉल में रहने के दौरान के संघर्षों को मैं शब्दों में बयां नहीं कर

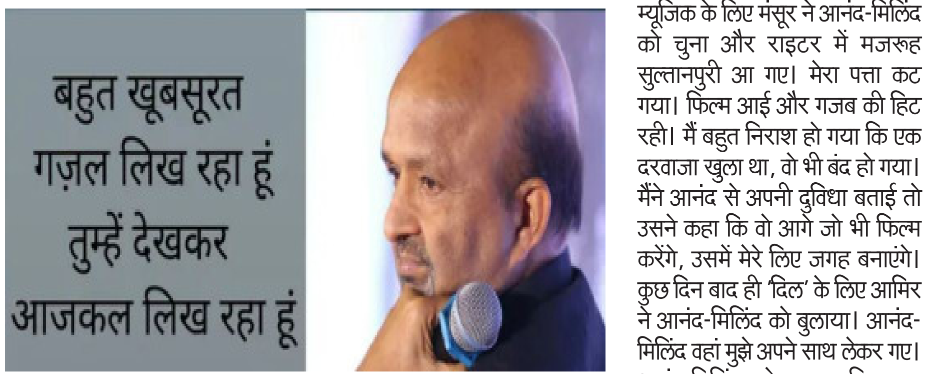

सकता। एक बार तो ऐसा हुआ कि मैं शौच के लिए गया था, तभी एक शराबी दरवाजा तोड़ अंदर घुस आया। उसने मुझे गंदी-गंदी गालियां दी। मैं एक संभ्रात परिवार से आता था, मैं ऐसी सिचुएशन सोच भी नहीं सकता था। उस वक्त मेरी आंखों से आंसू बहने लगे। उस घटना को आज भी याद करके मेरी रूह कांप जाती है।'मैं 23 साल की उम्र में मुंबई आ गया था। उस उम्र तक मैं अपने पिता से सिर्फ दो बार मिला था। वो मुंबई में थे, लेकिन मैं उन्हें बिना बताए आया और अकेले चॉल में रह रहा था। 23 साल की उम्र तक मैं बस दो बार अपने पिता से मिला था। मेरा पालन-पोषण दादाजी ने ही किया था। पिताजी मुंबई में जमने के लिए 17 साल तक संघर्ष करते रहे। जब पिताजी को पता चला कि मैं भी मुंबई में हूं तो उन्होंने मुझे मिलने बुलाया। ये तीसरी बार था, जब मैं उनसे मिलने वाला था। मैं पिताजी से मिलने किसी उम्मीद में नहीं गया था कि वो मुझे अपने साथ रख लें। मैं गुस्से में था कि आज वो जो भी पूछेंगे, मैं उसका उल्टा जवाब दूंगा। पहले तो मुझे लगा ही नहीं कि वो मेरे पिता हैं। मुझे लगा कि मैं किसी रिश्तेदार से मिलने वाला हूं। जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने कहा कि तुम बड़े हो गए हो और अपने जीवन का फैसला करने का तुम्हें अधिकार है, लेकिन पिता होने के नाते में तुमसे कुछ पूछना चाहता हूं। फिर उन्होंने मुझसे पहला सवाल किया कि क्या तुमने कभी किसी लड़की से मोहब्बत की? उनका सवाल सुनकर मैं हैरान रह गया। मैंने हां में जवाब दिया। फिर उन्होंने मुझसे कहा कि क्या सोचकर प्यार किया? मैंने उनसे कहा कि प्यार कोई सोचकर नहीं करता है। जब करना होता है तो कर लेता है। उन्होंने कहा- अब पूछो, यह सवाल मैंने तुमसे क्यों किया? मैंने कहा- बताइए। तब उन्होंने कहा कि मैं जानना चाहता हूं कि तुम बावफा आशिक हो या बेवफा आशिक हो। क्योंकि यह इंडस्ट्री महबूबा की तरह है। अगर इससे सच्ची मोहब्बत हो तभी रहना, वरना भाग जाना।उन्होंने दूसरा सवाल पूछा कि तुम यहां क्या सोचकर आए हो। इंडस्ट्री जन्नत की तरह है। यहां सब हूरें मिलेंगी, पैसा मिलेगा, शोहरत मिलेगी। मैंने कहा- हां फिर, उन्होंने कहा- जन्नत में कुछ पाने के लिए आदमी को मरना पड़ता है। क्या तुम मरने के लिए तैयार हो? मुझे लगा पापा ने बात तो बहुत बड़ी कर दी, लेकिन मैं उन्हें दो टूक जवाब देने के मूड से आया था। मैंने इस सवाल पर भी फट से हां कह दिया। फिर पापा ने मुझसे कहा कि चलो अपना बोरिया-बिस्तर उठाओ और घर चलो, लेकिन अगले छह महीने तुम कुछ भी नहीं लिखोगे। अब मैं बताऊंगा कि इस इंडस्ट्री की रवायत और भाषा क्या है।मैं तुम्हें हर म्यूजिक डायरेक्टर के साथ होने वाली मीटिंग में ले जाऊंगा, लेकिन मैं कहीं तुम्हारा परिचय नहीं कराऊंगा। तुम वहां बैठना और चीजों को समझने की कोशिश करना। गाना लिखने के लिए जो सिचुएशन मुझे दी जाएगी, उस पर मैं भी लिखूंगा और तुम भी लिखोगे। मैं हम दोनों का लिखा मुखड़ा आगे सुनाऊंगा, जिस दिन तुम्हारा लिखा पास हो जाएगा, मैं तुम्हें आजाद छोड़ दूंगा। उसके बाद तुम जा सकते हो।एक साल बाद मेरा एक गाना आया। फिल्म का नाम 'बिंदिया चमकेगी' था और उसमें रेखा जी थीं। यहां से मेरे जीवन में संघर्ष की शुरुआत हुई। मैं सुबह निकलता और रात में थका-हारा घर पहुंचता था। पिताजी मेरा संघर्ष देख रहे थे। मुझसे पूछते थे कि कहां-कहां गए, क्या लिखा। मेरा संघर्ष देखकर उन्होंने जीवन में एक बार ही मेरे लिए लक्ष्मीकांत जी बात की। तब उन्होंने पिताजी से कहा कि आज तो आपने कह दिया, दोबारा किसी से ये बात मत कहिएगा। एक बात याद रखिएगा कि बाप की दुकान बाप की होती है। आपने कहा है तो मैं बस इतना कर सकता हूं कि मैं इसे सुनूंगा। ये जब भी मेरे पास आएगा, मैं इसका लिखा पढ़ूंगा। जिस दिन ये मेरे मन मुताबिक अपना मुखड़ा लिखेगा, उस दिन मैं आपको कॉल करूंगा कि आइए, अब आपके बेटे का गाना रिकॉर्ड कर रहा हूं। मुझे लक्ष्मीकांत जी से एक गाना पास कराने में चार साल लग गए। मैं हर दूसरे दिन उनके पास जाता और अपना लिखा सुनाता। वो मुझे हर बार कहते कि अभी वो बात नहीं है। चार साल बाद एक दिन ऐसा आया कि मैंने उन्हें अपना लिखा सुनाया और वो उन्हें पसंद आ गया। फिर उन्होंने वो गाना बनाया और पिताजी को कॉल कर कहा कि आइए आपके बेटे का गाना रिकॉर्ड करने वाला हूं। वो गाना गोविंदा की फिल्म 'लव 86' का था। इस तरह लक्ष्मीकांत प्यारेलाल के यहां मेरी एंट्री हुई।एक म्यूजिक डायरेक्टर थे, जो मेरे पिताजी के एक अच्छे-खासे दोस्त थे। मैं उनके पास जब ऐसे जाता था तो बहुत इज्जत से मिलते थे। चाय पिलाते और हालचाल लेते। उस दिन उन्होंने सामने से बोला कि मैंने सुना है कि तुम कुछ लिखते हो। कभी सुनाया नहीं तो कुछ सुनाओ। मैंने उन्हें एक घंटे तक अपनी कविता सुनाई और वो गौर से सुनते रहे। अचानक वो इतना खफा हुए कि मेरी डायरी तीसरी मंजिल से नीचे फेंक दी। फिर बहुत गुस्से में आकर बोले कि क्यों अपने पिताजी का नाम खराब कर रहे हो? इतने बड़े पिता का नाम तुम्हारी वजह से खराब हो जाएगा। मैं एक काम करता हूं, मैं तुम्हें टिकट के पैसे देता हूं। तुम अपने पिता को बताना भी मत और इस शहर से चले जाओ। तुम बैंक में नौकरी कर रहे थे, यहां आने की जरूरत क्या थी?मैं उन्हें कुछ बोल भी नहीं सकता था। मैं कांपते पैरों से चुपचाप उठा, अपनी डायरी उठाई और उसे माथे से लगाया। मैंने 222 नंबर की बस पकड़ी और सीधे उषा खन्ना जी के पास चला गया। ऐसे तो वो अक्सर लोगों से घिरी रहती थीं। सौभाग्य से उस दिन वो अकेली थीं। मैंने उनसे कहा कि आंटी मैंने कुछ गाने लिखे हैं, आपको सुनाऊं? उन्होंने हामी भर दी। मैंने सिर्फ पांच मुखड़े सुनाए और उषा जी ने कहा कि अब बस कर। ये पांचों गाने मुझे दे दे। मैं अगले हफ्ते इन्हें रिकॉर्ड करूंगी। जगह कौन सी होगी, वो मैं तुम्हें कॉल करके बताऊंगी। फिल्म 'बेखबर' के लिए मेरा गाना रिकॉर्ड हुआ। इस तरह हिंदी इंडस्ट्री में मेरी शुरुआत हुई। उससे पहले तक मैं रीजनल फिल्मों के लिए लिख रहा था। मैं जिस दिन उषा जी से मिला, उस दिन किस्मत मेरे साथ थी। जब मैं उषा जी के पास से निकला, तभी मुझे मुरली नाम का एक सिंगर मिला। उसने मुझसे कहा कि आप भोजपुरी लिखते हो, चलो आपको चित्रगुप्त जी से मिलवाता हूं। चित्रगुप्त जी भोजपुरी इंडस्ट्री का बड़ा नाम थे। मैं भी उनके पास जाने के लिए तैयार हो गया। मेरे पिताजी ने उनकी फिल्म 'बलम परदेसिया' लिखी थी। उनका पूरा परिवार मुझसे बड़े प्यार से मिला। चित्रगुप्त जी ने मुझसे कहा कि देखो बेटा, मैं तो भोजपुरी फिल्में बनाता हूं तो यहां तो मैं तुम्हें मौका दूंगा, लेकिन मेरे दो बेटे हैं आनंद-मिलिंद। वो भी तुम्हारी तरह युवा हैं और संघर्ष कर रहे हैं। तुम सब साथ बैठो और कुछ अच्छा बनाओ। फिर उन्होंने आनंद-मिलिंद को बुलाया और मुझसे मिलवाया। हम सबने साथ में काम शुरू कर दिया। उसी समय फिल्म प्रोड्यूसर नासिर हुसैन के बेटे मंसूर खान डायरेक्शन में कदम रखना चाहते थे। नासिर ने बेटे से कहा था कि कोई छोटी फिल्म बनाकर खुद को प्रूव करो, तब मैं तुम्हें बड़ी पिक्चर दूंगा। मंसूर ने वीडियो फिल्म 'अम्बर्टो' बनाई, जिसमें आमिर खान थे। उस वीडियो फिल्म में मैं आमिर खान, आनंद-मिलिंद सबने साथ में काम किया। मैंने उस फिल्म के लिए गाना भी लिखा। नासिर साहब और मंसूर सबको मेरा लिखा पसंद आया था। 'कयामत से कयामत तक' हाथ से गई, फिर लगा सारे दरवाजे बंद हो गए मंसूर ने कहा कि चलो अब कहानी पर काम करते हैं। ऐसे में 'कयामत से कयामत तक' की शुरुआत हुई। जब म्यूजिक डायरेक्टर और राइटर की बात आई, तब नासिर जी ने कहा कि हमारे यहां तो आरडी बर्मन और मजरूह सुल्तानपुरी ही काम करते हैं। मंसूर ने कहा कि उसे आनंद-मिलिंद के साथ ही काम करना है। बेटे की जिद पर नासिर जी का जवाब आया कि फिल्म में हीरो-हीरोइन, म्यूजिक डायरेक्टर और राइटर सब नए हैं। ऐसे में प्रपोजल कैसे बनेगा। फिर तय हुआ कि म्यूजिक डायरेक्टर और राइटर दोनों की पसंद का होगा। म्यूजिक के लिए मंसूर ने आनंद-मिलिंद को चुना और राइटर में मजरूह सुल्तानपुरी आ गए। मेरा पत्ता कट गया। फिल्म आई और गजब की हिट रही। मैं बहुत निराश हो गया कि एक दरवाजा खुला था, वो भी बंद हो गया। मैंने आनंद से अपनी दुविधा बताई तो उसने कहा कि वो आगे जो भी फिल्म करेंगे, उसमें मेरे लिए जगह बनाएंगे। कुछ दिन बाद ही 'दिल' के लिए आमिर ने आनंद-मिलिंद को बुलाया। आनंद-मिलिंद वहां मुझे अपने साथ लेकर गए। आनंद-मिलिंद को जब म्यूजिक का ऑफर मिला तो उनसे राइटर का नाम पूछा गया तो उन दोनों ने मेरा नाम लिया। इन्होंने कहा कि एक बार मेरा गाना सुना जाए। फिर मैंने उन्हें 'खंबे जैसी खड़ी है' सुनाया। ये गाना सभी को बहुत पसंद आया। 'दिल' फिल्म में मेरी एंट्री हो गई और वो फिल्म जब रिलीज हुई तो मेरी किस्मत ही बदल गई।तीन साल के अंदर फिल्मफेयर अवॉर्ड जीत लिया 'दिल' के बाद मैंने 'आशिकी' के गाने लिखे। इस फिल्म के गानों ने कई नए रिकॉर्ड बनाए। इस फिल्म के गाने 'नजर के सामने' के लिए साल 1991 में मुझे अपना पहला फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला। फिर साल 1993 में 'दीवाना' फिल्म के गाने 'तेरी उम्मीद, तेरा इंतजार' और साल 1994 में 'हम है राही प्यार के' के गाने 'घूंघट की आड़' के लिए भी मैंने फिल्मफेयर अवॉर्ड जीता। इंडस्ट्री में मेरे पिताजी ने लंबे समय तक काम किया और वो बहुत डिजर्विंग थे, लेकिन उसके बाद भी उन्हें कभी अवॉर्ड नहीं मिला। जब मुझे मेरे पहला फिल्मफेयर मिला था, तब मेरे पिताजी वहां मौजूद थे। वो पैरालिसिस का चौथा अटैक झेल रहे थे और चल भी नहीं पा रहे थे, लेकिन मेरे सम्मान के लिए वो मंच तक आए। उन्होंने स्टेज से कहा था- 'जो मैं नहीं पा सका, वो मेरे बेटे ने हासिल किया। मैं चाहता हूं कि भविष्य में इसे और भी उपलब्धियां मिलें।' 'आशिकी' के लिए महेश भट्ट ने डायरेक्शन दांव पर लगाया 'आशिकी' पहले चाहत के नाम से सिर्फ एक गानों का एल्बम बन रहा था। गुलशन कुमार उसे फिल्म बनाना चाहते थे, लेकिन हीरो-हीरोइन की वजह से उन्होंने वो आइडिया ड्रॉप कर दिया था। डिस्ट्रीब्यूटर्स ने कहा था कि हीरो-हीरोइन अच्छे नहीं हैं। मेरी फिल्म 'दिल' हिट हो चुकी थी, लेकिन नदीम-श्रवण बहुत ज्यादा संघर्ष कर रहे थे। मुझे पता था कि टी-सीरीज बैनर अपनी फिल्मों का बेस्ट प्रमोशन करता है। मैंने 'आशिकी' के गाने में अपनी जवानी की पूरी सोच लगा दी थी। दिमाग में कहीं न कहीं था कि अगर ये फिल्म चल गई तो पूरी जिंदगी बदल जाएगी। जब गुलशन जी ने कहा कि वो एल्बम बनाने वाले हैं तो हम सब निराश हो गए। मैं महेश भट्ट के पास गया। उन्होंने जब सुना तो कहा ऐसे कैसे एल्बम बना देगा। गुलशन महेश भट्ट से बहुत ज्यादा डरते थे। महेश भट्ट ने घर में घुसते ही कहा कि सुना है कि गुलशन कुमार पागल हो गया है। गुलशन जी को भी समझ आ गया कि कुछ तो गड़बड़ है। फिर महेश जी ने उनसे कहा कि मैंने सुना है कि तुम 'आशिकी' को फिल्म नहीं एल्बम बना रहे हो? उन्होंने महेश जी को बताया कि फिल्म को लेकर बहुत खराब रिस्पॉन्स आया है, इस वजह से वो ऐसा सोच रहे हैं। फिर महेश जी ने कहा, गुलशन तू पागल हो गया है। मैं तुम्हें बता रहा हूं कि ये फिल्म तुम्हारे बैनर और इस सदी की सबसे बड़ी म्यूजिकल हिट होगी। महेश भट्ट ने पेपर मांगकर उस पर लिखा कि अगर ये फिल्म और इसका म्यूजिक नहीं चला तो वो डायरेक्शन छोड़ देंगे। फिर उसी पेपर पर नीचे गुलशन कुमार ने लिखा कि मैं इस फिल्म को ऐसे प्रमोट करूंगा कि आप हिंदुस्तान के वॉशरूम में भी जाएंगे तो वहां भी आशिकी दिखेगी। फिर गुलशन ने कहा कि लेकिन एक समस्या और है। फिल्म के हीरो-हीरोइन दोनों बहुत खराब लग रहे हैं। महेश जी ने आइडिया दिया कि तुम चिंता मत करो, हम उनकी शक्ल पहले दिखाएंगे ही नहीं। उनके चेहरे पर कोट डाल देंगे। तुम म्यूजिक को प्रमोट करो, जब म्यूजिक हिट हो जाएगा, फिर चेहरे को रिवील करेंगे।मेरा बस इतना सपना था कि रेडियो सिलोन पर मेरा एक गाना बज जाए तो मैं लौटकर बनारस चला जाऊं, लेकिन आज चार हजार से अधिक गाने मेरे नाम हैं। इस वजह से ईश्वर पर मेरी आस्था अटूट है। मैंने अपनी पहली इनिंग में आनंद-मिलिंद और नदीम-श्रवण के साथ अच्छा काम किया।ये वो समय था, जब मैं एक साथ 110 फिल्में कर रहा था। इनमें से आनंद-मिलिंद के साथ और नदीम-श्रवण के साथ 50 फिल्में थीं। मैं कामयाबी के पीक पर था, जब गुलशन की हत्या हुई। उसके बाद लगा जैसे मेरे लिए सब कुछ खत्म हो गया। मैं पहली बार अपनी लाइफ में टूटा था।मैं संघर्ष में कभी नहीं टूटा था, लेकिन गुलशन जी के जाने से मैं टूट गया।

अभिनेत्री शिवानी तोमर से ख़ास बातचीत

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। बॉलीवुड की बोल्ड और खूबसूरत अभिनेत्री शिवानी तोमर,

रचना त्रिवेदी चैनल हेड आधुनिक समाचार

जो अपनी फिल्मों और टीवी शोज़ के लिए पहचानी जाती हैं, ने हाल ही में रचना त्रिवेदी, 'आधुनिक समाचार' चैनल की प्रमुख को एक विशेष इंटरव्यू दिया। इस दौरान कई दिलचस्प सवालों के जवाब दिए, जिनसे उनकी पेशेवर और व्यक्तिगत ज़िन्दगी के बारे में नई जानकारियाँ मिलीं। **रचना त्रिवेदी:- सबसे पहले, हमें यह बताइए कि आपने अभिनय की दुनिया में कदम कैसे रखा?** शिवानी तोमर:- अभिनय में रुचि हमेशा से रही थी, लेकिन शुरुआत में मुझे इस क्षेत्र के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। धीरे-धीरे मैंने खुद को इस क्षेत्र में स्थापित किया। अपनी मेहनत और धैर्य से मैं आगे बढ़ी और आज यहां हूं। **रचना त्रिवेदी:- क्या किसी खास फिल्म या शो ने आपकी पहचान बनाई?** शिवानी तोमर:- हर प्रोजेक्ट का अपना महत्व होता है, लेकिन मुझे लगता है कि मेरी कुछ प्रमुख भूमिकाओं ने मुझे ज्यादा पहचान दिलाई। जैसे कि टीवी शो 'ँ' और फिल्म 'ँण' ने मुझे एक अलग पहचान दिलाई। **रचना त्रिवेदी:- आपके लिए अभिनय की सबसे बड़ी चुनौती क्या रही है?** शिवानी तोमर:- सबसे बड़ी चुनौती यह रही कि मुझे हर भूमिका को नए और अलग अंदाज में पेश करना है। दर्शकों को हमेशा कुछ नया दिखाने की कोशिश करती हूं, और यह एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। **रचना त्रिवेदी:- आप अपने आने वाले प्रोजेक्ट्स के बारे में कुछ बताना चाहेंगी?** शिवानी तोमर:- हां, कुछ खास प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है, जिनमें मैं एक नई भूमिका में नजर आऊंगी। इसमें कुछ चुनौतीपूर्ण किरदार होंगे, जिन्हें लेकर मैं बहुत उत्साहित हूं। **रचना त्रिवेदी:- क्या आप हमें यह बता सकती हैं कि आप अपनी भूमिकाओं के चुनाव में किस तरह से सोचती हैं?** शिवानी तोमर:- मैं अपनी भूमिकाओं का चयन बहुत सोच-समझकर करती हूं। मुझे हमेशा ऐसा किरदार निभाना पसंद है, जिसमें मैं कुछ नया सीख सकूं और दर्शकों के सामने एक नया चेहरा पेश कर सकूं। **रचना त्रिवेदी: अंत में, आप चाहेंगी कि आपके फैंस को आपका कौन सा संदेश पहुंचे?** शिवानी तोमर: मैं यही कहूंगी कि संघर्ष और मेहनत से सफलता मिलती है। धैर्य रखकर और अपने काम से प्यार करके ही आप अपने लक्ष्यों को पा सकते हैं। मुझे विश्वास है कि जो लोग खुद पर विश्वास रखते हैं, उन्हें सफलता जरूर मिलती है। **रचना त्रिवेदी:-** हम आपकी आगामी परियोजनाओं के लिए शुभकामनाएं देते हैं और उम्मीद करते हैं कि आप जल्द ही बड़ी सफलता हासिल करेंगी।

शिवानी तोमर अभिनेत्री

प्लास्टिक सर्जरी की दुकान कहे जाने पर श्रुति का जवाब:बोलीं- मुझे पता है दूसरों ने कितनी करवाई

मुंबई। श्रुति हासन फिल्म इंडस्ट्री की इकलौती एक्ट्रेस हैं, जिन्होंने ये कबूल किया है कि उन्होंने कई बार प्लास्टिक सर्जरी करवाई हैं। हालांकि

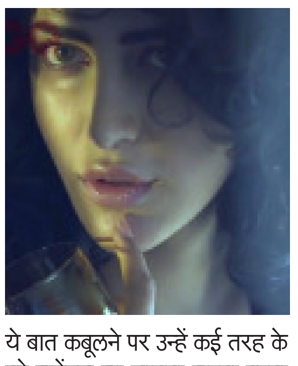

ये बात कबूलने पर उन्हें कई तरह के बुरे कमेंट्स का सामना करना पड़ता है। एक्ट्रेस ने हाल ही में बताया है कि लोग उन्हें प्लास्टिक सर्जरी की दुकान बुलाते हैं। ये वो कीमत है जो उन्हें सच बोलने की चुकानी पड़ रही है। श्रुति हासन से द हॉलीवुड रिपोर्टर के इंटरव्यू में पूछा गया था कि वो हमेशा अपनी राय ईमानदारी से रखती हैं, तो क्या इसकी कीमत चुकानी पड़ती है। इस पर एक्ट्रेस ने कहा, 'हमेशा, लेकिन ये एक अच्छी कीमत है। जब मैंने ये कहा, तो लोगों ने कहा 'ओह ये तो प्लास्टिक सर्जरी की दुकान है', ये वो। लेकिन मैं जानती हूं मैंने क्या किया है, कितना किया है और मैं ये भी जानती हूं कि दूसरों ने कितना ज्यादा करवाया है। लेकिन ये वो कीमत है, जो ईमानदारी के लिए चुकानी पड़ती है। इट्स ओके। मैंने इसे कभी प्रमोट नहीं किया है। ये मेरी मर्जी है। ये मेरे रूल हैं, ये मेरी जिंदगी है।

तलाक के दिन फूट-फूटकर रोईं धनश्री वर्मा,युजवेंद्र चहल की शुगर डैडी वाली टी-शर्ट पर चुप्पी तोड़कर कहा- वॉट्सऐप कर देता, टी-शर्ट की क्या जरुरत थी

मुंबई। धनश्री वर्मा तब सबसे ज्यादा सुर्खियों में रहीं, जब क्रिकेटर युजवेंद्र चहल ने तलाक की सुनवाई के दौरान वो टी-शर्ट पहनी थी, जिस पर लिखा था- बी योर ऑन शुगर डैडी। अब लंबे समय बाद धनश्री वर्मा ने पहली बार इस विवाद पर बात की है। उनका कहना है कि अगर युजवेंद्र उन्हें आखिरी मैसेज देना चाहते थे, तो वो टी-शर्ट में लिखने की बजाय वॉट्सऐप भी कर सकते थे। धनश्री वर्मा ने ह्यूमन्स ऑफ बॉम्बे को दिए इंटरव्यू में युजवेंद्र से तलाक पर बात करते हुए कहा, 'हमें ये कभी नहीं भूलना चाहिए कि ये सिर्फ हमारे या हमारे पार्टनर की नहीं बल्कि दो परिवारों भी इसमें शामिल होते हैं। जो भी हमसे प्यार करते हैं, वो सब दुखी हैं। ये कोई सेलिब्रेशन नहीं होता। हम अपनी लड़ाई लड़ते हैं, फिर मीडिया सर्कस होता है। मुझे लगता है कि हमें इस बारे में बहुत मैच्योर होना चाहिए। मैंने इम्मैच्योर स्टेटमेंट देने की बजाए मैच्योर रहना चुना, जो

पब्लिक को अपील करते हैं। मैं अपनी और उसकी (युजवेंद्र चहल) फैमिली वैल्यूज खराब नहीं करना चाहती थी।'आगे उन्होंने कहा कि जब कोई शादी टूटती है, तो इसका मतलब ये नहीं है कि किसी का अपमान किया जाए। धनश्री ने कहा, 'जिस दिन ये हुआ, वो दिन मेरे और परिवार के लिए बेहद इमोशनल था। मुझे याद है कि मैं वहां खड़ी थी और फैसला आने वाला था, हम सब मेंटली तैयार थे, लेकिन जब फैसला आया तो मैं फूट-फूटकर रोने लगी। मैं बता भी नहीं सकती थी कि मैं क्या महसूस कर रही हूं। मैं बस रोई जा रही थी।' टी-शर्ट कंट्रोवर्सी पर धनश्री ने कहा- 'वो (युजवेंद्र) हमसे पहले निकला, जिसके बाद सारी चीजें हुईं, वो टी-शर्ट, मीडिया और सब कुछ। मुझे इस बारे में पता नहीं था, क्योंकि मैं तब तक अंदर ही थी। जिस समय मैं बाहर आई और कार में बैठी। मैं पीछे के रास्ते से बाहर आई, क्योंकि मुझे वो पसंद नहीं आ रहा था। वो बहुत दुखद था। हम अपने चेहरे पर कैमरे नहीं चाहते थे।' 'मैं और मेरे वकील पीछे से आए, क्योंकि हमको तो कुछ नहीं बताना था, मैंने तो नॉर्मल टी-शर्ट पहना है, नॉर्मल जींस पहना है। मेरे को थोड़ी कैमरे के सामने आकर कुछ बताना है। मेरी बेस्टफ्रेंड आई, हम तब भी खुद को संभालने की कोशिश कर रहे थे। मैं नॉर्मल सांस लेने की कोशिश कर रही थी। वो इतना हिला देने वाला मूमेंट था। ये जिंदगी का कोई छोटा पल नहीं था। और हम जानते हैं कि लोग हम पर ही इल्जाम लगाने वाले हैं। ये टी-शर्ट स्टंट होने से पहले ही हम सबको पता था कि लोग मुझे ही ब्लेम करने वाले हैं।' धनश्री ने कहा कि वो अपनी जिंदगी आगे बढ़ाने के बारे में सोच रही थीं,

सांस लेने की कोशिश कर रही थीं, तभी उन्होंने फोन उठाया और उन्हें टी-शर्ट के बारे में पता चला। धनश्री ने कहा- 'मैंने फोन देखा और कहा क्या, क्या सच में इसने (युजवेंद्र) ऐसा किया? ये ऐसा हो गया? दिमाग में एक सेकेंड में लाखों थॉट्स आए कि अब ये होगा, अब वो होगा, उस मूमेंट मैंने सोच लिया, बॉस अब सब खत्म।

मैं क्यों रोऊं।' धनश्री ने कहा कि उस दिन आप कैसे बिहेव कर रहे हैं, ये आपकी व्यक्तित्व को दर्शाता है। जब उनसे कहा गया कि युजवेंद्र ने एक पॉडकास्ट में कहा है कि वो टी-शर्ट के जरिए उन्हें आखिरी मैसेज देना चाहते थे, तो इसके जवाब में उन्होंने कहा, 'अरे भाई वॉट्सऐप ही कर देता। टी-शर्ट क्यों पहनना है। फिर तो एक टी-शर्ट भी काफी नहीं हैं।'

भारती को पैदा नहीं करना चाहती थीं मां,कॉमेडियन बोलीं- मैं अनचाहा बच्चा थी,पड़ोसियों के लैंडलाइन पर ऑफर हुआ था लाफ्टर चैलेंज

मुंबई। सबसे कामयाब फीमेल कॉमेडियन कही जाने वालीं भारती भले ही लोगों को खूब हंसाती हैं, हालांकि उनकी जिंदगी बेहद दर्दनाक रही। हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में भारती ने बताया कि उनकी मां उन्हें पैदा नहीं रात की मेरे पापा की ड्यूटी थी तो अकेली ने पैदा किया। लेकिन वो कॉर्ड काटने के लिए बस दाई को बुलाया जिसने 60 रुपए लिए। मैं 60 रुपए में हुई हूं। मैं 60 रुपए का बच्चा हूं। और आज देखो मैंने अपनी मम्मी को 1 चाहते हैं। मैं कहा ये आप क्या कह रहे हो? कहती हैं हां। तो मैंने कहा चलो आएगा तो मैं सुनूंगी फोन।' 'फोन पर उसने बोला, हाय मैं एंडेमल से बोल रही हूं। मैंने कहा वो क्या होता है? प्रोडक्शन हाउस पता ही नहीं था

करना चाहती थीं। वो अबॉर्शन के लिए कई कोशिशें कर चुकी थीं। इसके अलावा कॉमेडियन ने उस इंसिडेंट पर भी बात की, जब कॉलेज के दिनों में बस में एक आदमी ने उन्हें गलत तरह छुआ और जवाब में उन्होंने सबके सामने उसे थप्पड़ जड़ दिया था।राज शमानी के पॉडकास्ट में भारती ने बचपन का बुरा अनुभव शेयर कर कहा, 'मेरी मम्मी हाउसवाइफ थीं, दो बच्चे हो चुके थे। पहले तो पता ही नहीं चलता था कि अरे मैं प्रेग्नेंट हो गई। दो-तीन महीनों बाद पता चला। फिर मेरी मम्मी ने इतनी सारी जड़ी बूटियां बाबा से मिलकर खाईं। पैर के बल बैठ कर पोछे मारे, गरम चीज पपीता खा लिया, खजूर खा लिए कि रहे ना। आना ही था मुझे। मेरी मम्मी ने खुद पैदा किया है मुझे। मेरी मम्मी घर में अकेली थीं। करोड़ 60 लाख का घर लेकर दिया है।' आगे भारती ने कहा, 'मैं अनचाहा बच्ची थी। नहीं चाहते थे क्योंकि पहले लड़का लड़की थे। उनको होता था कि बच्चे दो ही अच्छे एक लड़का है और लड़की है। तीसरा नहीं करना कि कौन पालेगा, पर मैं हो गई। फिर उसके बाद उन्होंने बहुत प्यार दिया।' भारती ने ये भी बताया है कि उनके घर में फोन तक नहीं हुआ करता था। ऐसे में लाफ्टर चैलेंज वालों ने उनके पड़ोसियों के घर कॉल कर उन्हें शो ऑफर किया था। भारती ने कहा, 'जब लाफ्टर चैलेंज से मुझे फोन आया ना तब हमारे घर में फोन भी नहीं था। पड़ोसियों के घर आया लैंड लाइन पर। तो एक प्रोडक्शन हाउस है एंड मॉल। मेरी मम्मी कहती बॉम्बे से कोई अंडे बेचने वाले फोन करे जा रहे हैं। तुमको बुलाना क्या होता है। उन्होंने कहा, शो बनाते हैं लाफ्टर चैलेंज आपने देखा होगा कपिल शर्मा वाला सुदेश लहरी वाला। मैं कहा हां जी। उन्होंने कहा हम आपको उसमें लेना चाहते हैं। तो मेरे को लगा कि ये कहेंगे कि आओ तो उसके लिए कपड़े और जाने का किराया कैसे आएगा। मैंने बोला मैं आ नहीं सकती। मैं तो कॉलेज में पढ़ती हूं। उन्होंने कहा, नहीं नहीं आपके साथ आपकी मम्मी को बुलाएंगे। आप कैसे आओगे? हमें बता दीजिए। कौन सी डेट।' भारती ने बताया कि कुछ समय बाद उन्हें फ्लाइट की टिकट भेजी गई। उन्होंने बस दूर से ही फ्लाइट देखी थी। जब वो गईं तो उन्होंने एयरपोर्ट में ये सोचकर ट्रॉली नहीं ली कि शायद उसके भी पैसे देने होते होंगे। इस तरह उनकी जर्नी शुरू हुई और आज उन्हें हर कोई जानता है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज से प्रकाशित।
संपादक/प्रकाशक डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।